वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

◆ फरवरी , 2024 ◆ मूल्य: 35/-

अभ्युदय वात्सल्यम्

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

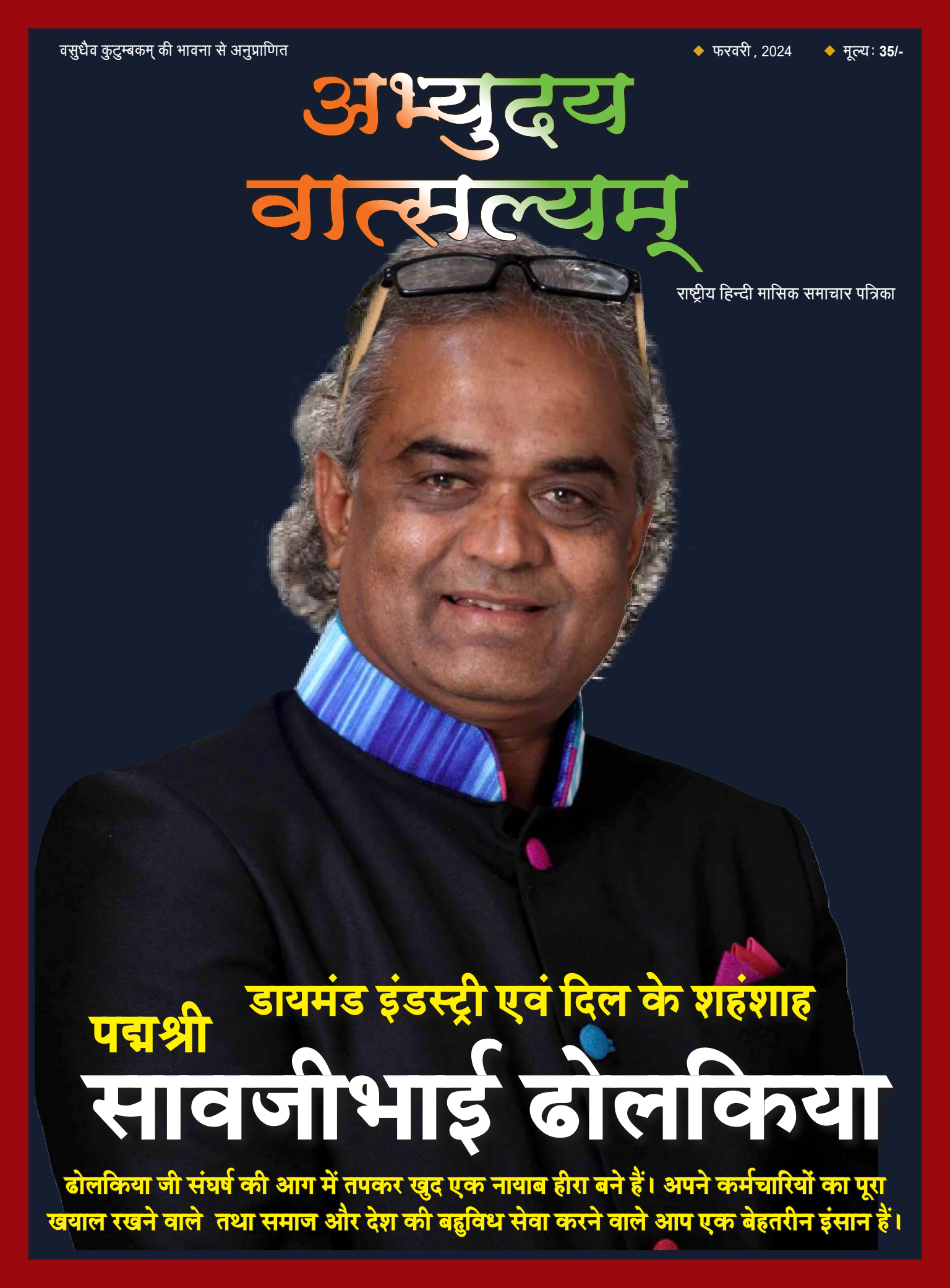

डायमंड इंडस्ट्री एवं दिल के शहंशाह

पद्मश्री सावजीभाई ढोलकिया

ढोलकिया जी संघर्ष की आग में तपकर खुद एक नायाब हीरा बने हैं। अपने कर्मचारियों का पूरा खयाल रखने वाले तथा समाज और देश की बहुविध सेवा करने वाले आप एक बेहतरीन इंसान हैं।

SAI
WORLD CITY
PANVEL

www.saiworldcity.co.in

A WORLD WITH EVERYTHING WITHIN

JUST 5 MINS. FROM NAVI MUMBAI INTERNATIONAL AIRPORT

MAHARERA REGISTRATION NO.: PHASE 1 - P52000006318 I PHASE 2 - P52000022708 (https://maharera.mahaonline.gov.in)

Artist's Impression

PROJECT HALLMARKS

- 32 Acre Mega Township
- G+33 Storeyed Tower
- 2, 2.5, 3 & 4 BHK Luxury Homes
- Themed Landscaping
- International Lifestyle

MAHARERA REGISTRATION NO. PHASE I - P51700002446
PHASE III - P52000029168 | https://maharera.mahaonline.gov.in

Artist's Impression

AN EMPIRE FOR MODERN DAY KINGS AND QUEENS

PROJECT HALLMARKS

- 18 Acre Kingdom
- G+40 Storeyed Tower
- 2, 3 & 4 BHK Luxury Homes
- Commercial Mall with G+2 storeys
- Designer Podium Garden
- Athena Clubhouse

2783 1000 | Email: enquiry@paradisegroup.co.in I www.paradisegroup.co.in

Site & Sales Office: Sai World Empire, Opp. Kharghar Valley Shilp (CIDCO Colony), Kharghar
Site & Sales Office: Sai World City, Palaspe Phata Junction, Panvel - 410 206.

Follow us on:

PARADISE® GROUP
Your World. Our Vision.
ISO - 9001: 2015 Certified Organization

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

अभ्युदय वात्सल्यम्

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

■ वर्ष-15 ■ अंक- 07 फरवरी, 2024 ■ मूल्य- 35/-

संस्थापक एवं प्रधान सम्पादक: कृपाशंकर तिवारी
सीईओ एवं प्रबंध सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी
सहायक प्रबंध सम्पादक : शिवा तिवारी
सहायक प्रबंध सम्पादक : हदीस सिद्दीकी
दिल्ली - एनसीआर ब्यूरो : आशुतोष मिश्रा
लखनऊ ब्यूरो : हरिभजन शर्मा
विज्ञापन प्रबंधक : संजय सिंह
ग्राफिक डिजाइनर : अनमोल शुक्ल, अनिल मशालकर
फोटोग्राफर : हार्दिक रामगुड़े, राहुल पारकर

पत्राचार कार्यालय: 103, डी-विंग, रिद्धि ाईशद्धि कॉम्प्लेक्स, उन्नत नगर रोड नम्बर 2, ऑफ़ एसवी रोड, गोरेगाँव(पश्चिम), मुंबई - 400104.

एनसीआर ब्यूरो : 748, वास्टो महागुन मॉडर्न, सेक्टर - 78, नोएडा - 201 305. सम्पर्क : 9167615266

लखनऊ ब्यूरो : 101, श्रद्धा विहार कॉलोनी, चिन्हट, लखनऊ - 226 028. सम्पर्क: 9452222370 / 8318252532

कृपा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृपाशंकर तिवारी द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नम्बर 13, रवि इंडस्ट्रियल प्रेमायसेस, महाकाली केव्स रोड, अन्धेरी (पूर्व), मुंबई - 400093 से मुद्रित एवं आर - 2/608, आरएनए प्लाजा, निकट आरएनए कॉर्पोरेट सेंटर, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प), मुंबई - 400104 से प्रकाशित।

सम्पादक : कृपा शंकर तिवारी
पंजीकृत कार्यालय: आर - 2/608, आरएनए प्लाजा, निकट आरएनए कॉर्पोरेट सेंटर, राम मंदिर रोड, गोरेगांव (प.), मुंबई - 400104

दूरभाष: 022 -46093205 / 9967718221 / 7800611428
ई-मेल: kst@avmagazine.co.in
वेबसाइट : www.avmagazine.co.in

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र मुंबई होगा।

आन्तरिक

सम्पादकीय
भारत की भूमिका विश्व गुरु के दायित्व बोध से अनुप्राणित होनी चाहिए
पृष्ठ 04

पुलिस प्रशासन
सतपाल अंतिल पीड़ित केंद्रित पुलिसिंग का चेहरा
पृष्ठ 44

युवा व्यक्तित्व
समाज के भावी कर्णधार, समाज सेवी युवा उद्योगपति डॉ. अजय एल. दुबे
पृष्ठ 48

राष्ट्रीय परिदृष्य
स्वामी विवेकानंद की आत्मकथा मेरा बचपन
पृष्ठ 62

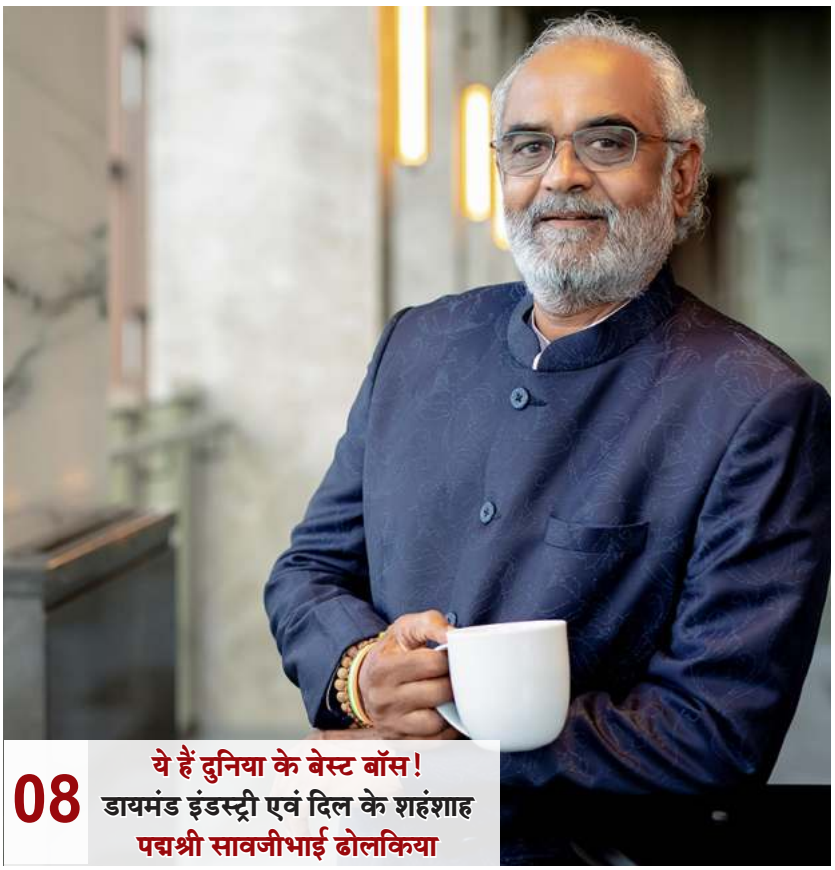

08 ये हैं दुनिया के बेस्ट बॉस! डायमंड इंडस्ट्री एवं दिल के शहंशाह पद्मश्री सावजीभाई ढोलकिया

विशेष आलेख

18 आनंद राठी देश के वेल्थ क्रिएटर

20 इंफ्रा सेक्टर के महारथी वीरेन्द्र महैस्कर

28 अनिरुद्ध काला AI बाजार के सुप्रीम लीडर

34 डॉ.(कैप्टन) सिकंदर रिजवी प्रखर राष्ट्रवादी व्यक्तित्व

भारत की भूमिका विश्व गुरु के दायित्व बोध से अनुप्राणित होनी चाहिए

भारत विश्व का एक ऐसा ईमानदार व मानवतावादी देश है जिसने अपने किसी भी पड़ोसी राष्ट्र पर कभी भी आक्रमण नहीं किया है, किसी की एक इंच जमीन पर कब्जा नहीं किया है। भारत की संस्कृति एवं संस्कार में न्याय, निष्पक्षता एवं आचरण के प्रति निर्मलता कूट-कूट कर भरी हुई है।

कृपाशंकर तिवारी
संपादक, अभ्युदय वात्सल्यम्

भारत को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष पूर्ण हो गए और हम भारतीय आज हर्षोल्लास एवं गर्व के साथ 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। सम्पूर्ण देश में तिरंगा यात्राएं निकलीं और देश की आन-बान-शान के प्रतीक भारतीय ध्वज को अभूतपूर्व सम्मान प्राप्त हुआ। निश्चित ही स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने आज तक राष्ट्रीय जन-जीवन के विविध क्षेत्रों में सम्मानजनक एवं उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं, जिन पर हम सन्तोष व्यक्त कर सकते हैं और गर्व कर सकते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, इन्फ्रास्ट्रक्चर, निर्माण, टेक्नॉलजी, विज्ञान, कृषि, सुरक्षा आदि क्षेत्रों में काफी प्रगति हुई है किन्तु स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अभी भारत को प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए बहुत कुछ करना शेष है। आत्म निर्भरता किसी भी व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की एक सशक्त, सक्षम व सर्व जन सुलभ आदर्श स्थिति है। आत्मनिर्भरता में ही हमारी विशिष्टता एवं आत्मसम्मान का गौरवपूर्ण भाव एवं स्थिति सन्निहित है। अत:, भारत को अपनी सम्पूर्ण मानवीय शक्ति, सामर्थ्य और संसाधनों का समुचित सदुपयोग करते हुए योजनाबद्ध रूप से आत्म निर्भरता की स्थिति प्राप्त करनी ही होगी। सुखद है कि आज देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ध्यातव्य है कि 135 करोड़ भारतीयों की सामूहिक चेतना, कर्तव्यबोध, कर्मठता तथा राष्ट्र के प्रति एक सुयोग्य नागरिक के रूप में हमारे समर्पण भाव से ही आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो सकता है और भारत का दीर्घकालीन अपेक्षित स्वप्न साकार हो सकता है। भारत विश्व का एक महत्वपूर्ण और जिम्मेदार राष्ट्र है, जिसने पौराणिक काल से ही सम्पूर्ण विश्व को अध्यात्म, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला एवं मानवता का पाठ पढ़ाया है, शिक्षा प्रदान की है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की महान भावना से अनुप्राणित भारत का राष्ट्रीय चरित्र सदैव विश्व परिवार के लिए आदर्श, प्रेरक एवं प्रकाशक रहा है। प्रेम, अहिंसा, शांति, सद्भाव, करुणा, दया, क्षमा, शील, परोपकार, ईमानदारी, कर्तव्य परायणता, पारस्परिक सहयोग आदि सद्गुण भारत के राष्ट्रीय चरित्र के आभूषण हैं। भारत की कथनी और करनी में सदैव एकरूपता की स्थिति बनी रही है। भारत विश्व का एक ऐसा ईमानदार व मानवतावादी देश है जिसने अपने किसी भी पड़ोसी राष्ट्र पर कभी भी आक्रमण नहीं किया है, किसी की एक इंच जमीन पर कब्जा नहीं किया है। भारत की संस्कृति एवं संस्कार में न्याय, निष्पक्षता एवं आचरण के प्रति निर्मलता कूट-कूट कर भरी हुई है। हमारी सनातन संस्कृति विश्व की महानतम् संस्कृति है जो आत्मज्ञान, प्रेम, करुणा, दया तथा सेवा भावना पर आधारित है।

भारतीय दर्शन, चिन्तन, अवधारणा, विचार एवं आचरण के आलोक में सम्पूर्ण विश्व एक परिवार की तरह है। जिस प्रकार परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक प्रेम, अपनत्व, त्याग एवं सहयोग की भावना होती है, उसी प्रकार विश्व रूपी परिवार में भी भारत अपनी भावना एवं आचरण रखता है। भारत वसुधैव कुटुम्बकम्, सेवा परमोधर्मः, सत्यमेव जयते तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को आत्मसात कर वैश्विक आचरण करने वाला एक महान राष्ट्र है। भारत में सदैव चरित्र की ही पूजा, उपासना एवं वंदना की गई है। भारत मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और योग योगेश्वर भगवान कृष्ण जैसे पूर्णावतारों की अवतरण भूमि है, महान ऋषियों-महर्षियों की तपः स्थली है तथा देश-दुनिया का गौरव बढ़ाने वाले लोकसेवी महापुरुषों की कर्मभूमि है, जन्मभूमि है। राम, कृष्ण के महान आचरण और दिव्य मानव कल्याणकारी संदेश को आत्मसात् कर जीने वाली भारतीय सनातन संस्कृति भी धन्य है, जिसमें मनुष्य की तो बात ही छोड़िए, पशु, पक्षी, पत्थर, नदी, समुद्र, वृक्ष आदि की भी पूजा की जाती है और उनमें भी भगवान के दर्शन किए जाते हैं।

भारत का आध्यात्मिक-सांस्कृतिक ज्ञान का क्षेत्र अनुपम एवं विशाल है, जो स्वयं में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन कराता है और ब्रह्माण्ड के कण-कण में स्वयं का दर्शन कराता है। अर्थात् भगवान सम्पूर्ण बह्मांड के कण-कण में व्याप्त हैं और सम्पूर्ण बह्मांड भगवान में स्थित है। भारत में पौराणिक काल से ही ज्ञान-विज्ञान एवं अध्यात्म की विपुल सम्पदा का अक्षय भण्डार रहा है जो आज भी स्वयं भारत और सम्पूर्ण विश्व के लिए उतना ही उपयोगी, महत्वपूर्ण, सार्थक तथा जीवन को धन्यता प्रदान करने वाला है, जिनता पूर्व काल में था। त्रिकाल में ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ रहा है।

ज्ञान के प्रकाश में ही समस्त की प्राप्ति एवं सर्व अभीष्ट की सिद्धि सम्भव है। इसीलिए ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। सांसारिक धन-सम्पदा का सदुपयोग भी ज्ञान के माध्यम से ही किया जा सकता है। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की त्रिवेणी का उद्गम स्थल भारत ही है। भारत को पतित पावनी माँ गंगा की अलौकिक गोद प्राप्त है, जिसमें संसार के प्राणिमात्र को पवित्र करने और सद्गति प्रदान करने की शक्ति है। भारत के वेदों, पुराणों एवं उपनिषदों में अपार ज्ञान-सम्पदा है जो आज भी मानव कल्याणकारी है तथा जगत का वास्तविक कल्याण विकास करने में समर्थ है। भारत का गौरवशाली अतीत सत्य, प्रेम, दान, न्याय, मैत्री एवं त्याग के असंख्य प्रेरणाप्रदायी उदाहरणों से परिपूर्ण है, सुशोभित है। भारत में प्रत्येक काल में उत्कृष्ट प्रतिभाओं, दिव्य विभूतियों एवं महापुरुषों ने अपने कर्म प्रकाश से राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व के कल्याणार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है।

राम, कृष्ण के साथ ही साथ यह सत्यवादी-महादानी राजा हरिश्चन्द्र, महादानी दधीचि, महान त्यागी शिबि, भक्त शिरोमणि प्रहलाद और भक्तराज ध्रुव, जगत-जननी माँ सीता, महासती अनुसूया, सती सावित्री, आदि कवि, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वेद व्यास, भक्त शिरोमणि संत तुलसीदास, कबीरदास, रहीम, रसखान, भक्त मीराबाई, छत्रपति शिवाजी महाराज, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप, महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार पटेल, चन्द्रशेखर आजाद तथा भगत सिंह जैसे महान विभूतियों एवं अमर पुत्रों की पावन भूमि है, जिन्होंने भारत को गौरवान्वित किया है। उपरोक्त महान विभूतियों का दिव्य प्रकाश भारतीय राष्ट्रीय चरित्र में आज भी विद्यमान है और आज भी भारत को सत्य, ज्ञान, तप-त्याग एवं बलिदान की प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान करते हैं।

भारत में आगामी पच्चीस वर्षों में शिक्षा, स्वास्थ्य, समृद्धि एवं खुशहाली जन-जन को प्राप्त हो, विश्व मंच पर भारत और अधिक तेजस्विता तथा दृढता के साथ अपनी महत्वपूर्ण वैश्विक कल्याणकारी भूमिका निभाए, यह हम सबकी शुभकामना है।

अतः, भारत को अपने महिमामय स्वरूप में स्थित होकर सम्पूर्ण शक्ति के साथ अपने तथा विश्व के व्यापक हित में एक और ऐतिहासिक भूमिका के निर्वहन के प्रति गम्भीरतम् प्रयास करने होंगे, जो **विश्व गुरु** के दायित्व बोध से अनुप्राणित होनी चाहिए।

◆◆◆

BSE
Investors Protection Fund

Spread your investments across assets

for a stable portfolio

INVEST RIGHT TOH FUTURE BRIGHT

Issued in public interest by BSE Investors Protection Fund.

www.bseindia.com | /BSEIndia | @BSEIndia | /BSEIndia | /BSEIndia

Invesco Mutual Fund

Choose a Flexicap fund and increase your opportunities for growth.

Aim to benefit from opportunities across large, mid and small caps for long-term wealth creation.

A Flexicap fund has the flexibility to invest across large, mid and small caps stocks. This unrestricted nature of the fund enables the fund manager to pursue multiple investment opportunities across the market and tap them regardless of their size. Since they provide exposure to a broad equity spectrum i.e across marketcaps and sectors, it leads to a well-diversified portfolio striking a balance between risk and returns in a single portfolio.

To know more, speak to your mutual fund distributor/financial advisor for more advice on how flexi cap funds can be part of every portfolio.

invescomutualfund.com

Follow us on

An investor education and awareness initiative.
For Know Your Customer (KYC) guidelines along with the documentary requirements and procedure for change of address, phone number, bank details, etc., please visit the Education and Guidance section on www.invescomutualfund.com. Investor should deal with only SEBI registered Mutual Funds, details of which can be verified under "Intermediaries/Market Infrastructure Institutions" on https://www.sebi.gov.in/index.html. For any grievance / complaint, please call us on 1800-209-0007 or write to us at mfservices@invesco.com. Alternatively, complaints can be registered on the SEBI SCORES Portal at https://scores.gov.in.

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

ये हैं दुनिया के बेस्ट बॉस !

डायमंड इंडस्ट्री एवं दिल के शहंशाह

पद्मश्री सावजीभाई ढोलकिया

- कृपाशंकर तिवारी

सावजीभाई ढोलकिया जो न सिर्फ अपने कर्मचारियों को कार, ज्वेलरी और घर गिफ्ट करने के लिए पहचाने जाते हैं बल्कि वह देश के सबसे सफल हीरा कारोबारियों में से एक हैं। सावजीभाई ढोलकिया डायमंड इण्डस्ट्री एवं दिल के शहंशाह हैं। वह एक ऐसे कारोबारी हैं जो सिर्फ मुनाफा कमाने के लिए कारोबार नहीं करते।

सावजीभाई ढोलकिया

चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर
हरिकृष्णा एक्सपोर्ट

आपसे एक सवाल है। मान लीजिए कि आपके पास हजारों करोड़ की दौलत है। ऐसे में क्या आप अपने बेटे को किसी बेकरी या जूते की दुकान पर आम आदमी की तरह काम करने के लिए भेजेंगे? आपका जवाब शायद न होगा। कुछ लोग तो यहां तक भी कहेंगे कि ऐसा करने की जरूरत ही क्या है? लेकिन अगर आप सावजीभाई ढोलकिया के बेटे हैं तो ये कोई विकल्प नहीं बल्कि अनिवार्यता हो जाती है। जी हां। सावजीभाई ढोलकिया जो न सिर्फ अपने कर्मचारियों को कार, ज्वेलरी और घर गिफ्ट करने के लिए पहचाने जाते हैं बल्कि वह देश के सबसे सफल हीरा कारोबारियों में से एक हैं। सावजीभाई ढोलकिया डायमंड इण्डस्ट्री और दिल के शहंशाह हैं। वह एक ऐसे कारोबारी हैं जो सिर्फ मुनाफा कमाने के लिए कारोबार नहीं करते। हम ऐसा क्यों कह रहे हैं, ये तो आगे बताएंगे ही लेकिन पहले सवाल के जवाब पर चलते हैं। सावजीभाई ढोलकिया के बेटे हैं द्रव्य ढोलकिया। 15 हजार करोड़ से ज्यादा की टर्नओवर वाली कंपनी के संस्थापक के बेटे द्रव्य ढोलकिया चाहें तो क्या नहीं कर सकते लेकिन सावजी ने अपने बेटे को जिंदगी का सबसे अहम सबक सिखाने की ठानी। उन्होंने अपने बेटे को 7 हजार रूपए दिए और उन्हें कुछ वक्त तक एक आम आदमी की तरह काम करने और जीने के लिए कहा। द्रव्य ने भी ऐसा ही किया। एक इंटरव्यू में सावजीभाई ढोलकिया ने बताया कि उन्होंने अपने बेटे के सामने तीन शर्तें रखीं। पहली शर्त ये थी कि वह कमाकर ही खाएंगे और जो 7 हजार रुपए उन्हें दिए गए हैं, वह सिर्फ आपातकाल स्थिति में ही इस्तेमाल करेंगे। दूसरा, वह अपने पिता का नाम या उनका रसूख कहीं पर इस्तेमाल नहीं करेंगे। तीसरा, उन्हें एक महीने में किसी भी एक जगह पर एक हफ्ते से ज्यादा काम नहीं करना होगा। इसके पीछे मंशा ये थी कि वह जगह-जगह काम कर वहां का अनुभव ले सकें। अपने इस सबक वाले वक्त के दौरान द्रव्य ने कोच्चि में पहले एक बेकरी में काम किया। बाद में मैकडोनल्ड और फिर कॉल सेंटर में भी उन्होंने काम किया। अपने बेटे को ये सब करवाने के पीछे की वजह बताते हुए सावजी ढोलकिया ने कहा कि जब बच्चों के हाथ में पैसा होता है और अगर उन्होंने किसी भी तरह की परेशानी नहीं देखी है तो ऐसे में वह मानवीय मूल्यों को नहीं सीख पाते। उन्हें नहीं पता चल पाता कि एक आम आदमी और गरीब आदमी के क्या संघर्ष होते हैं। वह कहते हैं कि जिंदगी के संघर्षों की सीख के लिए हमें इस तरह के रास्ते अख्तियार करने पड़ते हैं। आप कहते हैं कि इस तरह के पाठ से जिंदगी में परिस्थितियों से निपटने के रास्ते इंसान को खुद ही मिल जाते हैं। सावजी ढोलकिया ने ये पाठ सिर्फ अपने बेटे को नहीं सिखाया बल्कि उन्होंने अपने भाइयों के बेटों को भी कुछ इसी तरह जीवन का सबसे अहम पाठ पढ़ाया। जीवन की बारीकियों और परोपकारिता के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा उदाहरण सेट करने वाले सावजीभाई ढोलिकया खुद संघर्षों की आग में तपकर हीरा बने हैं।

दुनिया के सबसे बेस्ट बॉस

सावजीभाई ढोलकिया को दुनिया का सबसे बेस्ट बॉस कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसा इसलिए क्योंकि लगभग सभी लोग चाहते हैं कि उनका बॉस सावजीभाई ढोलकिया जैसा हो। और ऐसा क्यों है उसकी वजह भी जान लीजिए। दरअसल, सावजीभाई ढोलकिया हर दीवाली पर अपने कर्मचारियों को ऐसा बोनस देते हैं जिस तरह का बोनस दुनिया भर में शायद ही कोई कारोबारी या

> सावजीभाई को 2022 में पद्मश्री से नवाजा गया। सावजीभाई को पद्मश्री मिलने की खुशी में उनके परिवार ने उन्हें 50 करोड़ का हेलिकॉप्टर गिफ्ट किया। सावजीभाई ने एक इंटरव्यू में कहा कि यह उपहार मेरे मिजाज के मुताबिक थोड़ा बड़ा था लेकिन क्योंकि परिवार ने उपहार दिया था तो मैंने उसे सहर्ष ही स्वीकार किया।

बॉस देता होगा। दीवाली बोनस के तौर पर फिक्स्ड डिपॉजिट, इंश्योरेंस, स्कूटी, कार और घर देना, इनके लिए काफी आम है। 5 साल पहले सावजी ढोलकिया तब खूब चर्चा में आए थे, जब उन्होंने अपने 600 कर्मचारियों को दीपावली पर तोहफे में कार दी थी। सिर्फ यही नहीं, उन्होंने 900 कर्मचारियों को फिक्स्ड डिपॉजिट भी गिफ्ट किए। यहां तक कि दो कर्मचारियों को उन्होंने मर्सडीज बेंज जैसी गाड़ियां तोहफे में दीं और ये गाड़ियां उन्हें इसलिए मिली क्योंकि वह 20 साल से ज्यादा वक्त से कंपनी के साथ जुड़े हुए हैं। उनके इस परोपकार की शुरुआत 5 साल पहले से ही नहीं हुई है। इससे पहले भी उन्होंने अपने कर्मचारियों को जूलरी सेट, कार-फ्लैट और इंश्योरेंस पॉलिसी भी उपहार में दी हैं। सिर्फ यही नहीं, वह अपनी कंपनी में काम करने वाले कर्मचारियों के पेरेंट्स को साल में एक बार टूर पर भी लेकर जाते हैं। और ये कोई छोटा-मोटा टूर नहीं होता। बाकायदा 15 दिन का टूर करवाया जाता है। सावजीभाई भी खुद 10 दिन तक इनके साथ रहते हैं। समाज को देने को लेकर सावजीभाई ढोलकिया कितने तत्पर रहते हैं, वो एक घटना से पता चलता है। सावजीभाई को 2022 में पद्मश्री से नवाजा गया। सावजीभाई को पद्मश्री मिलने की खुशी में उनके परिवार ने उन्हें 50 करोड़ का हेलिकॉप्टर गिफ्ट किया। सावजीभाई ने एक इंटरव्यू में कहा कि यह उपहार मेरे मिजाज के मुताबिक थोड़ा बड़ा था लेकिन क्योंकि परिवार ने उपहार दिया था तो मैंने उसे सहर्ष ही स्वीकार किया। बाद में सावजी ने ऐलान कर दिया कि आपातकालीन स्थिति में हमारी तरफ से लोगों को हेलिकॉप्टर दिए जाएंगे। ऐसा नहीं है कि सावजीभाई सिर्फ अपने कर्मचारियों को महंगे तोहफे ही देते हैं। उनकी कंपनी और वह परोपकार के काम में भी काफी काम करते हैं। इन्होंने गुजरात के सौराष्ट्र में पानी की समस्या को दूर करने के लिए वॉटर रिजर्व लगवाया। इसके साथ ही गांवों में वाटर हार्वेस्टिंग के लिए भी कई काम किए। कर्मचारियों को महंगे तोहफे देने का सिलसिला सावजी ढोलकिया ने 90 के दशक से ही शुरू कर दिया था। 2002 में भी उन्होंने अपने कर्मचारियों को कारें और दूसरे उपहार गिफ्ट किए थे। 2002 ही वो साल था जब उनकी कंपनी हरि कृष्ण एक्सपोर्ट्स ने 100 करोड़ का टर्नओवर हासिल किया था। ये वही साल था जब कंपनी ने HK ज्वेल्स भी लॉन्च किया।

संघर्षों भरा रहा जीवन

सावजीभाई ढोलकिया का जन्म गुजरात के अमरेली में 12 अप्रैल, 1962 को हुआ था। बताया जाता है कि उन्होंने सिर्फ चौथी तक ही अपनी पढ़ाई की है। वह हरिकृष्णा एक्सपोर्ट्स के संस्थापक और चेयरमैन हैं। बताया जाता है कि सावजीभाई महज 12 साल के थे, जब उन्होंने सूरत पहुंचकर हीरा घिसने का काम शुरू किया था। उस समय सावजी भाई को तनख्वाह में महज 180 रुपए मिलते थे। आज उनकी कंपनी 15 हजार करोड़ रुपए से भी ज्यादा की है। सावजी भाई एक छोटे से किसान परिवार में जन्मे थे। घर में पैसों की तंगी थी तो महज 12 साल की उम्र में पढ़ाई छोड़ दी। पढ़ाई छोड़ने के बाद वह सूरत में अपने चाचा के पास आए। यहां उन्होंने 10 साल तक हीरा घिसाई का काम किया। सावजीभाई जब हीरा घिसने का काम किया करते थे तो उन्हें हीरा घिस्सू बुलाया जाता था। लेकिन जब उन्होंने खुद की कंपनी शुरू की

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा पद्मश्री से सम्मानित

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ सावजीभाई ढोलकिया एवं द्रव्य ढोलकिया

“11 मार्च, 2023 को HK डिजाइन और हरिकृष्णा प्राइवेट लिमिटेड ने एक गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड सेट किया। ये रिकॉर्ड एक अंगूठी में सबसे ज्यादा हीरे लगाने के लिए इनके नाम किया गया। कंपनी ने एक ही अंगूठी में 50,907 हीरे जड़े। इस पूरी प्रक्रिया को मूर्त रूप देने में 9 महीने लग गए। सिर्फ रिकॉर्ड ही नहीं बल्कि जिस अंगूठी पर ये हीरे जड़े गए, वह भी रिसाइकल किए गए मटीरियल से बनी थी।”

तो उन्होंने हीरा तराशने वालों को सम्मान देकर डायमंड इंजीनियर नाम दिया। उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए भी शर्त रखी है। हरिकृष्णा एक्सपोर्ट में किसी भी कर्मचारी को फैक्ट्री में पान-गुटखा-मसाला खाने की अनुमति नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने ये भी तय किया है कि जो भी कर्मचारी दोपहिया वाहन से आता है, उसके लिए हेलमेट पहनना अनिवार्य है। सावजीभाई ढोलकिया के परोपकार की बात करें तो उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन में भी अहम योगदान दिया है। इसके तहत कंपनी ने 10 शहरों की जिम्मेदारी संभाली। आज इसी कंपनी हरिकृष्णा एक्सपोर्ट में 8 हजार से ज्यादा कर्मचारी खुशी-खुशी काम करते हैं बल्कि कई तो अभी भी इनकी कंपनी को ज्वाइन करने के लिए लाइन में खड़े हैं। कंपनी को पिछले 22 सालों में 18 साल तक लगातार GJEPC सम्मान से नवाजा गया। GJEPC यानी जेम्स एंड ज्वेलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल से है। आज कंपनी की पहुंच दुनिया के 80 देशों तक है। आज हरिकृष्णा एक्सपोर्ट डायमंड इंडस्ट्री की टॉप 5 कंपनियों में शामिल है।

हीरा घिस्सू से डायमंड कारोबारी का सफर

बात शुरू होती है 1992 से। 1992 में ढोलकिया भाइयों ने हरिकृष्णा एक्सपोर्ट की नींव रखी। सावजीभाई के साथ उनके भाई तुलसी, हिम्मत और घनश्याम ने डायमंड कारोबार में कदम रखा। 1993 आते-आते कंपनी ने 1 करोड़ का टर्नओवर हासिल कर लिया। ये पहली बार था जब ढोलकिया भाइयों ने पहली बार कोई अंतरराष्ट्रीय यात्रा की। 1994 में इन्होंने मुंबई में पंचतंत्र ऑफिस की शुरुआत की और मुंबई में ऑफिस खोलना इनके लिए काफी लकी साबित हुआ। एक तरह से ये देश के हीरा बाजार में छाप छोड़ने की उनकी शुरुआत थी। महज तीन साल की शुरुआत के बावजूद 1995 में कंपनी ने 13 करोड़ का टर्नओवर हासिल कर लिया। 1996 में डायमंड कटिंग और पॉलिशिंग के काम को और बड़े स्केल पर करने के लिए इन्होंने सूरत में डायमंड फैक्ट्री की शुरुआत की। ये वही साल था, जब इन्होंने हरिकृष्णा

चैरिटेबल ट्रस्ट की शुरुआत की। 1997 में कंपनी ने मुंबई में श्रीजी चेंबर्स की स्थापना की। इसी साल कंपनी का टर्नओवर 27 करोड़ के पार पहुंच गया। 1999 में कंपनी को एक और कामयाबी हाथ लगी। कंपनी को भारत सरकार ने मान्यता दी और इस तरह कंपनी ने भारतीय बाजार के इतर अपने कारोबार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार दी। 2002 में पहली बार कंपनी ने 100 करोड़ टर्नओवर का आंकड़ा छुआ। इसके साथ ही HK ज्वेल्स की शुरुआत की। 2005 में कंपनी ने अपना ज्वेलरी ब्रांड HK डिजाइन्स लॉन्च किया। इसके साथ ही कंपनी ने डायमंड पॉलिशिंग से ज्वेलरी मेकिंग के कारोबार में कदम रखा। 2008 में कंपनी ने एक बड़े मैदान पर HK कैंपस की स्थापना की। ये इसीलिए ही बनाया गया ताकि उनके कर्मचारियों को काम करने में किसी भी तरह की दिक्कतें पेश न आएं। 2011 में पहली बार कंपनी ने 1 हजार करोड़ का टर्नओवर का मार्क पार किया। इस दौरान कंपनी ने 1103 करोड़ का टर्नओवर हासिल किया। इसी दौरान कंपनी ने अपने CSR विंग के जरिए 7 लाख पौधे लगाने का एक कीर्तिमान भी रचा। 2012 में कंपनी रिस्पॉन्सिबल ज्वेलरी काउंसिल की मेंबर बनी। कंपनी को 2019 में मोस्ट सोशियली रिस्पॉन्सिबल कंपनी, कट एंड पॉलिश्ड डायमंड्स और बेस्ट ग्रोइंग कंपनी ऑफ द ईयर जैसे अवॉर्ड हासिल हुए हैं। आज कंपनी का कारोबार 80 से ज्यादा देशों में फैला हुआ है। आज कंपनी का सालाना टर्नओवर 15 हजार करोड़ का है। कंपनी के पास 8 हजार से ज्यादा कर्मचारी हैं जो लगातार बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए कार्यरत रहते हैं। और जब कंपनी के कर्मचारी बेहतर प्रदर्शन करते हैं तो सावजीभाई ढोलकिया भी उन्हें इसके लिए धन्यवाद करना नहीं भूलते और वो भी अपने तरीके से, महंगे-महंगे उपहार देकर।

वर्ल्ड रिकॉर्ड भी है नाम

सावजीभाई ढोलकिया और उनकी कंपनी सिर्फ परोपकार और बेहतर कारोबार करने के मामले में सबसे आगे नहीं है बल्कि ये तो रिकॉर्ड होल्डर भी हैं। जी हां, 11 मार्च, 2023 को HK डिजाइन और हरिकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड ने एक गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड सेट किया। ये रिकॉर्ड एक अंगूठी में सबसे ज्यादा हीरे लगाने के लिए इनके नाम किया गया। कंपनी ने एक ही अंगूठी में 50,907 हीरे जड़े। इस पूरी प्रक्रिया को मूर्त रूप देने में 9 महीने लग गए। सिर्फ रिकॉर्ड ही नहीं बल्कि जिस अंगूठी पर ये हीरे जड़े गए, वह भी रिसाइकल किए गए मटीरियल से बनी थी।

परोपकार में जुटा ढोलकिया फाउंडेशन

हरिकृष्णा एक्सपोर्ट की परापकोरी विंग है ढोलकिया फाउंडेशन। जहां सावजी अपनी कंपनी में काम करने और अच्छा प्रदर्शन करने के लिए लाखों और करोड़ों के गिफ्ट देते हैं तो वहीं, समाज की बेहतरी के काम में भी वह जुटे हुए हैं। ढोलकिया फाउंडेशन के जरिए वह समाज को एक बेहतर जगह बनाने में जुटे हुए हैं। ढोलकिया फाउंडेशन के जरिए सावजीभाई ढोलकिया जल संरक्षण, वृक्षारोपण, अक्षय ऊर्जा और दूसरी सामाजिक परोपकार की गतिविधियों के काम करते हैं। फाउंडेशन पर्यावरण संरक्षण के कई कार्यों से जुड़ा हुआ है। ढोलकिया फाउंडेशन देश में गरीबी का उन्मूलन करने के लिए भी काम कर रहा है। इसके साथ ही दूसरे कई तरह के कार्यों को फाउंडेशन कर रहा है। सावजीभाई ढोलकिया एक ऐसे कारोबारी हैं जो देने के लिए कमाते हैं। सावजीभाई मानते हैं कि अगर आप दूसरों को दोगे तो आपको जरूर मिलेगा। उनका नाम देश के सबसे अमीर शख्स के तौर पर भले ही शामिल न हो लेकिन उनका नाम देश के सबसे बड़े परोपकारी और अपने कर्मचारियों के हित का ध्यान रखने वाले बॉस के तौर पर जरूर है। यही वजह है कि हीरा कारोबार में सावजीभाई ढोलकिया को काफी आदरभाव के साथ देखा और सुना जाता है। आप डायमंड इंडस्ट्री और दिल के शहंशाह हैं।

आदरणीय सावजीभाई ढोलकिया संघर्ष की आग में तप कर खुद देश – दुनिया के अनमोल रत्न बने हैं। शून्य से शिखर तक की आपकी कालजयी यात्रा देश – दुनिया के लिए एक बहुत बड़ी मिशाल है, बहुत बड़ी प्रेरणा है।

आप अपने श्रेष्ठ कर्म प्रकाश से यूं ही समाज के लिए आदर्श बन कर मानवता को महिमामण्डित करते रहें, मानवता को राह दिखाते रहें। आप उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता और दीर्घायु को उपलब्ध हों। अभ्युदय वात्सल्यम् पत्रिका परिवार की ओर से आपके सुखद एवं यशस्वी जीवन हेतु अनंत शुभकामनाएं!

◆◆◆

आनंद राठी

देश के वेल्थ क्रिएटर

1999 में आनंद राठी बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) के प्रेसिडेंट चुने गए। आपके कार्यकाल में BSE ऑनलाइन ट्रेडिंग सिस्टम को काफी सफलता हासिल हुई और ये एक कामयाब मॉडल साबित हुआ। आनंद राठी ने ट्रेड गारंटी फंड की भी स्थापना की।

- आशुतोष

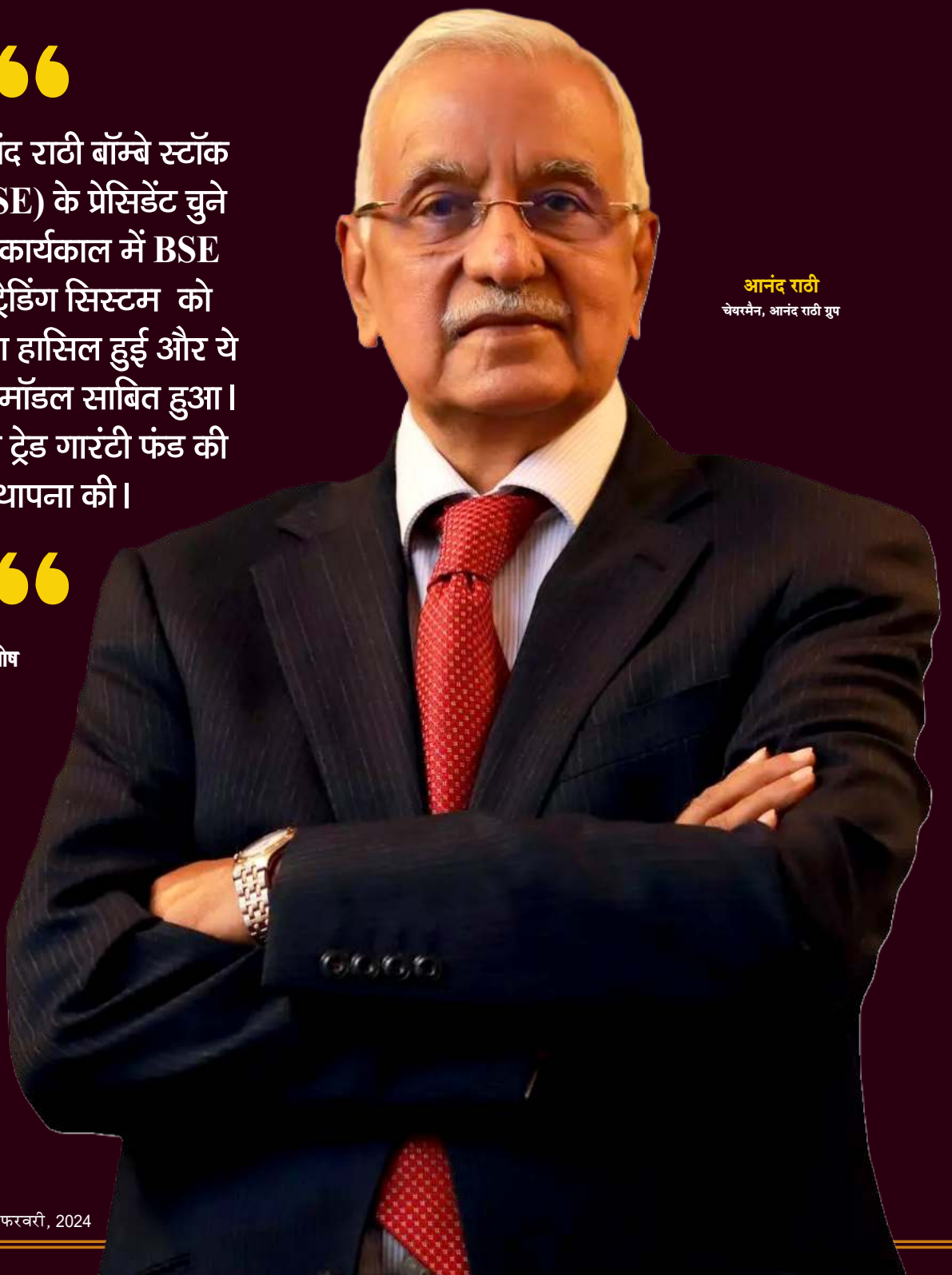

आनंद राठी
चेयरमैन, आनंद राठी ग्रुप

देश की वित्तीय सेवा में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक है आनंद राठी ग्रुप। वित्तीय सेवाओं तक भारत के आम आदमी की पहुंच आसान बनाने वाले इस ग्रुप के संस्थापक भी खुद में एक प्रतिष्ठित शख्सियत हैं। 53 साल से ज्यादा का अनुभव समेटे और कारोबार के मास्टर आनंद राठी **आनंद राठी ग्रुप** के चेयरमैन हैं। आनंद राठी गोल्ड मेडलिस्ट चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं जिन्होंने अपने 50 साल से ज्यादा लंबे करियर में कई प्रतिष्ठित कंपनियों में काम किया है और अपनी सेवाएं दी हैं। वह वित्तीय और निवेश विशेषज्ञ हैं। वह सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया में भी जाने-माने एक्सपर्ट हैं। आनंद राठी ग्रुप की स्थापना करने से पहले आनंद राठी ने आदित्य बिड़ला ग्रुप के साथ काम किया। आपने आदित्य बिड़ला ग्रुप के सीमेंट कारोबार को नई दिशा देने और फलक पर पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। सिर्फ यही नहीं, आदित्य बिड़ला ग्रुप की मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर में एंट्री करवाने में भी आपने अहम रोल अदा किया था। 1999 में आनंद राठी बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) के प्रेसिडेंट चुने गए। आपके कार्यकाल में BSE ऑनलाइन ट्रेडिंग सिस्टम (BOLT) को काफी सफलता हासिल हुई और ये एक कामयाब मॉडल साबित हुआ। आनंद राठी ने ट्रेड गारंटी फंड की भी स्थापना की। इसके अलावा आपने सेंट्रल डिपॉजिटरी सिस्टम (CDS) की स्थापना करने में भी अहम भूमिका निभाई। आनंद राठी ICAI के सदस्य भी हैं। अक्सर बाजार की चाल और भविष्य की संभावनाओं पर आनंद राठी की राय काफी सटीक बैठती हैं। यही वजह है कि देश के तमाम न्यूज बिजनेस चैनल आपकी राय पाने को उत्सुक रहते है।

आनंद राठी ग्रुप की शुरुआत

साल 1994 में आनंद राठी ने प्रदीप गुप्ता के साथ मिलकर आनंद राठी ग्रुप की स्थापना की। वित्तीय कारोबार की बेहतर समझ को आनंद राठी ने अपने इस ग्रुप के जरिए भारत के निवेशकों तक पहुंचाने की शुरुआत की। आपने महज एक साल बाद 1995 में एक रिसर्च डेस्क स्थापित की। इस रिसर्च डेस्क में तब देश के प्रतिष्ठित संस्थागत निवेशक शामिल थे। आपने कारोबार को तेजी से आगे बढ़ाते हुए 1999 में पहली रिटेल ब्रॉकरेज सर्विस को लॉन्च किया। इसके जरिए इसी साल पहली मर्जर एंड एक्विजिशन डील भी सेटल की। 2000 का दशक आते-आते आनंद राठी ग्रुप एक जाना-पहचाना नाम बन चुका था। 2001 में आनंद राठी ने अपने कारोबार को वेल्थ मैनेजमेंट सर्विस के तौर पर आगे बढ़ाया। ग्रुप ने

2017 में रेलिगेयर वेल्थ मैनेजमेंट बिजनेस का अधिग्रहण किया गया। इसी साल कंपनी ने अपने कारोबार को डिजिटल स्वरूप दिया और डिजिटल वेल्थ मैनेजमेंट सर्विसेज की शुरुआत की। 2017 में ही ग्रुप ने रिइंश्योरेंस बिजनेस, फाइनेंस बिजनेस की शुरुआत भी की। इसके साथ ही जोधपुर में आनंदराठी IT की शुरुआत की गई।

2001 में वेल्थ मैनेजमेंट सर्विस शुरू की। वेल्थ मैनेजमेंट सर्विस का कारोबार चल पड़ा तो 2003 में इंश्योरेंस ब्रोकिंग के कारोबार में आनंद राठी ग्रुप ने प्रवेश किया। इसी साल ग्रुप ने कमोडिटी ब्रोकरेज और रियल एस्टेट सर्विस की भी शुरुआत की। 2005 आते-आते ग्रुप ने रियल एस्टेट प्राइवेट इक्विटी फंड लॉन्च किया। यही वो साल रहा जब आनंद राठी ग्रुप ने कैपिटल मार्केट लेंडिंग बिजनेस में भी हाथ रखा। 2007 में सिटीग्रुप वेंचर कैपिटल इंटरनेशनल ग्रुप के साथ फाइनेंशियल प्लानर के तौर पर जुड़ा। इस दौर तक आते-आते आनंद राठी ग्रुप वित्तीय बाजार में खुद को मजबूती से स्थापित कर चुका था। इसकी एक झलक दिखी 2009 में। 2009 में एशिया मनी प्राइवेट बैंकिंग पोल ने आनंद राठी ग्रुप को बेस्ट डोमेस्टिक प्राइवेट बैंक इन इंडिया के सम्मान से नवाजा। 2012 में ग्रुप एक कदम और आगे बढ़ा और कंपनी को बेस्ट ऑवरऑल प्राइवेट बैंक इन इंडिया के सम्मान से नवाजा गया। ग्रुप को 2009 से 2013 तक लगातार बेस्ट डोमेस्टिक प्राइवेट बैंक इन इंडिया का अवॉर्ड मिलता रहा। 2016 में कंपनी ने कंस्ट्रक्शन फाइनेंस बिजनेस की शुरुआत की। इस दौरान कंपनी ने फ्रीडम फाइनेंशियल प्लानर्स का अधिग्रहण किया। आनंद राठी ग्रुप के अधिग्रहण का सिलसिला यूं ही चलता रहा। 2017 में रेलिगेयर वेल्थ मैनेजमेंट बिजनेस का अधिग्रहण किया गया। इसी साल कंपनी ने अपने कारोबार को डिजिटल स्वरूप दिया और डिजिटल वेल्थ मैनेजमेंट सर्विसेज की शुरुआत की। 2017 में ही ग्रुप ने रिइंश्योरेंस बिजनेस, SME फाइनेंस बिजनेस की शुरुआत भी की। इसके साथ ही जोधपुर में आनंदराठी IT की शुरुआत की गई। 2020 में कंपनी ने ग्लोबल इन्वेस्टिंग सर्विस की शुरुआत की। इस सर्विस की शुरुआत गिफ्ट सिटी के जरिए की गई और 2021 में आनंद राठी वेल्थ लिमिटेड पब्लिक हुई। कंपनी BSE, NSE पर लिस्ट हुई। आनंद राठी की शेयर बाजार में दमदार लिस्टिंग हुई। लिस्टिंग से अब तक कंपनी के शेयर में 245% से ज्यादा का उछाल देखने को मिला है। कंपनी दिसंबर 2021 में बाजार में लिस्ट हुई थी। कंपनी ने अपना एक शेयर 550 रुपए पर इश्यू किया था और 29 दिसंबर को ये शेयर 2592 रुपए का हो चुका है। यानी कि इस शेयर ने 245% से ज्यादा का रिटर्न निवेशकों को दिया है। नवंबर महीने में ही कंपनी के शेयर में 25% की तेजी देखने को मिली है। वहीं, बीते 6 महीनों की बात करें तो स्टॉक 115% भागा है। एक साल के पीरियड में शेयर ने 160% की तेजी दिखाई है। कंपनी के नेटवर्क की बात करें तो आनंद राठी वेल्थ के पास 300 रीजनल मैनेजर का बेस है। इन 300 RM में से हर एक रीजनल मैनेजर 50 क्लाइंट्स को सेवा प्रदान करता है। कंपनी के पास 6 लाख से ज्यादा रजिस्टर्ड कस्टमर हैं। पूरे भारत में 1100 से ज्यादा आउटलेट्स हैं। कंपनी के पास 4 हजार से ज्यादा कर्मचारी हैं जो लगातार अपने क्लाइंट्स को बेहतर सुविधा और सेवा देने के लिए तत्पर हैं। आज कंपनी ब्रोकिंग, डिस्ट्रिब्यूशन, फाइनेंशिंग, रिसर्च जैसी कई सेवाएं अपने क्लाइंट्स को मुहैया कराती है।

शानदार नतीजे, दमदार प्रदर्शन

आनंद राठी वेल्थ लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रही है। सितंबर, 2023 को खत्म हुई तिमाही में कंपनी के शुद्ध मुनाफे में 34% का इजाफा देखने को मिला है। कंपनी ने इस तिमाही में 58 करोड़ का मुनाफा बनाया है। इससे पिछले साल की इसी तिमाही में कंपनी ने 43 करोड़ का शुद्ध मुनाफा कमाया था। कंपनी की कुल आय पर नजर डालें तो इसमें 37% की बढ़त देखने को मिली है। वित्त वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही में कुल रेवेन्यू 189.1 करोड़ पर पहुंचा है। बता दें कि वित्त वर्ष 2023 की समान तिमाही में कुल रेवेन्यू 138.1 करोड़ था। सितंबर, 2023 तक कंपनी के एसेट अंडर मैनेजमेंट (AUM) पर नजर डालें तो यह 47,957 करोड़ है। पिछले साल के मुकाबले इसमें 34% की बढ़ोतरी हुई है। कंपनी कितना बढ़िया मुनाफा बना रही है, ये इसी से पता चलता है कि कंपनी ने इस तिमाही में 5 रुपए प्रति शेयर के डिविडेंड की घोषणा की है।

आनंद राठी का सक्सेस मंत्र

आनंद राठी की बात करें तो वह फाइनेंस इंडस्ट्री के दिग्गज हैं। वह मैक्रोइकोनॉमिक से जुड़े मामलों पर भी काफी मुखर होकर बोलते हैं। वह सरकारी नीतियों, मैन्युफैक्चरिंग समेत अन्य सेक्टर्स पर खुलकर बात करते हैं। आनंद राठी समाज को एक बेहतर जगह बनाने के लिए भी काफी ज्यादा काम करते हैं। वह कई परोपकारी कामों से जुड़े हुए हैं। आनंद राठी एक सफल कारोबारी हैं और वह कैसे इस मुकाम पर पहुंचे, इसका सक्सेस मंत्र बताते हुए आनंद राठी बताते हैं कि आपकी प्रकृति आंत्रप्रेन्योरशिप वाली हो यानि कि आप एक कारोबारी की तरह सोचते हों। आपकी रिस्क लेने की कैपेसिटी हो यानी कि आप नए कारोबार में पेश आने वाले खतरों को उठाने से डरते नहीं हों। वह कहते हैं कि अगर आप अपने कारोबार को अच्छे से और लंबे वक्त तक चलाना चाहते हैं तो आपके पास लोगों को साथ लेकर चलने की प्रतिभा होनी चाहिए। और अपने कारोबार को सफल बनाना है तो आपको हार्ड वर्क करना होगा। आनंद राठी कहते हैं कि जब आप अपनी टीम और कस्टमर का ध्यान रखते हैं तो आपका कारोबार अच्छी प्रगति करता है। आनंद राठी के मुताबिक जब आप ये सोचकर काम करते हैं कि आपके क्लाइंट यानी ग्राहक का फायदा होगा तो आप अपनी ही सक्सेस का रोडमैप तैयार कर रहे होते हैं। वह कहते हैं कि जब आप दूसरों का ध्यान रखते हैं तो सफलता अपने आप आप तक चलके आती है। बशर्ते आप एक कारोबारी बनने के लिए मेहनत और लगन से डटे रहें।

बाजार में पैसे कैसे बनाएँ?

आनंद राठी देश के सबसे प्रतिष्ठित वित्तीय सलाहकारों में से एक है। वह अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए मुद्दों पर जितनी बारीकी से बात करते हैं, उतने ही बेहतरीन तरीके से वह निवेश को लेकर भी अपनी बात रखते हैं। एक इंटरव्यू में बेहतर निवेश और बाजार से पैसे बनाने के सवाल पर आपने कहा था कि अगर आप अपना पैसा शेयर बाजार में लगा रहे हैं, चाहे वो म्यूचुअल फंड के जरिए ही क्यों न हो, आपके पास एक सही एडवाइजर होना बहुत जरूरी है। वह आम निवेशकों को गाइड करते हुए कहते हैं कि आप म्यूचुअल फंड से निवेश की शुरुआत कर सकते हैं। आनंद राठी कहते हैं कि आपको अपने निवेश को लंबी अवधि के लिए करना चाहिए। वह साथ में ये भी बात कहते हैं कि एक बार निवेश करने के बाद उसे हर एक-दो दिन में देखते न रहें। लंबी अवधि के लिए निवेश करें और अच्छा रिटर्न आप बना सकते हैं। वह बताते हैं कि आप अच्छे फंड में जितना लंबा निवेश रखेंगे, उतना ज्यादा आपको फायदा मिलेगा। इसके साथ ही वह सीख देते हैं कि आपको कभी भी मार्केट को टाइम नहीं करना चाहिए। वह कहते हैं कि अगर आप ये सोचते बैठेंगे कि जब मार्केट नीचे आएगा तब पैसे लगाएंगे और जब ऊपर जाएगा तो निकालेंगे तो ऐसे में आप बहुत ज्यादा सफल नहीं हो पाओगे। वह कहते हैं कि मार्केट को कोई टाइम नहीं कर सकता। इसीलिए लंबी अवधि के लिए निवेश करिए और सही वित्तीय सलाहकार की मदद से बाजार से अच्छा रिटर्न हासिल करिए।

आनंद राठी जी अर्थ व्यवस्था एवं अर्थ जगत के बहुत ही दूरदर्शी और विद्वान विभूति हैं। अर्थ जगत के साथ ही देश के लिए आपकी सेवाएं अनमोल हैं। आपका सुविशाल व्यक्तित्व आर्थिक जगत ही नहीं बल्कि मानवता का भी प्रकाशक है। आप देश के अनमोल रत्न हैं। आप उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं सुदीर्घ जीवन को उपलब्ध हो, यूं ही देश को अपने कर्म प्रकाश से आलोकित करते रहें। आपके सुखद एवं यशस्वी जीवन हेतु पत्रिका परिवार की अनंत शुभकामनाएं। ◆◆◆

“2009 में एशिया मनी प्राइवेट बैंकिंग पोल ने आनंद राठी ग्रुप को बेस्ट डोमेस्टिक प्राइवेट बैंक इन इंडिया के सम्मान से नवाजा। 2012 में ग्रुप एक कदम और आगे बढ़ा और कंपनी को बेस्ट ऑवरऑल प्राइवेट बैंक इन इंडिया के सम्मान से नवाजा गया।”

इंफ्रा सेक्टर के महारथी वीरेन्द्र म्हैसकर

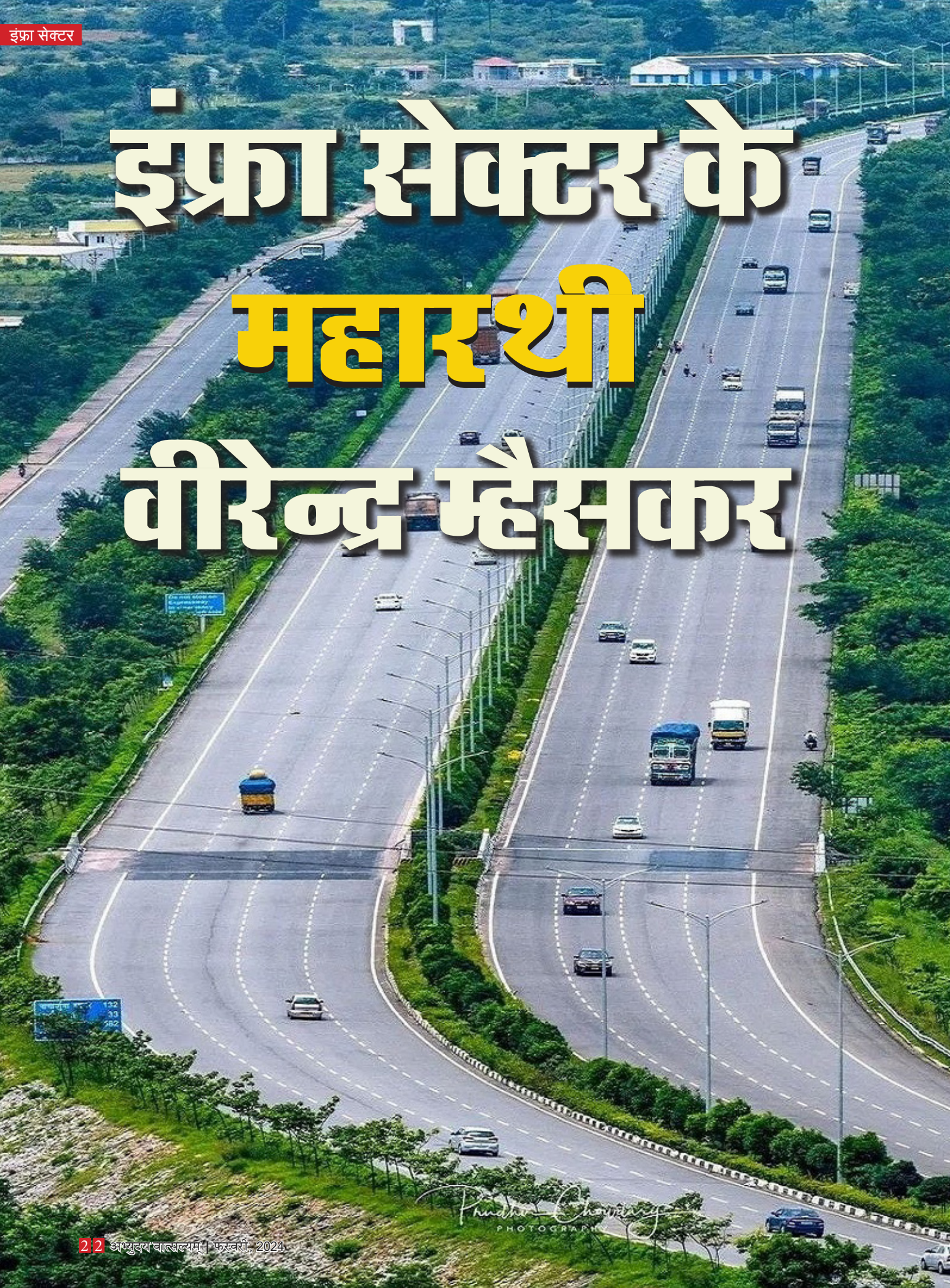

वीरेन्द्र म्हैसकर
चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर
आईआरबी

– हर्षिता शुक्ला

आईआरबी के पास मौजूद BOT पोर्टफोलियो देश में सबसे बड़े पोर्टफोलियो में से एक है। कंपनी के पास 14 हजार लेन किलोमीटर रोड एसेट्स हैं। कंपनी अपने स्ट्रैटेजिक इन्वेस्टर फरोवियल ग्रुप के जरिए बेस्ट ग्लोबल टेक्नोलॉजी और प्रैक्टिसेज को लागू कर रही है। कंपनी के पास मजबूत अनुभव है, जिसके बूते कंपनी हर साल 500-600 किलोमीटर का निर्माण करने की क्षमता रखती है।

> “कंपनी को लेकर क्लाइंट्स खासकर सरकार के मन में काफी ज्यादा भरोसा हो गया था और यही वजह है कि देश में कई अहम रोड और हाइवे प्रोजेक्ट्स को IRB इंफ्रास्ट्रक्चर ने ही पूरा किया है।”

देश की सबसे बड़ी हाइवे कंस्ट्रक्शन कंपनियों में से एक IRB इंफ्रास्ट्रक्चर लगातार अपनी एक्सेलेंस को साबित कर रही है। देश में वैश्विक स्तर की सड़कों के निर्माण से जुड़ी IRB इंफास्ट्रक्चर का 15,003 लेन किलोमीटर का रोड पोर्टफोलियो है। देश के 12 शहरों में IRB के एसेट्स मौजूद हैं। रोड कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में 40 साल से ज्यादा का अनुभव रखने वाली IRB की कमान है वीरेंद म्हैसकर के हाथों में। वीरेन्द्र म्हैसकर देश में इंफ्रास्ट्रक्चर बिजनेस को धार देने वाले पहले लोगों में गिने जाते हैं। वीरेंद्र IRB इंफ्रास्ट्रक्चर के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। श्रीराम कॉलेज से इंजीनियरिंग डिग्री हासिल करने के बाद वीरेन्द्र ने फैमिली बिजनेस को ज्वाइन किया। म्हैसकर के पिता आइडियल रोड बिल्डर्स नाम से कंपनी चलाते थे। दत्तात्रेय म्हैसकर ने इस कंपनी की शुरुआत 1977 में की थी। इस कंपनी में रहते हुए वीरेंद्र ने अपने पिता के सानिध्य में रोड कंस्ट्रक्शन का काम सीखा था। इस दौरान वह मुंबई महानगरपालिका के लिए इंजीनियर के तौर पर काम करते थे। IRB नगरपालिका के लिए सड़कें बनाया करती थी। म्हैसकर तब महज 19 साल के थे जब उन्होंने फैमिली बिजनेस में हाथ बंटाना शुरू किया। 1990 से वह लगातार कंस्ट्रक्शन बिजनेस में सक्रिय बने हुए हैं। म्हैसकर तब से कंस्ट्रक्शन बिजनेस में हैं जब निर्माण कार्य पूरी तरह सरकार के अधीन होता था। इस काम में प्राइवेट प्लेयर्स की ज्यादा पूछ नहीं थी लेकिन 1995 आते-आते सूरत बदलने लगी। म्हैसकर के फैमिली बिजनेस को तब एक बड़ा बूस्ट मिला जब 1995 में पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप लागू हुई। पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) का मॉडल आने के बाद निजी कंपनियों के हाथ में सरकारी इंफ्रा का काम आने लगा। म्हैसकर कहते हैं कि कंपनी को अर्ली मूवर एडवाटेंज मिला और कंपनी ने खुद को बड़ी मजबूती से स्थापित किया है। 1998 में वीरेंद्र म्हैसकर ने IRB इंफ्रा की स्थापना की और तब से लगातार वह देश में सड़क निर्माण, टोल प्लाजा प्रबंधन समेत कई तरह के कामों को संभाल रहे हैं। खुद को चाइल्ड ऑफ रिफॉर्म कहने वाले म्हैसकर बताते हैं कि सरकार से पार्टनरशिप कर उन्होंने अपने कारोबार को एक नए मुकाम तक पहुंचाया है। आज कंपनी देश की सबसे बड़ी इंटीग्रेटेड प्राइवेट टोल रोड और हाइवे इंफ्रा डेवलपर है। कंपनी के 12 राज्यों में 25 के करीब हाइवे प्रोजेक्ट्स चल रहे हैं। म्हैसकर की बात करें तो उन्होंने श्रीराम पॉलिटेक्निक कॉलेज से सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा की है। उनके पास कंस्ट्रक्शन और इंफ्रा सेक्टर में 30 साल से ज्यादा का अनुभव है। नए कारोबार, रोड कंस्ट्रक्शन और प्रोजेक्ट्स की जिम्मेदारी वीरेंद्र के हाथों में है।

मजबूत लीडरशिप में शानदार ग्रोथ

90 के दशक में जब कंस्ट्रक्शन का काम सरकार के अधीन था तब म्हैसकर ने PPP मॉडल के जरिए कंपनी के लिए कई प्रोजेक्ट्स हासिल किए। वीरेंद्र की लीडरशिप में IRB इंफ्रा पहली ऐसी कंपनी बनी जिसने भारत में BOT (बिल्ट, ऑपरेट, ट्रांसफर) प्रोजेक्ट पूरा किया। इसके अलावा कंपनी TOT (टोल, ऑपरेट एंड ट्रांसफर), HAM (हाइब्रिड एन्युटी मॉडल) जैसे कई तरह के हाइवे कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट को वीरेंद्र की कंपनी पूरा करती है। IRB इंफ्रा के नाम देश के कई बड़े प्रोजेक्ट्स पूरा करने का श्रेय है। इसमें पुणे NH4 हाइवे और नवी मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे की टोलिंग, मुंबई-पुणे प्रोजेक्ट,

वडोदरा–मुंबई एक्सप्रेसवे जैसे कई प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। IRB इंफ्रास्ट्रक्चर कंस्ट्रक्शन के फील्ड में इसलिए भी आगे आ जाती है क्योंकि कंपनी के पास मजबूत नेटवर्क और मजबूत कंस्ट्रक्शन ट्रैक रिकॉर्ड है। कंपनी के पास मौजूद BOT पोर्टफोलियो देश में सबसे बड़े पोर्टफोलियो में से एक है। कंपनी के पास 14 हजार लेन किलोमीटर BOT रोड एसेट्स हैं। कंपनी अपने स्ट्रैटेजिक इन्वेस्टर फरोवियल ग्रुप के जरिए बेस्ट ग्लोबल टेक्नोलॉजी और प्रैक्टिसेज को लागू कर रही है। कंपनी के पास मजबूत अनुभव है जिसके बूते कंपनी हर साल 500-600 किलोमीटर का निर्माण करने की क्षमता रखती है। IRB के पास देश के सबसे बड़े इक्विपमेंट बैंक में से एक है। कंपनी के पास 5 अरब रुपए से ज्यादा के इक्विपमेंट मौजूद हैं। दूसरी तरफ, कंपनी के पास 3 हजार से ज्यादा कुशल कर्मचारी और मजदूर हैं। कंपनी की ग्रोथ पर नजर डालें तो 2008 में लिस्टिंग होने के बाद से कंपनी बड़ी तेजी से आगे बढ़ी है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले कंपनी ने अपना नाम हर जगह नहीं बनाया था बल्कि इस दौरान कंपनी को दूसरी समकक्ष कंपनियों के मुकाबले काफी आगे रखा जाता था। कंपनी को लेकर क्लाइंट्स खासकर सरकार के मन में काफी ज्यादा भरोसा हो गया था और यही वजह है कि देश में कई अहम रोड और हाइवे प्रोजेक्ट्स को IRB इंफ्रास्ट्रक्चर ने ही पूरा किया

> 2010 में वीरेन्द्र के लिए तब सबसे बड़ी चुनौती खड़ी हुई थी, जब उनका नाम महाराष्ट्र के एक RTI एक्टिविस्ट की हत्या में जोड़ा गया। इस दौरान वीरेन्द्र म्हैसकर ने साफ कहा कि वह किसी भी तरह से इस मामले में शामिल नहीं हैं। बाद में उन्हें इस मामले से बाइज्जत बरी कर दिया गया।

है। लिस्टिंग होने के बाद जब कंपनी ने अपने नतीजे जारी किए तो ग्रोथ साफ नजर आने लगी। 2009 में कंपनी की आय 567 करोड़ थी जो अब 2023 में बढ़कर 4580 करोड़ तक पहुंच गई है। इसका मतलब ये हुआ कि कंपनी की आय 17% CAGR से बढ़ी है। EBITDA की बात करें तो 2009 में कंपनी की EBITDA मार्जिन 18% थी जो 2023 में बढ़कर 25% हो गई है। इसमें भी 23% CAGR की बढ़ोतरी देखने को मिला है। वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में कंपनी का टोल रेवेन्यू 18% की दर से बढ़ा था। अप्रैल–जून तिमाही में कंपनी का टोल रेवेन्यू एक हजार करोड़ रुपए रहा था।

लीडरशिप को कई अवॉर्ड

IRB इंफ्रास्ट्रक्चर की शानदार ग्रोथ और बेहतर प्रोजेक्ट डिलिवरी ने कंपनी को कई सम्मान भी दिलाए हैं। वीरेंद म्हैसकर को CNBC-TV18 ने यंग टर्क ऑफ द ईयर अवॉर्ड से नवाजा था। सिर्फ यही नहीं, 2017 में उन्हें इकोनॉमिक टाइम्स की तरफ से इंफ्रास्ट्रक्चर मैन ऑफ द इयर महाराष्ट्र अचीवर्स अवॉर्ड से नवाजा गया। वीरेन्द्र की लीडरशिप में IRB ने भी कई अवॉर्ड और सम्मान अपने नाम किए हैं। इसमें बेस्ट पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप, बेस्ट BOT प्रोजेक्ट, मोस्ट सेफ प्रोजेक्ट, बेस्ट कंस्ट्रक्शन, बेस्ट ऑपरेशंस एंड मेंटेनेंस, HR एक्सेलेंस और CSR एक्सेलेंस जैसे कई सम्मान मिल चुके हैं। IRB इंफ्रा को एस्सार स्टील इंफ्रास्ट्रक्चरल एक्सेलेंस अवॉर्ड से भी नवाजा गया है। IRB

इंफ्रा को ये अवॉर्ड नेशनल हाइवे-8 के भरूच-सूरत सेक्टर में बेहतरीन काम करने के लिए दिया गया। दूसरी बार मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर भी अच्छा काम करने के लिए IRB इंफ्रा को फिर से इस पुरस्कार से नवाजा गया। एक वक्त में जब इंफ्रा इंडस्ट्री के कई प्रोजेक्ट कर्ज के बोझ तले दबे हुए थे और कई कंपनियां प्रोजेक्ट से अपना नाम वापस ले रही थीं, तब वीरेन्द्र म्हैसकर लगातार तरक्की कर रहे थे। उनकी कंपनी कैश पर बैठी थी। एक्सपर्ट्स बताते हैं कि इसकी वजह ये रही कि जब इंफ्रा मार्केट स्ट्रेस में आया तो दूसरे प्लेयर दबाव में आ गए क्योंकि वह ज्यादातर काम कॉन्ट्रैक्ट लेने के बाद थर्ड पार्टी से करवाते हैं लेकिन IRB इंफ्रा के साथ ऐसा नहीं है। कंपनी के पास इन-हाउस टैलेंट है जो हर प्रोजेक्ट को बखूबी पूरा करने में सक्षम है। इससे कंपनी के कई खर्चे बच जाते हैं। यही वजह है कि IRB इंफ्रा कॉम्पिटीशन के मुकाबले काफी आगे रही है और आज भी रहती है।

चुनौतियों से पड़ता रहा वास्ता

वीरेन्द्र म्हैसकर ने अपने कारोबारी वेंचर की शुरुआत से ही काफी चुनौतियों का सामना किया है लेकिन उन्होंने एक बेहतरीन लीडर की तरह चुनौतियों का मुंहतोड़ जवाब दिया है। 2010 में वीरेन्द्र के लिए तब सबसे बड़ी चुनौती खड़ी हुई थी, जब उनका नाम महाराष्ट्र के एक RTI एक्टिविस्ट की हत्या में जोड़ा गया। इस दौरान वीरेन्द्र म्हैसकर ने साफ कहा कि वह किसी भी तरह से इस मामले में शामिल नहीं हैं। बाद में उन्हें इस मामले से बाइज्जत बरी कर दिया गया। बता दें कि 2010 में सतीश शेट्टी नाम के RTI एक्टिविस्ट की हत्या कर दी गई थी। बाद में आरोप लगाए गए कि इस हत्याकांड में वीरेन्द्र म्हैसकर भी शामिल हैं। हालांकि जांच में वीरेन्द्र को क्लीनचिट दे दी गई। कुछ इसी तरह 2012 में वीरेन्द्र म्हैसकर के खिलाफ आयकर विभाग ने कार्रवाई की। IRB इंफ्रा और वीरेन्द्र म्हैसकर के कई ठिकानों पर छापेमारी की गई लेकिन आखिर में टैक्स विभाग के हाथ कुछ भी नहीं लगा। इन घटनाओं के बाद फोर्ब्स से बात करते हुए म्हैसकर ने कहा था कि ये चुनौतियां शॉर्ट टर्म की होती हैं। इनका हमारे कारोबार से कोई लेना-देना नहीं है। वह कहते हैं कि हमने कभी कारोबार गलत या बुरे तरीके से नहीं किया है। वीरेन्द्र की लीडरशिप में IRB इंफ्रास्ट्रक्चर NHAI के महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट स्वर्णिम चतुर्भुज प्रोजेक्ट से भी जुड़ी हुई है। इसमें कंपनी की करीब 20% हिस्सेदारी है। वीरेन्द्र ने देश का पहला InvIT फंड भी लॉन्च किया है। इस फंड को निवेश के लिए रुचिकर बनाने के लिए वीरेंद्र ने IRB के सबसे ज्यादा और बेहतर रेवेन्यू जनरेट करने वाले फंड को इसमें शामिल किया है।

परोपकार में भी भागीदारी

IRB इंफ्रास्ट्रक्चर सिर्फ अच्छा कारोबार नहीं करती है बल्कि यह परोपकार के कई काम भी करती है। IRB इंफ्रा वीरेन्द्र म्हैसकर की लीडरशिप में शिक्षा और दूसरे सामाजिक मुद्दों पर काम करती है। IRB इंफ्रा ने अपनी परोपकारी शाखा के जरिए राजस्थान और पंजाब में दो मॉडल प्राइमरी स्कूल स्थापित किए हैं। इसके साथ ही कंपनी मेरिट-बेस्ड स्कॉलरशिप भी मुहैया करती है। दूसरी तरफ, कंपनी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन संस्थानों में भी योगदान देती है जो शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए काम करते हैं। वीरेंद्र म्हैसकर अपने कर्मचारियों का भी खास ख्याल रखते हैं। उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए हेल्थकेयर इनिशिएटिव लिए हैं।

ग्रोथ की सड़क

देश में इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण को लेकर बात करते हुए वीरेन्द्र म्हैसकर कहते हैं कि एक हेल्दी इकोनॉमी के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट काफी अहम हो जाता है। इसमें भी खासकर सड़क निर्माण और भी अहम हो जाता है। सड़क निर्माण देश के विकास में काफी अहम रोल निभाता है। इनके जरिए न सिर्फ देश में एक जगह से दूसरी जगह वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है बल्कि ये स्थानीय लोगों के लिए कई मौके भी तैयार करती है। वह अपने एक लेख में कहते हैं कि सड़कों की काफी ज्यादा अहमियत इकोनॉमी में होती है, यही वजह है कि सरकार के हर बजट में इंफ्रा डेवलपमेंट पर काफी ज्यादा फोकस होता है। इसमें भी सड़कों और हाइवे केन निर्माण पर और भी ज्यादा। ये फोकस इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि सरकार भी ये बात समझती है कि इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास से ही देश की इकोनॉमी रफ्तार बढ़ेगी।

वीरेन्द्र म्हैस्कर IRB के जरिए गुणवत्तापूर्ण कार्य करने वाले एक कर्मठ एवं वचन वद्ध व्यक्तित्व हैं। समाजसेवा एवं परोपकार के कार्यों में आप दिल से सहयोग करने वाले एक उदार एवं सहयोगी प्रकृति के बेहतरीन इंसान हैं। आप के उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं दीर्घायु हेतु अभ्युदय वात्सल्यम् पत्रिका परिवार परम पिता परमात्मा से प्रार्थी है।

◆◆◆

एड.सी.एस.लोधा
मैनेजिंग पार्टनर
सीएस लोधा एसोशिएट्स

कॉरपोरेट जगत के प्रतिष्ठित एवं विद्वान अधिवक्ता

सी.एस. लोधा

लोधा जी अध्ययन में कितने कुशाग्र और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थे, उसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आप लगातार तीन साल तक गोल्ड मेडलिस्ट रहे हैं। आपको सर पी सी बनर्जी, ए एन झा गोल्ड मेडल और लैम्सडेन्स गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। आपको कुल 7 मेडल प्राप्त हुए।

"अंधकार से लड़ने का कोई अगर संकल्प कर लेता है
एक अकेला जुगनू भी सारा अंधकार हर लेता है"

देश के प्रतिष्ठित एवं विद्वन वकील चंद्र सिंह लोधा कुछ इन शब्दों में अपने एवं विद्वान सफर की चुनौतियों को समेटते हैं। चंद्र सिंह लोधा को आम तौर पर सी.एस. लोधा के नाम से पहचाना जाता है। सी.एस. लोधा वकालत करते हैं और इसके साथ ही वह कॉरपोरेट एडवाइजर भी हैं। लोधा की इनडायरेक्ट टैक्सेशन, कॉरपोरेट लॉ और संवैधानिक कानून में विशेषज्ञता है। लोधा कई मल्टीनेशनल कंपनियों के एडवाइजर हैं। इसके साथ ही आप भारत के कई कारोबारी घरानों के भी एडवाइजर हैं। वकालत की दुनिया में एक प्रतिष्ठित नाम लोधा ने टॉप 500 कंपनियों के लिए कई केस लड़े हैं। करियर के 40 से ज्यादा सालों में आपने मैन्युफैक्चर्ड गुड्स, एक्साइज, कस्टम्स, सेल्स टैक्स, वैट समेत कई चुनौतीपूर्ण मामलों में पैरवी की है। सी.एस. लोधा सिर्फ कंपनियों को ही नहीं बल्कि कई इंडस्ट्री एसोसिएशंस से भी जुड़े रहे हैं। आपने कई इंडस्ट्री एसोसिएशन को कई कानूनी प्रस्तावों का जवाब देने में मदद की है। आपने हमेशा इंडस्ट्री की प्रत्यक्ष जरूरतों और राष्ट्रीय उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाए रखा है। सी.एस. लोधा एक वकील होने से ज्यादा काफी कुछ हैं। आप कई प्रोफेशलन, सामाजिक, सांस्कृतिक और परोपकारी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। कॉरपोरेट जगत और टैक्स से जुड़ी गहन जानकारी और अनुभव को अपने विशाल व्यक्तित्व में समेटे सी.एस. लोधा गेस्ट स्पीकर भी हैं। अक्सर आप चार्टर्ड अकाउंटेंट्स इंस्टीट्यूट, कंपनी सेक्रेट्रीज इंस्टीट्यूट, टैक्स लॉ फोरम, कॉस्ट अकाउंटेंट्स, मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट्स में लेक्चर देने जाते हैं। इसके अलावा आप विश्वविद्यालयों में भी अपने 40 साल से ज्यादा के अनुभव को साझा करते रहते हैं। वैसे तो सी.एस. लोधा ने अपने करियर की शुरुआत कॉरपोरेट लॉयर के तौर पर की थी लेकिन 80 के दशक में आपने स्वतंत्र तौर पर काम करना शुरू कर दिया था। नवंबर, 1983 में आपने CS लोधा एसोशिएट्स नाम से अपने

फर्म की शुरुआत की। इससे पहले आप हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के साथ जुड़े हुए थे। लोधा ने मार्च, 1976 में हिंदुस्तान लिवर लिमिटेड को लीगल डिपार्टमेंट के प्रमुख के तौर पर ज्वाइन किया था। यहां वह करीब 7 साल रहे और अपना काम शुरू करने से पहले यानी कि अक्टूबर, 1983 तक यहीं पर थे।

सी एस लोधा की शुरुआत

चंद्र सिंह लोधा का जन्म राजस्थान के जोधपुर में हुआ। आपके पिता भी इसी प्रोफेशन में थे, जिसमें उनके बेटे ने खुद को साबित किया है। सी एस लोधा के पिता अहमदाबाद में लीगल एडवाइजर थे। पिता की सर्विस अहमदाबाद में थी तो वह अपने परिवार को भी साथ लेकर वहीं चले गए। यहीं पर चंद्र सिंह की स्कूली शिक्षा पूरी हुई। अहमदाबाद में चंद्र सिंह लोधा ने नौवीं कक्षा तक पढ़ाई की। अहमदाबाद से सी.एस. लोधा के पिता नौकरी के लिए उत्तर प्रदेश चले गए। वहां आपने यूपी बोर्ड से हाईस्कूल पास किया। इसके बाद एक बार फिर लोधा वापस जोधपुर आए। उन्होंने यहां से BSc की डिग्री हासिल की। जोधपुर से डिग्री हासिल करने के बाद एक बार फिर लोधा इलाहाबाद पहुंच गए। 60 के दशक में इलाहाबाद शिक्षा के क्षेत्र के लिए बहुत प्रतिष्ठित माना जाता था। यही वजह है कि सी एस लोधा भी इस तरफ खिंचे चले आए। उन्होंने इलाहाबाद से पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा किया। आज भले ही सी एस लोधा प्रतिष्ठित कॉरपोरेट मामलों के लॉयर हैं लेकिन एक वक्त में वकालत उनकी करियर च्वॉइस में शामिल भी नहीं था। एक इंटरव्यू में खुद लोधा ने इसके बारे में बताया। उन्होंने बताया कि हाईस्कूल में उनके अच्छे नंबर आए थे। नंबर अच्छे थे तो घर वाले उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे। यही वजह थी कि लोधा ने आगे जाकर साइंस स्ट्रीम ली। वह बताते हैं कि उन्हें भाषा जैसा विषय काफी पसंद आता था लेकिन केमिस्ट्री समेत दूसरे सब्जेक्ट में उनकी कोई रुचि नहीं थी। कॉलेज के दिनों में उनकी रुचि चर्चा में हिस्सा लेने में जरूर थी। वह डिबेट में हिस्सा लिया करते थे। निबंध लिखते थे और कविताएं भी लिखा करते थे। लोधा बताते हैं कि BSc खत्म करते-करते मुझे अहसास हो गया कि इंजीनियरिंग मेरे लिए नहीं है। मुझे पता चल गया था कि मेरा रुझान तर्क करने में है और इस तरह मैंने वकालत करने का फैसला किया। करियर का रास्ता तय होने के बाद मैंने इलाहाबाद से ही अपनी लॉ की डिग्री हासिल की। सी.एस. लोधा ने 1972 में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से लॉ की डिग्री हासिल की। लोधा जी पढ़ाई में कितने कुशाग्र एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थे, उसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि वह लगातार तीन साल तक गोल्ड मेडलिस्ट रहे हैं। आपको सर पी सी बनर्जी, ए एन झा गोल्ड मेडल और लैम्सडेन्स गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। आपको कुल 7 मेडल प्राप्त हुए।

कॉरपोरेट जगत से करियर की शुरुआत

लॉ की पढ़ाई पूरी करने के बाद सी. एस. लोधा ने DCM को ज्वॉइन किया। DCM में चार साल काम करने के बाद आपने हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड में काम शुरू किया। यहां पर लोधा ने लीगल मैनेजर के तौर पर काम शुरू किया। इस दौरान आपने इंडस्ट्रियल लॉ, कॉरपोरेट लॉ, कॉम्पिटीशन लॉ, इंडायरेक्टर टैक्सेशन और अन्य क्षेत्रों का बेहतरीन नॉलेज प्राप्त किया। हालांकि, अब आपने मन बना लिया था कि वह स्वयं का कुछ शुरू करेंगे। इस तरह 1983 में आपने हिंदुस्तान लीवर को अलविदा कहा और जुट गए अपने एक नए सफर पर। आपने काउंसेल और एडवाइजर के तौर पर काम आरम्भ किया। एक साक्षात्कार में स्वयं सी.एस. लोधा ने बताया कि जब उन्होंने अपना काम शुरू करने का फैसला लिया तो उनके पास नए ऑफिस के लिए पैसे नहीं थे। वह बताते हैं कि मुझे नया सेटअप डालने के लिए 9 लाख रुपए की जरूरत थी। इस दौरान जब वह एक बैंक के पास लोन के लिए गए तो बैंक ने ये कहकर मना कर दिया कि हम वकीलों को लोन नहीं देते। इस पर सी एस लोधा ने उस बैंक के चेयरमैन से कहा कि घोड़े पर दांव तो हर कोई लगाता है लेकिन आदमी पर कोई नहीं लगाता। लोधा बताते हैं कि उनकी ये बात बैंक के चेयरमैन को चुभ गई। और एक दिन उसने लोधा को बुलाकर उन्हें 18% ब्याज पर लोन देना तय किया। लोधा बताते हैं कि महज 7-8 महीने में उन्होंने पूरा लोन चुका दिया और इस तरह उन्होंने अपने स्वतंत्र कारोबार की शुरुआत की। स्वतंत्र तौर पर काम शुरू करने के बाद भी उन्होंने अपने काम और मेहनत से अपनी छाप छोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के अलावा देश के बडे-बडे.उद्योग घराने उनके क्लाइंट रहे हैं और आज भी कई हैं। इसके साथ ही 2001 से लोधा बार एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के प्रेसिडेंट हैं। लोधा अब वकालत में रुचि रखने वाले युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। वह कई तरह के ट्रेनिंग कोर्स और सेमिनार का भी हिस्सा हैं।

वन पेज नोट फॉर्मूला

सी.एस. लोधा के पास 40 साल से ज्यादा का अनुभव है। उन्हें कई मामले और कई धाराएं जुबानी याद हैं लेकिन इसके बावजूद वो एक फॉर्मूला हमेशा याद रखते हैं और वो है वन पेज नोट फॉर्मूला। सी.एस. लोधा एक इंटरव्यू में बताते हैं कि जब भी वह किसी मीटिंग को अटेंड करते है, फिर चाहे वो मीटिंग फिजिकल हो या फिर वर्चुअल। वह हमेशा सुनिश्चित करते हैं कि वह उस मीटिंग की एक समरी जरूर तैयार करें। वह युवाओं को भी इस प्रैक्टिस को फॉलो करने का संदेश देते हुए कहते हैं कि जब भी कभी आप कोई मीटिंग करें तो उस मीटिंग को तब तक खत्म न समझें जब तक आपने उसका वन पेज नोट नहीं तैयार कर लिया हो। वह कहते हैं कि ये आदत आपको अपने करियर में काफी आगे लेकर जा सकती है। वकालत के क्षेत्र में आने वाले युवाओं को संदेश देते हुए सी.एस. लोधा कहते हैं कि आपको ईमानदारी से काम करना चाहिए। वह कहते हैं कि सिर्फ अपने क्लाइंट को डराने के लिए आपको कोई एक्शन या कागज तैयार नहीं करना चाहिए। आपको एक डॉक्टर की तरह अपने क्लाइंट का केस पूरा समझकर फिर उसके हिसाब से जो सही बनता है, वो कदम उठाना चाहिए। आप कहते हैं कि आपको वो डॉक्टर बनना होगा जो सिर्फ सही इलाज करे न कि पैसों की खातिर गैर-जरूरी इलाज भी करने लगे। लोधा कहते हैं कि ईमानदारी से काम करने वालों की कद्र हमेशा होती है। वह कहते हैं कि आपको अपने क्लाइंट्स को लेकर मानवता का भाव भी रखना होगा।

आप के अनुसार एक वकील के तौर पर आपको अपनी आवाज नहीं बल्कि आपकी बहस का स्तर बढ़ाना चाहिए। वास्तव में एडवोकेट सीएस लोधा जी कानून के विद्वान होने के साथ ही मानवोचित गरिमानुरूप श्रेष्ठ आचरणशील एक सर्वोत्तम कोटि के मानव हैं। जहां कर्तव्य निष्ठा, वचनबद्धता एवं पुरुषार्थ आपके व्यक्तित्व के विशिष्ट गुण हैं वहीं वैचारिक सुसम्पन्नता, आध्यात्मिकता एवं परहित की भावना आपके सुविशाल व्यक्तित्व को अलंकृत करने वाले दिव्य मानवीय सद्गुण हैं। आपका गम्भीर, उदात्त एवं विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व समाज के लिए प्रेरक है। आपके उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं दीर्घायु हेतु अभ्युदय वात्सल्यम् परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थी है। ◆◆◆

अनिरुद्ध काला

AI बाजार के सुप्रीम लीडर

"अनिरुद्ध ने जयपुर के मानसरोवर प्लाजा में एक छोटा सा कमरा लेकर अपने कारोबार की शुरुआत की। क्योंकि उस समय AI और मशीन लर्निंग जैसे नए विषयों पर काम करने वाले ज्यादा लोग नहीं थे तो उन्होंने अखबार में नौकरी के लिए इश्तिहार दिया।"

- आलोक रंजन तिवारी

अनिरुद्ध काला
फाउंडर एंड सीईओ
सेलेबल टेक्नोलॉजीज

आज हर तरफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग की बात हो रही है लेकिन 2015-2016 में अगर आपने इसकी बात की होती तो शायद आपको दरकिनार कर दिया जाता। कुछ वैसे ही जैसे अनिरुद्ध काला को दरकिनार कर दिया गया था। देश के अलावा दुनिया के 10 से ज्यादा देशों में अपनी सेवा दे रही सेलेबल टेक्नोलॉजीस के फाउंडर और CEO अनिरुद्ध काला ने तब AI और मशीन लर्निंग के फील्ड में हाथ डाला था, जब इसमें कोई भी भविष्य नहीं समझा जाता था। अनिरुद्ध ने एक इंटरव्यू में बताया कि जब 2016 में उन्होंने AI और मशीन लर्निंग जैसे विषय के इर्द-गिर्द कारोबार शुरू करने की बात अपने आस-पास के लोगों से कही तो सबने उन्हें ये गलती न करने की सलाह दी। सबने कहा कि भारत में AI का कोई भविष्य नहीं है। उन्हें सलाह दी गई कि उन्हें किसी बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी में काम पकड़ लेना चाहिए। जहां उन्हें न सिर्फ अच्छी सैलरी मिलेगी बल्कि जॉब सिक्योरिटी भी होगी लेकिन नहीं। अनिरुद्ध ने इन सभी सलाहों को दरकिनार किया और वो प्रवेश कर गए AI के क्षेत्र में। इस तरह 13 अक्टूबर, 2016 को उन्होंने अपनी कंपनी सेलेबल टेक्नोलॉजीस की शुरुआत की। अनिरुद्ध ने जयपुर के मानसरोवर प्लाजा में एक छोटा सा कमरा लेकर अपने कारोबार की शुरुआत की। क्योंकि उस समय AI और मशीन लर्निंग जैसे नए विषयों पर काम करने वाले ज्यादा लोग नहीं थे तो उन्होंने अखबार में नौकरी के लिए इश्तिहार दिया। अनिरुद्ध बताते हैं कि इश्तिहार देखकर सिर्फ 4 लोग उनके ऑफिस में इंटरव्यू देने पहुंचे। उन्होंने इन 4 में से 3 को सेलेक्ट किया और कारोबार को गति देना शुरू कर दिया। और इस तरह शुरू हुई वो कंपनी जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में आज देश ही नहीं बल्कि दुनिया की अग्रणी कंपनियों में शामिल है। आज सेलेबल टेक्नोलॉजी के जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, दुबई, यूनाइटेड किंगडम समेत 10 देशों में ऑफिस हैं। तीन कर्मचारियों के साथ शुरू होने वाली इस कंपनी में आज 3 हजार से ज्यादा कर्मचारी हैं।

अनिरुद्ध की शुरुआत

आज देश के AI कारोबार में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक अनिरुद्ध काला की शुरुआत राजस्थान से हुई है। अनिरुद्ध ने अपनी स्कूली पढ़ाई सेंट एन्स एकेडमी, जयपुर से की। इसके बाद हायर सेकेंड्री करने के लिए वह पहुंच गए सुबोध पब्लिक स्कूल। यहां पर उन्होंने 2002-2004 के बीच पढ़ाई की। सुबोध पब्लिक स्कूल के बाद पहुंचे राजस्थान यूनिवर्सिटी में कंप्यूटर इंजीनियरिंग की डिग्री लेने। उन्होंने यहां पर 2005 से 2009 के बीच BE की डिग्री हासिल की। इसके अलावा अनिरुद्ध ने बाद में AI के फील्ड में भी कुछ सर्टिफिकेशंस हासिल किए हैं। इसमें अमेरिका की मैसाच्यूसट्स यूनिवर्सटी से AI में सर्टिफिकेशन शामिल है। दूसरी तरफ, इन्होंने MIT से बिग डाटा एनालिटिक्स का सर्टिफिकेशन भी पूरा किया है। इसके अलावा मशीन लर्निंग, न्यूरल नेटवर्किंग, डीप लर्निंग समेत कई अहम सब्जेक्ट्स पर अनिरुद्ध ने नॉलेज हासिल किया है। पढ़ाई पूरी करने के बाद अनिरुद्ध ने कई जगहों पर नौकरी भी की। उनके करियर की शुरुआत इंफोसिस से हुई। इंफोसिस में वह सीनियर डाटा एनालिटिक्स डेवलपर के तौर पर जुड़े। अगस्त, 2009 में पुणे में इंफोसिस ज्वाइन की और अगले 3 साल वह कंपनी के साथ बने रहे। इंफोसिस के बाद अनिरुद्ध IBM पहुंच गए। मार्च, 2012 में अनिरुद्ध ने IBM को ज्वाइन किया। यहां वह एक डाटा साइंस कंस्लटेंट के तौर पर जुड़े। करीब डेढ़ साल IBM में काटने के बाद उन्होंने ZS को डाटा साइंस रिसर्चर के तौर पर ज्वाइन किया। यहां वह मई, 2013 से अगस्त, 2014 के बीच रहे। अनिरुद्ध के मन में AI के क्षेत्र में कुछ काम करने का विचार तो आ चुका था लेकिन वह अभी उहापोह की स्थिति में थे। ये वक्त था अगस्त-2014 से 2015 के बीच का। इस दौरान उन्होंने टॉपकोडर कंपनी में डाटा साइंस के तौर पर नौकरी की। 6 महीने टॉपकोडर और करीब दो साल विट्राना में बिताने के बाद उन्होंने आखिरकार

अपना कारोबार शुरू करने की ठानी। विट्राना में चीफ डाटा साइंटिस्ट के तौर पर जनवरी 2015 से अक्टूबर 2016 तक उन्होंने काम किया। इसके तुरंत बाद ही अक्टूबर 2०16 में ही उन्होंने अनुपम गुप्ता के साथ मिलकर सेलेबल टेक्नोलॉजी की शुरुआत कर दी।

AI में सबसे आगे

अनिरुद्ध के जिस कारोबार पर कोई भी भरोसा करने को तैयार नहीं था, वही कारोबार आज देश और दुनिया में खूब चल रहा है। सेलेबल टेक्नोलॉजी एक प्रीमियर सॉफ्टवेयर कंपनी है। ये कंपनी डिजिटल ट्रांसफोर्मेशन और एंटरप्राइज रीइन्वेसंन में काम करती है। कंपनी अलग-अलग क्षेत्र की कंपनियों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सॉल्यूशन देती है। कंपनी AI मशीन लर्निंग, डाटा साइंस, इंडस्ट्री डाटा मॉडल्स, इंफ्रास्ट्रक्चर एंड डाटाबेस माइग्रेशन, SAP एक्सटेंडेड समेत ऐप मॉडर्नाइजेशन जैसे कई काम में सेवा प्रदान करती है। आज कंपनी फॉर्च्यून 500 कंपनियों को अपनी सेवा देती है। फिलहाल देश के अधिकांश बैंकों और प्रमुख औद्योगिक घरानों को कंपनी अपनी सेवाएं दे रही है। महज 3 कर्मचारियों के साथ शुरुआत करने वाली सेलेबल टेक्नोलॉजी में आज 3000 से ज्यादा कर्मचारी हैं। आज भले ही सेलेबल टेक्नोलॉजी काफी कामयाब नजर आ रही हो लेकिन इस कंपनी का सफर चुनौतियों के साथ ही शुरू हुआ है। अनिरुद्ध बताते हैं कि उन्होंने जयपुर में ऑफिस तो खोल लिया था लेकिन न ऑफिस चलाने के लिए और न ही दूसरे खर्च उठाने के लिए उनके पास पैसा नहीं बचा था। स्थिति ऐसी थी कि उनके पास AI और मशीन लर्निंग के लिए जरूरी अत्याधुनिक संसाधन भी मौजूद नहीं थे। अनिरुद्ध के पिता एक सामान्य बैंक कर्मचारी थे। ऐसे में अनिरुद्ध उनसे भी मदद की उम्मीद नहीं लगा सकते थे। अनिरुद्ध कहते हैं कि आज मैं जिस मुकाम पर भी खड़ा हूं, मैंने वो कई बार फेल होकर हासिल किया है। अनिरुद्ध लगातार कोशिश करते रहे। अपने काम को धार देने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। इसी मेहनत और ईमानदारी का ये नतीजा हुआ कि सेलेबल को धीरे-धीरे डाटा एनालिसिस और IT कंसल्टिंग का काम मिलने लगा। इससे कंपनी की माली हालत सुधरने लगी। कंपनी बेहतर स्थिति में आने लगी तो अनिरुद्ध ने टीम को भी बड़ा करने की योजना पर काम शुरू कर दिया। उन्होंने इंजीनियरिंग कॉलेजों के युवाओं को सेलेबल टेक्नोलॉजी के साथ जोड़ना शुरू किया। आज कंपनी के जयपुर स्थित तीन कार्यालयों में इंजीनियरिंग कॉलेज से ही हायर किए गए 2000 लोग शामिल हैं। सेलेबल इन युवाओं को एक साल तक AI में ट्रेनिंग देती है। अनिरुद्ध का काम देश के साथ ही विदेशों में भी खूब चल रहा है लेकिन जयपुर में उन्होंने रोजगार में स्थानीय लोगों को काफी तवज्जो दी है। जयपुर स्थित उनके कार्यालयों में 80% से ज्यादा लोग राजस्थान से ही हैं। क्योंकि भारत में अभी AI और मशीन लर्निंग का कारोबार इतना फला-फूला नहीं था। इस वजह से क्लाइंट खोजना भी एक चुनौती रही। अनिरुद्ध बताते हैं कि क्लाइंट की कमी से जूझने के लिए उन्होंने गोल्फ क्लब ज्वाइन कर लिया। ऐसा करने के पीछे उद्देश्य यह था कि रईस ग्राहक खोजे जाएं। हालांकि गोल्फ क्लब में भी AI के कस्टमर नहीं मिले। अनिरुद्ध बताते हैं कि भले ही गोल्फ क्लब से उन्हें क्लाइंट न मिले हों लेकिन यहां उन्होंने कई दोस्त बनाए। इसके साथ ही उन्हें यहां गोल्फ से ऐसा प्यार हुआ कि अब जब भी उनके पास खाली समय होता है तो वह गोल्फ खेलना पसंद करते हैं। क्लाइंट ढूंढने के ये प्रयास भी 2018 में सफल हो गए। 2018 में दिग्गज कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने अनिरुद्ध की कंपनी सेलेबल टेक्नोलॉजी से संपर्क साधा और माइक्रोसॉफ्ट ने सेलेबल टेक्नोलॉजी को डाटा एनालिसिस पार्टनर बनाया।

“ अनिरुद्ध के जिस कारोबार पर कोई भी भरोसा करने को तैयार नहीं था, वही कारोबार आज देश और दुनिया में खूब चल रहा है। सेलेबल टेक्नोलॉजी एक प्रीमियर सॉफ्टवेयर कंपनी है।

वो एक पल था और आज एक पल है, जब सेलेबल टेक्नोलॉजी देश और दुनिया की कई कंपनियों को अपनी सेवाएं दे रही है। आज अनिरुद्ध फोर्ब्स टेक्नोलॉजी काउंसिल में भी शामिल हैं।

नए प्रयोग में जुटी सेलेबल टेक्नोलॉजी

अनिरुद्ध काला अपनी कंपनी सेलेबल टेक्नोलॉजी के जरिए कई नए प्रयोग में जुटे हुए हैं। वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए लोगों के लिए सुविधाजनक टेक्नोलॉजी तैयार कर रहे हैं। कंपनी ने कई ऐसे सॉफ्टवेयर या AI सॉल्यूशन तैयार किए हैं जिनके जरिए हमें बहुत कम समय में अच्छी और सटीक सूचनाएं मिलने लगी हैं। अनिरुद्ध एक ऐसी टेक्नोलॉजी पर भी काम कर रहे हैं जिसमें अगर आप किसी फिल्म या वीडियो में इस्तेमाल की गई किसी वस्तु का नाम लिखेंगे तो वही दृश्य हमारे सामने होगा। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए किसी फिल्म में एक एक्टर ने हाथ में बैडमिंटन पकड़ा हुआ है। ऐसे में अगर आप उसी सीन की खोज कर रहे हैं और आपने सर्च इंजन पर उस एक्टर का नाम और बैडमिंटन लिखा तो सर्च इंजन आपको सीधे उसी सीन पर लेकर जाएगा। सेलेबल टेक्नोलॉजी बैंकिंग और बैंक से जुड़े कामों को आसान बनाने के लिए भी काम कर रही है। देश के प्रमुख बैंकों में जितने भी इनोवेशन हो रहे हैं, उसमें कहीं-न-कहीं अनिरुद्ध और उनकी टीम का हाथ है। ये टीम आपको कई बेहतर सुविधाएं दे रही हैं। अनिरुद्ध बताते हैं कि उन्होंने बैंकों के लिए एक ऐसा AI सॉल्यूशन तैयार किया है जिसके जरिए आप अपने क्रेडिट और डेबिट कार्ड के खोने की जानकारी सीधे बैंक के ऐप पर दे सकते हैं और तुंरत आपका कार्ड ब्लॉक हो जाएगा। अनिरुद्ध बताते हैं कि इसके लिए आपको ऐप के चैटबॉक्स पर सिर्फ एक मैसेज या वॉइस मैसेज भेजना होता है और तुरंत आपका काम हो जाता है। अनिरुद्ध बताते हैं कि ये सब काम कॉन्टेक्ट सेंटर ऑटोमेशन के जरिए संभव हो रहा है। आज अधिकतर बैंक इस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके अलावा कंपनी लगातार ऑडियो-वीडियो कॉन्टेंट पर भी तेजी से काम कर रही है। इसमें भी AI का बेहतर इस्तेमाल करने पर जोर दिया जा रहा है।

भविष्य की योजनाएं

अनिरुद्ध कहते हैं कि आने वाला वक्त AI का होगा। वह कहते हैं कि मौजूदा समय में जहां आपको किसी जगह या लोगों का वीडियो बनाना है तो आपको उस जगह पर जाना पड़ता है लेकिन अब धीरे-धीरे स्थितियां बदल रही हैं। कुछ सालों के भीतर आपको उस जगह या उस आदमी की जरूरत नहीं होगी। आप सिर्फ AI की मदद से ही इन सब चीजों को अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर ही जनरेट कर पाएंगे। वह कहते हैं कि उनकी कंपनी AI से लोगों के लिए नई-नई सुविधाएं पेश करने पर लगातार काम कर रही है। वहीं, दूसरी तरफ बात करें कंपनी की तो सेलेबल भी तेजी से अपने कारोबार को विस्तार दे रही है। कंपनी ने अगले तीन साल में 10 हजार कर्मचारियों को जोड़ने का लक्ष्य रखा है। अनिरुद्ध कहते हैं कि डाटा और AI एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हमें आगे की सोचकर रिसर्च और इनोवेशन करना होता है। हम इस पर तेजी से काम कर रहे हैं और काम करने के लिए मैनपॉवर की जरूरत होती है। अनिरुद्ध बताते हैं कि उन्होंने 2025 तक के लिए लोगों की भर्ती कर दी है। वह कहते हैं कि अगर आप प्रतिस्पर्धियों का मुकाबला करना चाहते हैं और दूसरों के मुकाबले आगे रहना चाहते हैं तो आपको उनसे दो कदम आगे हर तरह से रहना होगा।

भारत में AI बाजार

भले ही पिछले कुछ सालों में AI का इस्तेमाल भारत में काफी सीमित था लेकिन अब ऐसा नहीं है। धीरे-धीरे ही सही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस देश में विस्तार पा रही है। खुद सरकार AI पावर्ड सॉल्यूशंस को बढ़ावा देने में जुटी हुई है। भारत सरकार देश में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) का इस्तेमाल कर ही रही है। अब इसी DPI को भारत सरकार AI के क्षेत्र में लेकर जाना चाहती है। केंद्रीय सूचना प्रसारण राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर ने एक इवेंट में कहा कि हम अपना खुद का AI इकोसिस्टम तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि सरकार इसके लिए लगातार प्रयासरत है। सिर्फ यही नहीं, नीति आयोग की एक रिपोर्ट के मुताबिक AI भारत की इकोनॉमी में 2035 तक 1 खरब डॉलर जोड़ने की क्षमता रखता है। नीति आयोग की रिपोर्ट से पता चलता है कि देश में ट्रैवल और टूरिज्म, हेल्थकेयर, प्रोफेशनल सर्विसेज, कंस्ट्रक्शन समेत कई क्षेत्रों में AI का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है और आने वाले अगले कुछ सालों में ये काफी ज्यादा दिखने भी लगेगा। अभी भारत में AI रिसर्च ज्यादातर IIT, IIIT और IISc तक ही सीमित हैं। नीति आयोग ने देश में AI इकोसिस्टम तैयार करने के लिए एरावत (AIRAWAT) क्लाउड प्लेटफॉर्म की बात कही है। इसके जरिए बिग डाटा एनालिटिक्स किया जाएगा। जहां दुनिया भर में AI मार्केट 2021 में 59.67 अरब डॉलर था। इस मार्केट के 39.4% CAGR की दर से बढ़ने की उम्मीद है और 2028 तक इसके 42237 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। वहीं भारत की बात करें तो यहां पर AI मार्केट 2020 में जहां 3.1 अरब डॉलर का था। इसके 20.2% CAGR की दर से बढ़ने की उम्मीद है। 2025 तक इसके 7.8 अरब डॉलर होने की संभावना जताई जा रही हैं। यानी कि आने वाले वक्त में AI का भविष्य काफी उज्वल है। और ये तय है कि अनिरुद्ध काला अपनी कंपनी सेलेबल टेक्नोलॉजी के जरिए इस तेजी से बढ़ते मार्केट में लीग में सबसे आगे खड़े रहेंगे।

अनिरुद्ध काला जी एक ऐसे दूरदर्शी और ऊर्जावान युवा हैं जो समय से आगे सोचते हैं। आप विलक्षण प्रतिभा के धनी और अत्यन्त साहसी व्यक्ति हैं। आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतया सफल हों, यशस्वी हों और युवाओं के मार्गदर्शक बनकर समाज को दिशा देते रहें। आप जैसे युवा प्रतिभा पर देश को गर्व है। आप उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं दीर्घायु को प्राप्त हों, अभ्युदय वात्सल्यम् पत्रिका परिवार परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता है। आपके सुखद एवं यशस्वी जीवन हेतु अनंत मंगलकामनाएं। ◆◆◆

डॉ.(कैप्टन)सिकंदर रिजवी
राष्ट्रवादी चिंतक,विचारक एवं वक्ता

डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त करते कैप्टन सिकंदर रिजवी

डॉ.(कैप्टन) सिकंदर रिजवी

प्रखर राष्ट्रवादी व्यक्तित्व

-हर्षिता शुक्ला

डॉ. (कैप्टन) रिजवी का रिश्ता वैसे तो गिलगित-बाल्टिस्तान के स्कर्दू जिले से है। उनकी जड़ें स्कर्दू के गोल गांव से जुड़ी हुई हैं लेकिन वह जितने एक बाल्टिस्तानी हैं, उससे ज्यादा वह एक हिंदुस्तानी हैं। जी हां. हम बात कर रहे हैं डॉ. (कैप्टन) सिकंदर रिजवी की। कैप्टन सिकंदर रिजवी न सिर्फ एक इस्लामिक स्कॉलर हैं बल्कि वह हिंदू राष्ट्र शक्ति नाम की संस्था के संस्थापक और ट्रस्टी भी हैं। कैप्टन रिजवी जिस बेबाकी से इस्लाम के मुद्दों पर बोलते हैं, उसी बेबाकी से वह हिंदू धर्म के मुद्दों पर भी अपनी बात रखते हैं। पेशे से पायलट रहे रिजवी अब एक स्कॉलर होने के साथ ही राजनीतिक विश्लेषक भी हैं। वह एक कारोबारी हैं जो विरगो एयर के संस्थापक हैं। वह राजनीति के मुद्दों पर काफी तेज-तर्रार तरीके से अपनी बात रखते हैं। वह राम और रहीम, दोनों मुद्दों पर ही बोलने की विशेषज्ञता रखते हैं। यही वजह है कि जब भी राम और रहीम के मुद्दों पर चर्चा या बहस होती है तो उसमें कैप्टन रिजवी को सबसे पहले बुलाया जाता है। वह कई मंचों पर हिंदू और हिंदू समाज के मुद्दों पर अपनी बात रखते हैं। वह इस्लाम के मुद्दों पर कुरान के मुताबिक बात करते हैं और कई गलतफहमियों को दूर करते हैं। डॉ. सिकंदर रिजवी ने संयुक्त राज्य अमेरिका भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण मिशन (यूएसजीएस) के साथ 16 साल तक अपनी सेवाएं दी हैं। इस दौरान वह मध्य-पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में तैनात रहे। आज डॉ. रिजवी विरगो एयर के साथ ही सार्वजनिक पटल पर भी काफी ज्यादा एक्टिव हैं। यानी कि वो एक सफल कारोबारी तो हैं ही साथ में वह सार्वजनिक जीवन में भी काफी ज्यादा दखल रखते हैं।

> अयोध्या में आज बन रहे राम मंदिर के लिए कई लोगों ने सालों तक संघर्ष किया। इन हजारों लोगों में कैप्टन सिकंदर रिजवी का भी नाम है। आप ने स्वर्गीय रामचंदर दास परमहंस जी के मार्गदर्शन में राम मंदिर आंदोलन में भाग लिया। आपने 2004 में अयोध्या में राम मंदिर पर कॉन्क्लेव का आयोजन भी किया। हिंदुओं की बेहतरी और उनके मुद्दों पर काम करने के लिए ही (कैप्टन) रिजवी ने हिंदू राष्ट्र शक्ति संस्था की शुरुआत की।

कैप्टन रिजवी का बचपन

जैसे हमने शुरुआत में बताया कि रिजवी का मूल गिलगित-बाल्टिस्तान के स्कर्दू से है। उनका परिवार बंटवारे से पहले यहीं रहता था। बंटवारे के दौरान उनका परिवार भारत आ गया। रिजवी दंपति ने लखनऊ में अपना आशियाना बसाया और यहीं सिकंदर रिजवी का जन्म हुआ। सिकंदर रिजवी एक पढ़े-लिखे परिवार में पले-बढ़े। उनके पिता का निधन उनके बचपन में ही हो गया था। उनकी मां एक डॉक्टर रहीं जिन्होंने बहुत ही अच्छे संस्कार बाल सिकंदर के मन में भरे। सिकंदर रिजवी कितने काबिल हैं, वो इसी से पता चलता है कि उन्होंने अपनी सिविल एविएशन की ट्रेनिंग स्कॉलरशिप हासिल कर पूरी की थी। 1977 के दौरान इन्होंने लखनऊ में ट्रेनिंग पूरी की। कैप्टन सिकंदर रिजवी ने अपने रिश्तेदारों के साथ स्कर्दू में 4 महीने भी बिताए। इस दौरान उन्होंने न सिर्फ अपने अतीत को याद किया बल्कि यहां की स्थिति को भी काफी अच्छे तरीके से समझा। कैप्टन रिजवी कहते हैं कि वह इस जगह पर बार-बार जाना चाहते हैं लेकिन ऐसा संभव हो नहीं पाता है। अपनी मातृभूमि से प्रेम ही वजह है कि आज वह गिलगित-बाल्टिस्तान को भारत में विलय करने के लिए लड़ रहे हैं। कैप्टन रिजवी बताते हैं कि पाकिस्तान के नेतृत्व में इस क्षेत्र की स्थिति काफी खराब है। सार्वजनिक पटल पर एक्टिव रहने वाले कैप्टन रिजवी कई हुनर के मालिक हैं। कैप्टन सिकंदर रिजवी ने 1998 में हेलीकाप्टरों और जेटों का संचालन करने वाली विमानन कंपनी विरगो एयर लिमिटेड की स्थापना की। उन्होंने फ्रांस के पेरिस में स्थित सोरबोन विश्वविद्यालय से मानविकी एवं समाज कल्याण विषय में PhD की उपाधि भी हासिल की है। कैप्टन सिकंदर रिजवी ने 1992 में भारत परिक्रमा-1992 में भाग लिया। यह आयोजन उस दौरान विवेकानंद केंद्र (RSS) द्वारा आयोजित किया गया था। कैप्टन सिकंदर रिज़वी का संघ से नाता यहीं से शुरू हुआ है। 1992 से लगातार उन्होंने संघ के अलग-अलग कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। डॉ. रिजवी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से तो प्रभावित हैं ही इसके साथ ही वह स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी की विचारधारा के भी पक्के अनुयायी हैं। वह देश के उन मुसलमानों में शामिल हैं जो देश की एकता के लिए काम करने पर फोकस करते हैं। वह हमेशा तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर बताते हैं कि दुनिया के दूसरे देशों के मुकाबले भारत में मुसलमान काफी ज्यादा बेहतर स्थिति में हैं। अयोध्या में आज बन रहे राम मंदिर के लिए कई लोगों ने सालों तक संघर्ष किया। इन हजारों लोगों में कैप्टन सिकंदर रिजवी का भी नाम है। इन्होंने स्वर्गीय रामचंदर दास **परमहंस** जी के मार्गदर्शन में राम मंदिर आंदोलन में भाग लिया। इन्होंने 2004 में अयोध्या में राम मंदिर पर कॉन्क्लेव का आयोजन भी किया। हिंदुओं की बेहतरी और उनके मुद्दों पर काम करने के लिए ही आपने हिंदू राष्ट्र शक्ति संस्था की शुरुआत की। वह इस संस्था के जरिए हिंदुओं के मुद्दों को प्रमुखता से दुनिया के सामने रखते हैं। कैप्टन रिजवी ने भारत का विभाजन, जम्मू और कश्मीर, पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (POK), गिलगित-बाल्टिस्तान, अनुच्छेद 370 और 35A जैसे कई अहम मुद्दों का अध्ययन किया है। उन्होंने अरब-

“सार्वजनिक पटल पर एक्टिव रहने वाले कैप्टन रिजवी कई हुनर के मालिक हैं। कैप्टन सिकंदर रिजवी ने 1998 में हेलीकाप्टरों और जेटों का संचालन करने वाली विमानन कंपनी विरगो एयर लिमिटेड की स्थापना की। उन्होंने फ्रांस के पेरिस में स्थित सोरबोन विश्वविद्यालय से मानविकी एवं समाज कल्याण विषय में PhD की उपाधि भी हासिल की है।”

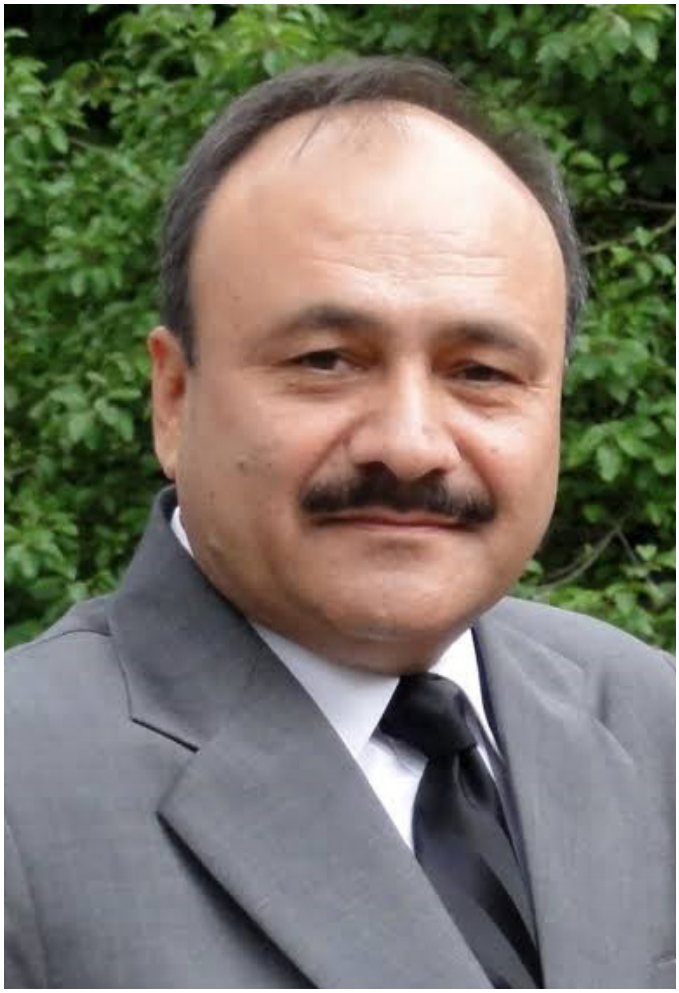

Dr.(cap.) Sikandar Rizvi
Chairman & Managing Director
Virgo Air Limited.

इजरायल संघर्ष और मतभेद, अमेरिका-रूस शीत युद्ध, रूस-यूक्रेन युद्ध, मध्य-पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और इस्लामी जिहाद और आतंकवाद समेत कई अहम मुद्दों पर गहराई से अध्ययन किया है। यही वजह है कि उन्हें कई न्यूज चैनलों में एक अंतरराष्ट्रीय एक्सपर्ट के तौर पर भी शामिल किया जाता है।

राजनीति में एंट्री

कैप्टन सिकंदर रिजवी की राजनीति में एंट्री बहुत पहले हो चुकी है। उनकी इस एंट्री के सूत्रधार बने बहुजन समाज पार्टी (BSP) के संस्थापक कांशीराम। दरअसल 1989 में कांशीराम अपनी आंखों का इलाज कराने के लिए लंदन गए हुए थे। इस लंदन प्रवास के दौरान वह अपने एक मित्र के घर ठहरे हुए थे। यहीं उनकी मुलाकात 32 साल के पायलट कैप्टन सिकंदर रिजवी से हुई। इस दौरान कैप्टन रिजवी मलागसेय की प्राइवेट एयरलाइन के लिए पायलट थे। यहां पर कैप्टन रिजवी को कांशीराम से बातचीत करने का मौका मिला। इस दौरान उन्होंने कांशीराम के विजन और मिशन को समझा। कैप्टन रिजवी कांशीराम से इतने प्रभावित हुए कि एक साल बाद उन्होंने पायलट की अपनी नौकरी छोड़ दी। वह कांशीराम की तरफ से शुरू किए गए दलित आंदोलन में शामिल हो गए। कैप्टन रिजवी की प्रतिबद्धता और सेवा भाव को देखकर कांशीराम भी काफी ज्यादा प्रभावित हुए। इतने ज्यादा कि उन्होंने रिजवी को 1991 के यूपी विधानसभा चुनाव में उतार दिया। उन्हें लखनऊ सेंट्रल से टिकट दिया गया। इस दौरान भले ही कैप्टन रिजवी चुनाव हार गए लेकिन उन्होंने कांशीराम की आंखों में अपनी जगह बना ली थी। यही वजह थी कि जब 1993 में BSP ने सरकार बनाई तो कैप्टन रिजवी को तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती का ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी (OSD) नियुक्त किया गया। कहा जाता है कि गेस्ट हाउस कांड में मायावती को सुरक्षित जगह पहुंचाने में कैप्टन रिजवी का बड़ा हाथ था। कैप्टन रिजवी एविएशन सेक्टर के बाद राजनीति के क्षेत्र में भी काफी बेहतर साबित हो रहे थे। हालांकि BSP के संस्थापक कांशीराम की जैसे-जैसे तबीयत बिगड़ने लगी, वैसे-वैसे पार्टी की पूरी कमान मायावती के हाथों में आने लगी। मायावती के साथ कैप्टन रिजवी की कुछ खास जमी नहीं और उन्होंने BSP को अलविदा कह दिया। अपने इस फेज को लेकर कैप्टन रिजवी ने कहा था कि कांशीराम एक मिशन थे और मायावती सिर्फ एक नेता हैं। उन्होंने तब कहा था कि ये वह BSP नहीं है जिसकी कल्पना कांशीराम ने की थी। वह कांशीराम के साथ बिताए वक्त को याद करते हुए बताते हैं कि उस जमाने में हेलिकॉप्टर नहीं हुआ करते थे। ऐसे में वह मारुति

800 कार से सफर किया करते थे। रिजवी बताते हैं कि चुनाव के दौरान 9 हजार किलोमीटर तक का सफर हमने तय किया है। BSP छोड़ने के बाद कैप्टन रिजवी ने अपने करियर पर ध्यान दिया। फिर करीब 16 साल बाद 2012 में कैप्टन रिजवी ने समाजवादी पार्टी (SP) का दामन थामा था। मौजूदा वक्त में बताया जाता है कि वह बीजेपी के काफी करीब हैं। कैप्टन रिजवी सिर्फ राजनीतिक गलियारों की सैर नहीं करते बल्कि उन्हें इस मुद्दे की काफी ज्यादा जानकारी है। यही वजह है कि राष्ट्रीय चैनलों पर चल रहे सबसे अहम मुद्दों पर उनकी राय जरूर ली जाती है।

हवाई सफर का कारोबार

कैप्टन सिकंदर रिजवी ने अपने करियर का काफी अच्छा-खासा वक्त हवाई सफर करते हुए बिताया है। वह पहले एक पायलट रहे और बाद में उन्होंने इसी को अपना कारोबार भी बनाया। सार्वजनिक जीवन की गतिविधियों के बीच कैप्टन रिजवी अपनी कंपनी विरगो एयर का कारोबार भी देखते हैं। कैप्टन रिजवी विरगो एयर के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। वह अपने 34 साल के अनुभव के आधार पर इस कंपनी को नई दिशा और दशा देने का काम कर रहे हैं। विरगो एयर एक प्राइवेट एयरलाइन कंपनी है जो एयर चार्टर, एविएशन सर्विस देती है। कंपनी एयरलाइन कंपनियों को अधिग्रहण और वित्तीय आधार पर भी गाइडेंस प्रदान करती है। इसके साथ ही कंपनी एविएशन कंसल्टेंसी भी मुहैया कराती है। एयर चार्टर सर्विस के तहत कंपनी एरियल सर्वे, फोटोग्राफी, फिल्म शूटिंग के लिए हेलिकॉप्टर या विमान मुहैया कराती है। इसके साथ ही कंपनी एयर एंबुलेंस, राजनीतिक रैलियों के लिए, पर्यटन समेत अन्य कामों के लिए अपनी सेवा मुहैया कराती है। इसके अलावा रिजवी आकाश गंगा ब्रांड के तहत 50 सीटों वाला रीजनल जेट भी चलाते हैं। आकाशगंगा एयरलाइन की शुरुआत 2013 में की गई थी। इस एयरलाइन की हवाई सेवाएं उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के बीच दी जाती रही हैं। मार्च, 2013 में DGCA से ऑपरेशन शुरू करने की मंजूरी मिली और मई, 2013 से इसने उड़ान भरनी शुरू की।

डॉ. (कैप्टन) सिकंदर रिजवी न सिर्फ आसमान पर राज करते हैं बल्कि अपने बेहतर इंटेलिजेंस के बूते वह समाज को भी बदलने में जुटे हुए हैं। वह इस्लाम के मुद्दों से लेकर हिंदुओं की बात रखने तक, वह सब काम कर रहे हैं जो एक सच्चा देशभक्त करता है। कैप्टन रिजवी गिलगित बाल्टिस्तान के मुद्दों के साथ ही हिंदुस्तान की बात को मुखरता से रखना पसंद करते हैं और वह लगातार इस काम में जुटे हुए हैं। डा. रिजवी एक विद्वान वक्ता एवं स्पष्टवादी व्यक्ति हैं। आप देशभक्त हैं, एक बेहतरीन इन्सान हैं।

◆◆◆

DESAI HARMONY

WADALA (W)

MAHA RERA NO.P51900009455

Follow Us On

Swimming Pool

Ample Car Parking

Podium Garden

Health & Fitness Center

Luxurious 2, 3 & 4 BHK Apartments

Centrally located in the heart of the city (Wadala, West), Desai Harmony makes your life convenient as the best of the metropolis surrounds you. It's a two minutes drive from all the major infrastructure facilities and the most happening destinations of Mumbai. **Stay closer to life.**

Call :+91 9209206206 / +91 75061 18929 / +91 98198 51644

E : sales@sparkdevelopers.in | sms Spark Wadala to 56677

Our Projects At : Worli | Andheri | Ghatkopar | Vile-Parle

Site Address : Desai Harmony, G.D Ambekar Marg, Opp. Hanuman Industrial Estate, Near Dadar Workshop, Wadala, Mumbai - 400 031

Corp. Office : 102, Saroj Apartment, 1st Floor, N.P. Marg, Opp. Matunga Gujarati Club, King's Circle, Matunga, Mumbai – 400 019

SPARK DEVELOPERS
creating world for you

www.sparkdevelopers.in

Disclaimer: This advertisement is merely conceptual and is not a legal document. It cannot be treated as a part of final purchase agreement. All dimensions are approximate and subject to construction variances. The developer reserves sole rights to amend architectural specifications during development stages.

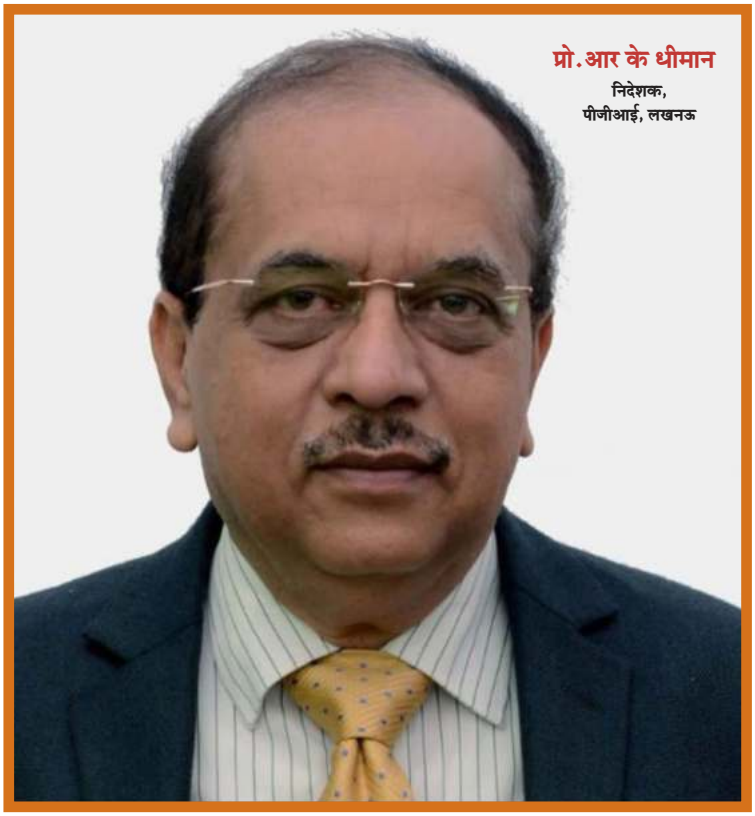

> आपकी शुरुआत तो एक साधारण परिवार से हुई लेकिन आपने अपने हौसले और मेहनत के बूते मेडिकल फील्ड में बड़ा मुकाम हासिल किया है। सबसे बड़ी बात यह है कि आज जिस मेडिकल इंस्टीट्यूट के आप निदेशक हैं, कभी आपने इसी संस्थान से अपनी मेडिकल की पढ़ाई की है।

प्रो. आर के धीमान

साधारण परिवेश, असाधारण प्रतिभा

- विकाश जोशी

कोई भी सपना छोटा नहीं होता और कोई भी आसमान आपके हौसलों से बड़ा नहीं होता। ये लाइन फिट बैठती है सहारनुपर के उस लड़के पर जिसने अपने मोहल्ले के प्राइमरी स्कूल से पढ़ाई की। खुद को तैयार किया और आज वह देश के प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थान संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएशन इंस्टीट्यूट (SGPGI) का निदेशक है। हम बात कर रहे हैं प्रोफेसर राधाकृष्ण धीमान की। जिनकी शुरुआत तो एक साधारण परिवार से हुई लेकिन उन्होंने अपने हौसले और मेहनत के बूते मेडिकल फील्ड में बड़ा मुकाम हासिल किया है। सबसे बड़ी बात यह है कि आज जिस मेडिकल इंस्टीट्यूट के वह निदेशक हैं, कभी उन्होंने इसी संस्थान से अपनी मेडिकल की पढ़ाई की है। प्रोफेसर आर के धीमान ने वैसे तो कई मेडिकल अभियान चलाए हैं लेकिन देश में हेपेटाइटिस सी को कंट्रोल करने का उन्हें विशेष श्रेय दिया जाता है। पूरे देश में इस गंभीर बीमारी के खिलाफ अभियान चलाने में डॉ. आरके धीमान का काफी बड़ा योगदान रहा है। कैलिफोर्निया के स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय ने 2021 में दुनिया के शीर्ष वैज्ञानिकों की एक लिस्ट जारी की थी। इस लिस्ट में शामिल शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की सूची में आर के धीमान का नाम भी शामिल था। प्रोफेसर धीमान की तरफ से चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए कार्य की खातिर उन्हें ये सम्मान दिया गया। प्रोफेसर धीमान के अलावा देश के 13 विशेषज्ञों को भी अंतरराष्ट्रीय स्तरीय वैज्ञानिकों की सूची में शामिल किया गया है।

शुरुआती जीवन

प्रोफेसर राधाकृष्ण धीमान का जन्म सहारनपुर के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। प्रोफेसर धीमान ने शुरुआती पढ़ाई सहारनपुर के ही स्थानीय स्कूल से पूरी की। इसके बाद उन्होंने यहीं के गुरु नानक इंटर कॉलेज से आगे की पढ़ाई की। प्रोफेसर धीमान की मेडिकल फील्ड में पहले से ही काफी ज्यादा रुचि थी। अपनी इस रुचि को अपना करियर बनाने के लिए वह लखनऊ चले गए। लखनऊ के किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज से उन्होंने

1978-1988 के बीच MBBS और MD की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने SGPGI से गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी में DM स्पेशल ट्रेनिंग की डिग्री हासिल की। उन्होंने ये डिग्री 1989-91 के बीच हासिल की। मेडिकल फील्ड में धीमान की पढ़ाई का सिलसिला आगे बढ़ता ही गया। 1993 में धीमान ने पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, चंडीगढ़ (PGIMER, चंडीगढ़) को ज्वाइन किया। यहां उन्होंने एक प्रोफेसर के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की। बाद में वह यहां पर हीपैटोलॉजी विभाग के हेड भी बने। हालांकि मेडिकल फील्ड में खुद को बेहतर बनाने की दिशा में वह लगातार लगे रहे। 1998 में उन्होंने नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंस से MNAMS की डिग्री ली। सामान्य शब्दों में कहें तो यहां उन्होंने मेडिकल साइंस की पढ़ाई की। इसके अलावा उन्होंने 2001 में USA के अमेरिकन कॉलेज ऑफ गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी से FACG की डिग्री ली। इसके बाद 2010 में FAMS, 2015 में FRCP और 2015 में ही वह अमेरिकन एसोसिएशन फॉर स्टडी ऑफ द लिवर के फेलो के तौर पर जुड़े। यहां वह हीपैटोलॉजी के फेलो के तौर पर रहे।

मेडिकल फील्ड में करियर

प्रोफेसर धीमान ने अपने मेडिकल करियर की शुरुआत सीनियर फेलो के तौर पर की। इस दौरान उन्होंने कई स्वतंत्र प्रोजेक्ट्स पर काम किया। 1989 से 1992 के दौरान आपने गैस्ट्रोएसोफेजिल रिफल्क्स डिजीज (GERD) पर काम किया। आम शब्दों में समझें तो GERD पेट की एक बीमारी है। इस दौरान देश में पहली pH और मैनोमेट्री लैब स्थापित करने का श्रेय भी प्रोफेसर धीमान को जाता है। 1993 में आपने PGIMER, चंडीगढ़ में एसिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर ज्वाइन किया। यहां आपने हीपैटोलॉजी डिपार्टमेंट से ही अपनी शुरुआत की। 1998 में आप इसी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हुए। फिर 2003 में एडिशनल प्रोफेसर, 2008 में हीपैटोलॉजी विभाग के प्रोफेसर बने। इस पद पर आप 2008 से 2017 तक बने रहे। बाद में आप PGIMER में प्रोफेसर और प्रमुख के तौर पर नियुक्त किए गए। 2020 में प्रोफेसर धीमान को SGPGI के निदेशक के तौर पर नियुक्त किया गया।

SGPGI में रिसर्च पर फोकस

प्रोफेसर आर के धीमान ने SGPGI ज्वाइन करने के बाद कई बदलाव यहां पर किए हैं। 2021 में उनकी लीडरशिप में यहां पर लिवर ट्रांसप्लांस के लिए डॉक्टरों की एक टीम गठित की गई। इससे पहले यहां पर लिवर ट्रांसप्लांट करने के लिए बाहर की टीम पर निर्भर रहना पड़ता था लेकिन अब यहां लिवर ट्रांसप्लांट के लिए डॉक्टरों की एक टीम गठित की गई है जिसको खुद प्रोफेसर धीमान हेड करते हैं। इसके साथ ही बेहतर मेडिकल सुविधा प्रदान करने के लिए SGPGI में तीन नए विभाग भी बनाए गए।

इसमें हेड एंड नेक सर्जरी, पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलॉजी एंड इंफेक्सियस डिजीज और वैक्सीन रिसर्च डिपार्टमेंट भी शुरू किया गया। प्रोफेसर धीमान ने चंडीगढ़ की तरह ही यहां पर भी ऑर्गन डोनेशन के मोर्चे पर काफी काम किया है। इसके साथ ही आपने हाल ही में रिसर्च को बढ़ावा देने के लिए 3 नए मेडल की शुरुआत करने की घोषणा की है। प्रोफेसर धीमान ने इस संबंध में बताया कि जिस फैकल्टी के पास सबसे ज्यादा रिसर्च पेपर और पेटेंट्स होंगे, उन्हें सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो विभाग सबसे ज्यादा अनुदान हासिल कर पाएगा, उसे भी सम्मानित किया जाएगा। इस नई पहल के तहत इंस्टीट्यूट रेडियो डायग्नोसिस डिपार्टमेंट के छात्रों के लिए सभ्यसाची सरकार गोल्ड मेडल शुरू करने की तैयारी है।

हेपेटाइटिस सी कंट्रोल करने में अहम योगदान

प्रोफेसर आर के धीमान को देश से हेपेटाइटिस सी का प्रकोप कम करने के लिए भी जाना जाता है। दरअसल पंजाब में हेपेटाइटिस सी काफी तेजी से फैल रहा था। 18 जून, 2016 को आपने पंजाब सरकार के साथ मिलकर प्रदेश के सभी फिजीशियन को हेपेटाइटिस सी का इलाज करने के लिए ट्रेंड किया। इसमें 22 जिला अस्पताल और तीन मेडिकल कॉलेज को शामिल किया। ट्रेनिंग का ही असर था कि पूरे पंजाब में तीन साल के दौरान 80 हजार से ज्यादा हेपेटाइटिस सी से पीड़ित मरीजों का इलाज किया गया। प्रोग्राम इतना हिट रहा कि इसकी WHO ने भी काफी ज्यादा सराहना की थी। पंजाब में प्रोफेसर धीमान की लीडरशिप में सफल हुए इस कार्यक्रम को बाद में देश में भी लागू किया गया। 28 जुलाई 2018 को तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. जगत प्रकाश नड्डा ने नेशनल वायरल हेपेटाइटिस कंट्रोल प्रोग्राम पूरे देश के लिए लॉन्च किया था। इसके साथ ही वह देश में अंगदान की मुहिम को

> “2008 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने प्रोफेसर आर के धीमान को डॉ. बीसी रॉय नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया।”

मजबूत करने के लिए भी काम करते हैं। आपने चंडीगढ़ में अंगदान की मुहिम को काफी जोरों-शोरों से चलाया था। यहां पर आपने सरकार को प्रस्ताव दिया था कि ड्राइविंग लाइसेंस में ऑर्गन डोनेशन की शपथ भी रखी जाए। उनके इस प्रस्ताव को चंडीगढ़ प्रशासन ने मानते हुए ड्राइविंग लाइसेंस में आर्गन डोनेशन की शपथ लेने को अंकित कराया। आपकी देखरेख में देश में पहली बार PGI ने न्यू सुपर स्पेशिएल्टी कोर्स (डीएम) शुरू किया और लीवर ट्रांसप्लांटेशन प्रोग्राम को लॉन्च किया। धीमान जब SGPGI पहुंचे तो उन्होंने यहां भी अंगदान की इस मुहिम को जोर-शोर से चलाया। यहां भी आपने पहल शुरू की है और ड्राइविंग लाइसेंस के लिए फॉर्म में अंगदान की शर्त भी जोड़ने का सुझाव दिया। इस सुझाव पर स्थानीय प्रशासन ने इस व्यवस्था को लागू किया है।

प्राप्त सम्मान

प्रोफेसर आर के धीमान ने अपने मेडिकल करियर में कई उत्कृष्ट कार्य किए हैं। इन कार्यों की बदौलत ही उन्हें कई जगहों पर सम्मानित किया गया। प्रोफेसर आर के धीमान को सबसे पहला सम्मान 1994 में यंग क्लिनिशियन अवॉर्ड मिला। उन्हें ये सम्मान गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी वर्ल्ड कांग्रेस ने दिया। 1995 में उन्हें उस साल के बेस्ट पेपर पेश करने के लिए सर्ले बेस्ट पेपर अवॉर्ड से नवाजा गया। इसके बाद 1996 में जापान गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी सोसायटी ने यंग इन्वेस्टिगेटर्स अवॉर्ड मिला। अपने करियर के दौरान हर साल उन्हें किसी न किसी अवॉर्ड और सम्मान से नवाजा गया। 2007 में ICMR ने उन्हें अमृत मोदी यूनिचेम सम्मान से नवाजा। 2009 में बसंती देवी अमीर चंद सम्मान मिला। 2008 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने प्रोफेसर आर के धीमान को डॉ. बीसी रॉय नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया। इन सम्मानों के इतर प्रोफेसर धीमान वायरल हेपेटाइटिस नेशनल एक्शन प्लान के चेयरमैन रहे हैं। पंजाब सरकार के इंजेक्शन सेफ्टी प्रोजेक्ट के भी वह चेयरमैन रहे। वह ISHEN के एडवाइजरी बोर्ड के मेंबर भी रहे हैं। ISHEN हेपेटिक एंसेफ्लोपैथी और नाइट्रोजन मेटाबॉलिज्म की अंतरराष्ट्रीय सोसायटी है। वह जर्नल ऑफ क्लिनिकल एंड एक्सपेरिमेंटल हेपैटोलॉजी (JCEH) के मुख्य एडिटर भी रहे हैं। प्रोफेसर धीमान को उनके बेबाक अंदाज के लिए भी जाना जाता है। उन्होंने कोरोना समेत कई अहम मुद्दों पर अपनी बेबाक राय रखी है। प्रोफेसर आर के धीमान का नाम देश के प्रतिष्ठित डॉक्टरों और मेडिकल फील्ड के एक्सपर्ट्स के तौर पर लिया जाता है। प्रोफेसर धीमान SGPGI के निदेशक के पद पर रहते हुए लगातार जरूरतमंदों की सेवा में विश्वास रखते हैं। वह आम लोगों को अफोर्डेबल ट्रीटमेंट देने की कोशिश में जुटे हुए हैं और चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर करने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं।

◆◆◆

a2zonlineservices.com

PROJECT MANAGEMENT & CONSTRUCTION MANAGEMENT

ARCHITECTURAL DESIGN SERVICES | INTERIOR DESIGN

A2Z ONLINE SERVICES PRIVATE LIMITED

Tech Park One, Tower 'E', 191 Yerwada, Pune-411 006 (INDIA)

सतपाल अंतिल

पुलिस अधीक्षक, प्रतापगढ़ उ.प्र.

पीड़ित केंद्रित पुलिसिंग का चेहरा

- हरिओम शुक्ल

मजबूत इरादा और ईमानदार छवि रखने वाले सतपाल अंतिल पीड़ित केंद्रित पुलिसिंग पर विश्वास रखते हैं। यही वजह है कि प्रतापगढ़ के लोग अपनी समस्याओं को लेकर बेझिझक उन तक पहुंच जाते हैं। सतपाल अंतिल के काम को लेकर किस तरह की दीवानगी है, वो इसी से पता चलता है कि अंतिल से मिलने उनका एक फैन सीधे बिहार से उनके कार्यालय तक पहुंच गया। इतना ही नहीं, इस फैन ने अपनी टी-शर्ट पर अंतिल का फोटो भी प्रिंट करवाया था।

16 दिसंबर का दिन था। साल 2022। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ के पुलिस अधीक्षक (SP) सतपाल अंतिल शहर के लालगंज से गुजर रहे थे कि उनकी नजर सड़क पर घायल अवस्था में पड़े एक युवक पर पड़ी। उन्होंने देखा कि बाइक सवार का एक्सिडेंट हुआ है और उसे तुरंत उपचार की जरूरत है। सतपाल अंतिल ने तुरंत उस युवक को अपने स्कॉट से मेडिकल अस्पताल पहुंचाया। प्रतापगढ़ के SP सतपाल अंतिल की दरियादिली के कई किस्सों में से ये एक किस्सा है। अंतिल क्षेत्र वासियों का जितना दिल खोलकर स्वागत करते हैं, उतना ही वह अपराधियों को लेकर सख्त भी हैं। 2022 में पुलिस अधीक्षक का पदभार ग्रहण करने के दौरान ही उन्होंने अपने इरादे साफ कर दिए थे। उन्होंने अपराधियों को खुली चेतावनी दी थी कि जो अपराधी खाकी का मनोबल गिराने की कोशिश भी करेंगे, उनकी खैर नहीं होगी। उन्होंने साफ किया कि गोली का जवाब गोली से दिया जाएगा। अंतिल ने कहा कि उनकी प्राथमिकता जिले में भयमुक्त माहौल बनाना है। सिर्फ अपराधियों को ही नहीं बल्कि उन्होंने उन पुलिस वालों को भी अल्टीमेटम दे दिया जो भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। उन्होंने भ्रष्ट पुलिसवालों को चेतावनी देते हुए कहा कि अपराधों में लिप्त पुलिसकर्मी भी खुद को महफूज न समझें और वे भी जेल जाने के लिए तैयार रहें। मजबूत इरादा और ईमानदार छवि रखने वाले सतपाल अंतिल पीड़ित केंद्रित पुलिसिंग पर विश्वास रखते हैं। यही वजह है कि प्रतापगढ़ के लोग अपनी समस्याओं को लेकर बेझिझक उन तक पहुंच जाते हैं। सतपाल अंतिल के काम को लेकर किस तरह की दीवानगी है, वो इसी से पता चलता है कि अंतिल से मिलने उनका एक फैन सीधे बिहार से उनके कार्यालय तक पहुंच गया। इतना ही नहीं, इस फैन ने अपनी टी-शर्ट पर अंतिल का फोटो भी प्रिंट करवाया था। जब उससे पूछा गया कि वह इतनी दूर से क्यों अंतिल से मिलने आया है? तो इस पर उसने जवाब दिया कि मैं ट्विटर पर इनके काम देखता रहता हूं और इनके काम से ही प्रभावित होकर मैं इनसे मिलने आया हूं।

बदली प्रतापगढ़ की सूरत

प्रतापगढ़ में SP की तैनाती को लेकर काफी फेमस था कि यहां कोई भी कप्तान 6 महीने से ज्यादा नहीं टिकता लेकिन सतपाल अंतिल ने इस अवधारणा को बदल कर रख दिया है। वह पिछले करीब तीन साल से लगातार प्रतापगढ़ की कानून-व्यवस्था को संभाल रहे हैं। उनकी लीडरशिप में न सिर्फ जिले में अपराध कम हुए हैं बल्कि लोगों का पुलिस पर भरोसा भी बढ़ा है। हालांकि, जब सतपाल अंतिल ने प्रतापगढ़ का कार्यभार संभाला था तो उनके लिए भी इस जिले में शुरुआती वक्त काफी चुनौतीपूर्ण रहा है। एक इंटरव्यू में अंतिल ने बताया कि प्रतापगढ़ में उनके शुरुआती तीन महीने काफी चुनौतीपूर्ण रहे। उन्होंने बताया कि इस दौरान वह व्यक्तिगत तौर पर भी काफी बुरे वक्त से गुजर

वीरता पदक से सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

रहे थे। हालांकि, गुजरते वक्त के साथ न सिर्फ उन्होंने खुद को एक बेहतर अधिकारी के तौर पर साबित किया है बल्कि प्रतापगढ़ में भी काफी बेहतर सुधार किए हैं। अंतिल ने जनचौपाल के जरिए आम लोगों के बीच पुलिस को लेकर व्याप्त डर को खत्म करने का काम किया है। उन्होंने बताया कि हमने जनचौपाल कर आम जनता और पुलिस के बीच बनी खाई को कम करने का काम किया है। अंतिल बताते हैं कि लोग पुलिस के डर को लेकर उनसे बात करते हैं। लोग बताते हैं कि पहले पुलिस आती थी तो सिर्फ दबिश देने आती थी लेकिन अब पुलिस उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए पहुंच रही है। वह कहते हैं कि लोगों की पुलिस को लेकर सोच बदली है। पुलिस अब लोगों के बीच पहुंचकर उनकी समस्याएं सुन रही है। जानने की कोशिश कर रही है कि उन्हें किस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। और साथ ही में उनकी परेशानियों का समाधान भी निकाला जा रहा है। अंतिल कहते हैं कि हम प्रतापगढ़ में अच्छी नीयत के साथ काम कर रहे हैं। वह कहते हैं कि जब आप अच्छी नीयत के साथ काम करते हैं तो आम लोग भी आपके साथ खड़े होते हैं।

अंतिल का करियर ग्राफ

प्रतापगढ़ में पुलिसिंग का चेहरा बदलने वाले सतपाल अंतिल मूल रूप से हरियाणा के सोनीपत के रहने वाले हैं। 9 अगस्त, 1986 को सोनीपत में उनका जन्म हुआ। सतपाल का बचपन हरियाणा में ही बीता। उन्होंने यहीं से अपनी पढ़ाई पूरी की। पंजाब यूनिवर्सिटी से उन्होंने डिग्री हासिल की। सतपाल अंतिल ने सिविल सर्विसेज की परीक्षा के लिए 2014 में

अटेंप्ट किया था और अपनी मेहनत और हार्ड वर्क की बदौलत 2015 में उनका सेलेक्शन हो गया। सेलेक्शन के बाद ट्रेनिंग पूरी की। वह दिसंबर, 2015 से दिसंबर 2016 के बीच हैदराबाद में IPS प्रोबेशनर के तौर पर तैनात रहे। इसके बाद वह आजमगढ़ आए। यहां दिसंबर 2016 में उन्होंने ASP (अंडर ट्रेनिंग) ज्वाइन किया। यहां उन्होंने दिसंबर 2017 तक अपनी सेवाएं दी। इसके बाद उन्हें पहली बड़ी जिम्मेदारी मिली मेरठ में। मेरठ में दिसंबर 2017 में वह ASP नियुक्त किए गए। मेरठ में अंतिल ने सैकड़ों मोबाइल चोरी की वारदातों को सुलझाने और मोबाइल बरामद करने के लिए जाना जाता है। यहां उन्होंने छोटे से छोटे अपराधों को बड़ी सूझबूझ के साथ सुलझाया था। अंतिल ने मेरठ में भी करीब एक साल बिताया और फरवरी 2019 तक वह यहां पर रहे। इसके बाद उन्हें सिटी मुजफ्फरनगर का SP नियुक्त किया गया। फरवरी, 2019 में वह इस पद पर काबिज हुए। यहां तैनाती के दौरान उन्होंने ढाई लाख रुपए के इनामी बदमाश रोहित सांडू और उसके गिरोह के सफाये के लिए याद किया जाता है। इस एनकाउंटर के लिए उन्हें राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया था। बता दें कि कुख्यात बदमाश रोहित सांडू और उसका गैंग मुजफ्फरनगर के लिए ही नहीं बल्कि पूरी यूपी पुलिस के लिए बड़ी चुनौती बन गया था। इस केस को सुलझाने के लिए अंतिल ने इंटेलिजेंस पुलिसिंग का बखूबी इस्तेमाल किया और इस कुख्यात बदमाश और उसकी दहशत का सफाया कर दिया। 2019 के दौरान जब CAA के विरोध में प्रदर्शन हो रहे थे तो इस दौरान भी वह मोर्चे पर डटे रहे। इस विरोध प्रदर्शन के दौरान हुए पथराव में वह घायल भी हुए थे। यही नहीं, जब अयोध्या को लेकर फैसला आया तो वह दिन-रात शांति बनाए रखने और किसी भी तरह की अप्रिय घटना न हो, ये सुनिश्चित करने के लिए तैनात रहे। वह नवंबर, 2020 तक सिटी मुजफ्फरनगर के SP बने रहे। मुजफ्फरनगर के बाद वह फतेहपुर पहुंचे। दिसंबर 2020 में उन्होंने यहां SSP का कार्यभार संभाला। यहां उनकी पारी 8 महीने की ही रही। इस छोटी सी पारी में उन्होंने काफी प्रभावी काम किया। उन्होंने फतेहपुर में पोस्टिंग होते ही सबसे पहले लोगों और पुलिस के बीच संबंध बेहतर करने के लिए काम शुरू कर दिया। कार्यभार संभालने के पहले ही दिन SP अंतिल अपने पूरे लाव-लश्कर के साथ सड़कों पर उतर आए। इस दौरान उन्होंने जनता के साथ संवाद बनाने का

काम किया। लोगों ने भी उनका दिल खोलकर स्वागत किया। जब सतपाल अंतिल फतेहपुर पहुंचे तो वह कोरोना का टाइम था। इस दौरान वह जब भी किसी व्यक्ति को बिना मास्क के पकड़ते तो वह उसके साथ सख्ती से पेश आने की बजाय एक दोस्ताना लहजे में उसे समझाते। वह लोगों को समझाते कि क्यों उन्हें अपनी और दूसरों की सुरक्षा के खातिर मास्क पहने रहना चाहिए। हालांकि अंत में वह यह ताकीद देना नहीं भूलते थे कि अगर दोबारा बिना मास्क के पकड़े गए तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

पीड़ित केंद्रित पुलिसिंग को बढ़ावा

फतेहपुर के बाद जुलाई 2021 में अंतिल ने प्रतापगढ़ में कार्यभार संभाला। जब वह प्रतापगढ़ में आए तो उन्होंने यहां की छवि बदलकर रख दी। अक्सर अपराधगढ़ कहकर संबोधित किए जाने वाले प्रतापगढ़ में उन्होंने पीड़ित केंद्रित पुलिसिंग को बढ़ावा दिया। उन्होंने लोगों के बीच पुलिस के प्रति भरोसा और अपराधियों के मन में डर भरने का काम किया। प्रतापगढ़ में व्याप्त नशे से जुड़े अपराध हों चाहे छोटी-बड़ी चोरी के मामले, उन्होंने हर मुद्दे पर प्रभावी तरीके से काम किया है। आज प्रतापगढ़ में अपराध काफी हद तक नियंत्रण में आ गया है। जहां 6 महीने भी कोई IPS नहीं रुकता था, वहां सतपाल अंतिल पिछले लगभग तीन साल से आम लोगों की सेवा में जुटे हुए हैं। 2021 में सतपाल अंतिल को वीरता के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया।

खुद से ईमानदारी रखें

उत्तर प्रदेश काडर के IPS सतपाल अंतिल मेहनत करने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था कि उनका पारिवारिक बैकग्राउंड काफी अच्छा रहा। कभी कोई तकलीफ नहीं हुई लेकिन अगर आपको किसी क्षेत्र में कामयाबी पानी है तो उसमें आपकी मेहनत ही काम आएगी। सतपाल अंतिल ने कहा कि आप जो ठान लें वो कर सकते हैं। फिर चाहे वो सिविल सर्विस की परीक्षा हो या फिर कोई और काम। वह कहते हैं कि अपने काम पर आपको गर्व होना चाहिए और उस काम को पूरा करने के लिए आपको ईमानदारी से काम करना चाहिए। वह कहते हैं कि हर काम के लिए आपको मेहनत और हार्ड वर्क करना होता है। अगर आप मेहनत करते हैं तो आपको वो जरूर मिलेगा जो आपने चाहा था। सतपाल अंतिल कहते हैं कि पीड़ा कुछ वक्त के लिए ही होती है लेकिन शौर्य आपका परमानेंट होता है। सतपाल अंतिल युवाओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि आपको जीवन में आने वाली बाधाओं से चिंतित नहीं होना चाहिए। वह कहते हैं कि जिंदगी में सफलता और असफलता का खेल चलता रहता है लेकिन आपको इनसे डरने की जरूरत नहीं बल्कि अपना बेस्ट देने की जरूरत है। वह कहते हैं कि आप किसी भी चीज में सफल होंगे या असफल, ये कई फैक्टर्स पर निर्भर करता है। लेकिन अगर आप अपना बेस्ट देंगे तो आपको संतुष्टि जरूर होगी कि आपने वो सब किया जो आप कर सकते थे। वह कहते हैं आपका प्रयास ईमानदार होना चाहिए। अगर आप लगातार परिश्रम करते रहेंगे तो आपको सफलता जरूर मिलेगी। ◆◆◆

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

MULTI ASSET ALLOCATION FUNDS

DIVERSIFICATION
TAX EFFICIENCY
CONVENIENCE

SAB CHAHIYE?

DIVERSIFICATION
Helps in portfolio stability

TAX EFFICIENCY
Provides equity / non-equity taxation benefits depending on the asset allocation

CONVENIENCE
Invest in Equity, Fixed Income & Gold through one fund

AN INVESTOR EDUCATION AND AWARENESS INITIATIVE BY SBI MUTUAL FUND.

Investors should deal only with registered Mutual Funds, details of which can be verified on the SEBI website (https://www.sebi.gov.in) under 'Intermediaries/Market Infrastructure Institutions'. Please refer to the website of Mutual Funds for the process of completing one-time KYC (Know Your Customer) including the process for change in address, phone number, bank details, etc. Investors may lodge complaints on https://www.scores.gov.in against registered intermediaries if they are unsatisfied with their responses. SCORES facilitates you to lodge your complaint online with SEBI and subsequently view its status.

Visit: www.sbimf.com | Follow us: | CONTACT YOUR MFD/RIA

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

समाज के भावी कर्णधार, समाज सेवी, युवा उद्योगपति

डॉ. अजय एल. दुबे

“

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ का मिशन हमें आत्मिक रूप से प्रभावित किया और उसी के परिणाम स्वरूप हम इस मिशन को संगठित प्रयास से आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित हुए।

- डॉ. दुबे

”

- हरिओम शुक्ला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से प्रेरित एवं प्रभावित होकर बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ की मुहिम को जमीनी स्तर पर चलाने हेतु भगीरथ प्रयास करने वाले मुंबई , मीरा रोड निवासी,युवा समाजसेवी एवं रियल एस्टेट का व्यवसाय करने वाले डॉ. अजय एल. दुबे आज अपनी संस्था बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ के माध्यम से देश के अधिसंख्य राज्यों में संगठित एवं परिणामपरक प्रयास कर समाज की वास्तविक सेवा कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर दुबे का यह समाजसेवी मिशन निरंतर द्रुत गति से आगे बढ़ता जा रहा है और समाज के प्रबुद्ध जनों एवं संवेदनशील लोगों के सहयोग एवं समर्थन से वह इस मिशन को और अधिक प्रभावी रूप से आगे बढ़ाने की योजना पर कार्य कर रहे हैं। दुबे कहते हैं कि माननीय प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी का बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ का मिशन हमें आत्मिक रूप से प्रभावित किया और उसी के परिणाम स्वरूप हम इस मिशन को संगठित प्रयास से आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित हुए।

यहां उल्लेखनीय है कि डॉ.अजय एल दुबे इस पंजीकृत संस्था बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष हैं। इसके अतिरिक्त आप मीरा भायंदर प्रॉपर्टी डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष तथा केशव एस्टेट कंसल्टेंट के भी अध्यक्ष हैं।

पिछले दिनों **अभ्युदय वात्सल्यम** के विशेष संवाददाता **हरिओम शुक्ला** से डॉ. अजय एल दुबे ने समाज,राजनीति एवं व्यवसाय से संबंधित अनेक मुद्दों पर विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के अंश –

■ आप बड़े स्तर पर व्यवसाय करते हैं। आप के मन में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की मुहिम चलाने का खयाल कैसे आया ?

देखिए, हम सब देश के जिम्मेदार नागरिक हैं।और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में देश,समाज के प्रति हम सब के कुछ कर्तव्य होते हैं,कुछ जिम्मेदारियां होती हैं। देश के यशस्वी माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र के व्यापक हित में अनेक उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण कार्य किए हैं ,सब की चर्चा करना तो एक छोटे से साक्षात्कार में संभव नहीं है।किंतु, हम आपके मूल प्रश्न का उत्तर देना चाहेंगे। माननीय प्रधानमंत्री जी के बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के अभियान ने हमें आत्मिक रूप से प्रभावित किया और गंभीरता से विचार करने के बाद हमें कर्तव्य बोध हुआ कि देश के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमें भी इस मुहिम को आगे बढ़ाने में यथा संभव सहयोग देना चाहिए। बस, इसी विचार से हमें इस मिशन को संगठित रूप से आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली, जिसके परिणाम स्वरूप हमने सर्व प्रथम बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ चैरिटेबल ट्रस्ट का गठन किया,उसे पंजीकृत कराया और आज एक मिशन की भावना से इस मुहिम को यथाशक्ति आगे बढ़ाने के कार्य में लगे हुए हैं।

वास्तव में समाज में व्याप्त भ्रूण हत्या जैसे पापपूर्ण एवं निंदनीय कुरीति से हम पहले से ही मर्माहत और दु:खी थे, हम उत्तर भारत के जिस समाज से आते हैं वहां अशिक्षा,अज्ञानता और अदूरदर्शिता के कारण लड़कियों को बोझ सा समझा जाता था। बच्चियों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति समाज उतना गंभीर और जागरूक नहीं था जितना की होना चाहिए या जितना लड़कों को पढ़ाने, लिखाने के प्रति गंभीर था। समाज में जन सामान्य की इस धारणा और सोच को बदलने की आवश्यकता के प्रति हम बहुत दिनों से कुछ करने की सोच रहे

थे। हमें लगता था कि व्यापक स्तर पर जनजागरण के माध्यम से इस दिशा में कुछ आवश्यक और अपेक्षित कार्य किया जा सकता है। मन में एक चिंता और कुछ करने की इच्छा तो थी ही। लेकिन,माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान ने इसमें बहुत बड़ी भूमिका यह निभाई कि हममें पूरी तन्मयता आ गई,हममें एक नई ऊर्जा का वैचारिक संचार हुआ और एक बहुत बड़ी प्रेरणा और संबल मिला और आज देश, समाज के किए छोटा सा प्रयास करके अपने नागरिक कर्तव्य को निभाने की कोशिश कर रहे हैं।

■ अभी किस स्तर पर आपका बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का अभियान चल रहा है ?

हमने स्थानीय स्तर पर इस अभियान की शुरुआत किया। विभिन्न अवसरों पर कार्यक्रमों एवं आयोजनों के माध्यम से।किंतु,भगवान की कृपा और देश के संवेदनशील और विचारवान लोगों की सहभागिता और सहयोग से यह मिशन देश के अनेक राज्यों तक पहुंच गया है।

आज देश के अधिसंख्य राज्यों में संस्था के माध्यम से हम जागरूकता अभियान चलाने की योजना पर कार्य कर रहे हैं। निकट भविष्य में व्यापक रूप से इस जागरूकता अभियान को देश स्तर पर चलाया जाएगा।

■ प्रधानमंत्री जी के अन्य कौन से कार्य हैं,जिनसे आप प्रभावित हैं ?

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश के हित में अनेक बड़े कार्य किए हैं, जिससे इस देश की दशा और दिशा बदली है। आज 5०० वर्षों के लंबे संघर्ष के बाद अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बन रहा है,प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है। यह बहुत बड़ा कार्य हो रहा है जो देश की धार्मिक भावना, आस्था, विश्वास, मान्यता और हमारी सनातन धार्मिक संस्कृति से जुड़ा हुआ एक महान कार्य है।

देश के प्रधानमंत्री के रूप में इस महान कार्य में मोदी जी की सक्रियता और रुचि ने इसे मूर्त रूप देने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। केवल हिंदुओं के लिए ही मोदी जी की सरकार ने कार्य नहीं किए हैं। देश की मुस्लिम महिलाओं के व्यापक हित में कार्य करके मोदी जी ने सिद्ध कर दिया कि सरकार की नीतियां सब के लिए समान हैं।तीन तलक का मुद्दा बहुत बड़ा था,जिससे मुस्लिम महिलाओं को कितनी राहत और खुशी मिली है,वहीं समझ सकती हैं। जम्मू-कश्मीर से धारा 37० और 35 ए को हटाकर मोदी जी ने एक और राष्ट्र हितैषी कार्य कर अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से राष्ट्र भक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण दिया है,प्रमाण दिया। कितना गिनाएं अनेक कार्य देश हित में इस सरकार में हुए हैं जिससे सरकार की सबका साथ,सबका विकास और सबका विश्वास की नीति चरितार्थ होती है।

■ प्रधानमंत्री मोदी जी से कहां तक प्रभावित हैं ?

हम आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी से बहुत प्रभावित हूं। मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश की करोड़ों गरीब जनता के बैंक अकाउंट खुले,यह बहुत बड़ी बात है।ऐसे लोगों के जीरो बैलेंस पर अकाउंट खुले जिन्होंने पहले कभी बैंक का मुंह भी नहीं देखा था। तब शायद लोगों को लग रहा था कि यह सब

ऐसे ही हो रहा है लेकिन थोड़े समय बाद ही लोगों को समझ में तब आया जब सरकार की ओर से मदद की राशि सीधे लोगों के अकाउंट में भेजी गई। किसी को कमीशन खाने का मौका नहीं मिला।ऐसे ही बहुत सारे कार्य मोदी जी की सरकार ने किए। सबसे बड़ी बात यह हुई कि विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा और वजन बढ़ा, जिसका सर्वाधिक श्रेय नेतृत्व को ही दिया जाता है ।मोदी जी में विलक्षण नेतृत्व क्षमता है। मेरे दिल में आदरणीय मोदी जी के लिए बहुत सम्मान है और उसका सबसे बड़ा कारण है उनकी सच्ची राष्ट्रभक्ति। आप ही बताएं। एक दिन भी अवकाश लिए बिना जो व्यक्ति अनवरत देश के लिए एक दिन में 2० घंटे कार्य करता हो,वह कोई असाधारण व्यक्तित्व ही हो सकता है। मोदी जी अदभुत दृढ़ इच्छा शक्ति और पारदर्शी नीति एवं स्पष्ट विचार रखने वाले विलक्षण विभूति हैं। मोदी जी के हाथों में देश अनवरत प्रगति कर रहा है और पूर्णतया सुरक्षित है।

■ आप तो समाजसेवी से अधिक राजनीतिक लगते हैं।क्या निकट भविष्य में राजनीति में जाने का इरादा है ?

हम रियल एस्टेट का व्यवसाय करते हैं। हमारे मीरा भायंदर प्रॉपर्टी डीलर्स एसोसिएशन में लगभग साढ़े तीन हजार से अधिक मेंबर हैं। सब अपने तरीके से मेहनत के साथ अपना कार्य करते हैं। हम कई वर्षों से एसोसिएशन के निर्विरोध अध्यक्ष होते आ रहे हैं।प्रत्येक पद का चुनाव होता है लेकिन अध्यक्ष पद का चुनाव नहीं होता। व्यवसाय करने के मामले में माहिर मारवाड़ी और गुजराती भाइयों की अधिकता रही है इस प्रॉपर्टी डीलर के काम में। और भी सारे लोग इस काम से जुड़कर

अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं। महिलाएं भी अब इस व्यवसाय में अच्छी संख्या में आगे आ रही हैं जो एक अच्छा संकेत है। हमारा स्वयं का रियल एस्टेट का व्यवसाय है,उसमें भी व्यस्तता रहती है।समाज में रहते हैं तो समाजसेवा तो करना ही पड़ेगा और यथा शक्ति हम लोगों की सेवा और सहयोग करने हेतु तत्पर रहते हैं।

रही बात राजनीति में जाने की तो आज हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि यदि संयोग बना और ईश्वर की इच्छा रही तो राजनीति के माध्यम से भी जनसेवा करने का ईमानदार प्रयास करेंगे।

■ वर्तमान में किस राजनीतिक दल को पसंद करते हैं?

नि:संदेह,भारतीय जनता पार्टी।

■ आप एक युवा हैं और समाजसेवी हैं। अत: युवाओं के लिए, उनके बेहतर भविष्य के लिए क्या कहना चाहेंगे?

युवाओं से हम एक ही बात कहना चाहेंगे कि आप व्यसन और नशे से दूर रहकर अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए अपना कार्य करें,जहां भी और जिस भी क्षेत्र में हैं,ईमानदारी और मेहनत से कार्य करें जिससे आपके साथ-साथ समाज का भी हित हो और एक अच्छे और जिम्मेदार नागरिक के रूप में आप समाज में स्वयं को स्थापित कर सकें।

■ आपको श्री लंका में डॉक्टरेट की उपाधि मिली?

जी हां! 29 अक्टूबर,2018 को श्री लंका में यूनिवर्सिटी ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप एंड टेक्नोलॉजी द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु हमें डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई।श्री लंका सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों की उपस्थिति में यह उपाधि प्रदान की गई थी।

तत्कालीन गवर्नर,महाराष्ट्र आदरणीय श्री भगत सिंह कोश्यारी जी तथा तत्कालीन मुख्यमंत्री आदरणीय श्री देवेन्द्र फडणवीस द्वारा इस उपाधि के मिलने पर उनकी बधाई और शुभकामनाएं प्राप्त हुई थी। देखिए,सम्मान,उपाधि या अवॉर्ड में हमारे लिए समाज के प्रति कुछ विशेष करने की प्रेरणा और संदेश का भाव होता है और वह यह होता है कि हम अपनी गरिमा में रहते हुए समाज की बेहतरी के लिए कार्य करें।हमसे समाज की अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं। और इस प्रकार समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने तथा उन पर खरा उतरने का ईमानदार प्रयास हमें करना होता है और करना चाहिए। तब ही सम्मान,उपाधि अथवा अवार्ड की सार्थकता है। अन्यथा, कोई विशेष अर्थ नहीं होता।

■ बेटी पढ़ाओ - बेटी बचाओ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा विशेष रूप से क्या कार्य किए जाते हैं?

देखिए! यह हमारे लिए एक मिशन है और इसी भावना के साथ इस सामाजिक मुहिम से जुड़े हुए लोग कार्य करते हैं। हम सामाजिक स्तर पर कार्यक्रमों एवं आयोजनों के माध्यम से बेटियों को उच्च एवं स्तरीय शिक्षा प्रदान करवाने हेतु लोगों से अपील करते हैं। अभी तो काफी सकारात्मक बदलाव आ रहा है समाज में।

मेधावी छात्राओं को जिन्होंने परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए होते हैं उनको सम्मानित करने के साथ ही उनके लिए आवश्यक कोई भी सहयोग करने हेतु हम संस्था के स्तर पर प्रयासरत रहते हैं। हम लोगों में चर्चा के माध्यम से इस अकाट्य सत्य की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं कि आज हमारी बेटियां देश ,दुनिया में अपनी शिक्षा और प्रतिभा के बल पर हर क्षेत्र में प्रगति कर रही हैं और अपनी कामयाबी का झंडा गाड़ रही हैं।लड़कियां किसी भी मामले में लड़कों से पीछे नहीं हैं।यह सब देखकर बहुत सुखद लगता है।

यहां उल्लेखनीय है कि डॉक्टर अजय एल दुबे मुंबई के प्रतिष्ठित उत्तर भारतीयों में एक सम्मानजनक और महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। दशकों पूर्व आपके दादा पंडित अंबिका प्रसाद दुबे रोजगार की तलाश में मुंबई आए। जमीनी स्तर पर काम किए,तबेले आदि में काम किए।उसके बाद आप रंगून चले गए और कालांतर में रंगून से मुंबई आकर एक भैंस खरीदी और उसी एक भैंस से कारोबार को आगे बढ़ाया।उनकी मेहनत और लगन से कुछ समय बाद ऐसी स्थिति बन गई कि 1000 भैंसों का एक बड़ा तबेला बन गया। उस समय इस कारोबार में दुबे परिवार की ऐसी स्थिति बन गई कि वे लोग ही मुंबई में दूध के भाव तय करते थे। अंधेरी में दुबे परिवार के बारे में कहा जाता था की आधी अंधेरी दुबे परिवार की है और बाकी आधी अंधेरी में सब रहते हैं।मूल रूप से उत्तर प्रदेश के भदोही जनपद से दुबे परिवार मुंबई आया और अपनी ईमानदारी मेहनत,कर्मठता और दूरदर्शिता के बल पर मुंबई से लेकर गांव तक समृद्धि का वातावरण निर्मित हो गया। डॉक्टर अजय एल दुबे के बड़े पिता श्री रमेश दुबे जी महाराष्ट्र सरकार में मंत्री हुए और उन्होंने दुबे परिवार के साथ,साथ उत्तर भारतीय समाज को भी सम्मानित किया। पारिवारिक विभाजन के आधार पर डॉ. अजय एल. दुबे का परिवार अंधेरी से मीरा रोड आ गया और विगत 30 वर्षों से रियल एस्टेट का कारोबार करते हुए समाजसेवा की अपनी पारिवारिक परम्परा को सम्मानजनक रूप से आगे बढ़ा रहा है। अजय दुबे इसी दुबे परिवार के चमकते सितारे हैं, जो राष्ट्रसेवा के अपने अभियान के अंतर्गत बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की मुहिम चलाकर पूरे देश में एक प्रेरक कार्य कर रहे हैं,समाज की वास्तविक सेवा कर रहे हैं।

डॉ. - अजय एल. दुबे मानवोचित गरिमानुरूप श्रेष्ठ आचरण करने वाले एक सच्चे समाजसेवी व्यक्तित्व हैं। लोगों की सेवा-सहायता में विश्वास रखने वाले डॉ. दुबे जैसे युवा व्यक्तित्व ही समाज और राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर समाज का वास्तविक हित कर सकते हैं। सरलता, विनम्रता विद्वता एवं सेवा भावना आपके व्यक्तित्व को विशिष्ट गरिमा प्रदान करती है। आप के सुखद एवं यशस्वी जीवन हेतु अभ्युदय वात्सल्यम् पत्रिका परिवार की ओर से असीम शुभकामनाएं।

◆◆◆

NSE

सोच कर
समझ कर
इन्वेस्ट कर

हमेशा सतर्क रहें
और गारंटीड रिटर्न्स के झूठे वादों का शिकार मत बनिए

सिक्योरिटीज मार्केट में रिटर्न्स, बाजार जोखिमों के अधीन हैं. **कोई भी इसकी गारंटी नहीं दे सकता.**

सिक्योरिटीज मार्केट में गरंटीशुदा प्रतिफलों का कोई भी वादा या संकेत कानून द्वारा निषिद्ध है

ऐसी स्कीमों में किया गया कोई भी निवेश एक्सचेंज से मुआवजे के लिए पात्र नहीं होता है.

ऐसी स्कीम की सुचना आप एक्सचेंज में रिपोर्ट कर सकते हैं
Feedbk_invg@nse.co.in या 1800 266 0050 कॉल करें.

अधिक जानकारी के लिए www.nseindia.com पर विजिट करे

“

भाजपा अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ रही है और उद्घाटन समारोह के लिए उसने बड़े पैमाने पर आउटरीच कार्यक्रम शुरू किया है। मतदाताओं को याद दिलाने की कोशिश की जाएगी कि भाजपा ने हिंदुओं से किए वादे पूरे किए हैं।

“

आम चुनावों में राम मंदिर ही सबसे बड़ा मुद्दा होगा

– संजय कुमार

प्रोफेसर व राजनीतिक टिप्पणीकार

इसमें कोई शक नहीं कि अयोध्या में राम मंदिर के लोकार्पण समारोह से भाजपा को चुनावी लाभ मिलेगा। मैं इसके दो कारण बतलाना चाहूंगा। पहला, पिछले सर्वेक्षणों के साक्ष्य बताते हैं कि भाजपा को धर्मप्राण हिंदुओं के वोट उन हिंदुओं की तुलना में अधिक मिलते हैं, जो धर्म को अधिक महत्व नहीं देते। राम मंदिर का उद्घाटन और उसके आसपास निर्मित उत्साह का माहौल धर्मप्राण हिंदुओं की भावनाओं को चरम पर ले जाने वाला है। दूसरा, जिस तरह से भाजपा और संघ परिवार ने 22 जनवरी के आयोजन से पहले और बाद की योजना बनाई है, उसके परिणामस्वरूप अंतत: यह 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए मतदाताओं तक पहुंचने का सबसे बड़ा कार्यक्रम बन जाएगा। सबसे पहले तो हिंदुओं की धार्मिक प्रतिबद्धता और उनके वोटिंग-पैटर्न के साक्ष्य देखें। लोकनीति-सीएसडीएस द्वारा समय-समय पर एकत्र किए गए तथ्य बताते हैं कि उन हिंदुओं द्वारा भाजपा को अधिक वोट देने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखलाई देती है, जो धार्मिक गतिविधियों में रत रहते हैं। सर्वेक्षण के निष्कर्षों से पता चलता है कि 2009 के लोकसभा चुनाव में नियमित रूप से मंदिर जाने वाले हिंदुओं में से 28% ने भाजपा को वोट दिया था, जो 2014 में बढ़कर 45% और 2019 में और बढ़कर 51% हो गया। इसके विपरीत- जो हिंदू यदा-कदा ही मंदिर जाते थे उनमें से 39% ने ही भाजपा को वोट दिया। इसी तरह नियमित पूजा-पाठ करने वाले हिंदुओं में से 49% ने 2019 के चुनावों में भाजपा को वोट दिया, जबकि कभी-कभार वालों में से 35% ने भाजपा को वोट दिया। 2014 में 41% पूजा-पाठी हिंदुओं के वोट भाजपा को मिले थे, जबकि कभी-कभार पूजा करने वालों में से 27% ने ही वोट दिया था।

दान-पुण्य, व्रत-उपवास, भजन जैसी कई अन्य धार्मिक गतिविधियां हैं, जिनमें हिंदू बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इनमें भागीदारी को ध्यान में रखते हुए ही हिंदुओं को अधिक व कम धार्मिक में विभाजित किया जाता है। जो हिंदू अधिक धार्मिक हैं, उनमें से 53% ने 2019 में भाजपा को वोट दिया था, जबकि केवल 10% के वोट कांग्रेस को मिले। इसके विपरीत उन हिंदुओं में से जो बहुत कम धार्मिक हैं- 37% ने भाजपा जबकि 18% ने कांग्रेस को वोट दिया। ये साक्ष्य हिंदुओं के बीच धार्मिकता की

बढ़ती प्रवृत्ति और भाजपा के लिए बढ़ते समर्थन के बीच एक मजबूत संबंध बताते हैं। 2009 से 2019 तक यह संबंध निरंतर मजबूत होता रहा है। अतीत में यह तब देखा गया था, जब राम मंदिर की चर्चा जीवंत थी, लेकिन भाजपा के लिए आज जैसी उत्साहपूर्ण नहीं थी। 2024 में न केवल राम मंदिर भाजपा के लिए सबसे बड़ा मुद्दा होगा, बल्कि पार्टी को इससे खासा चुनावी फायदा भी होगा, यह तय है। यह भी याद रखें कि भाजपा अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ रही है और उद्घाटन समारोह के उत्सव के लिए उसने बड़े पैमाने पर आउटरीच कार्यक्रम शुरू किया है। इससे भाजपा को 2024 के लिए समर्थन जुटाने में मदद ही मिलेगी। भाजपा ने इसके लिए एक पखवाड़े तक चलने वाले कार्यक्रमों की योजना बनाई है। 22 जनवरी को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन करेंगे, तब हर घर में शाम को पांच दीये– जिन्हें राम ज्योति कहा जा रहा है– जलाने का अनुरोध किया जा रहा है। भाजपा पूरे देश में दिवाली जैसा उत्सव मनाने की योजना बना रही है। राम मंदिर के उद्घाटन के बाद भी अगले दो महीनों के लिए कार्यक्रम तय किए गए हैं। तीर्थयात्रियों को अयोध्या ले जाने की इस 60 दिवसीय योजना के परिणामस्वरूप प्रतिदिन लगभग 50,000 लोगों का अयोध्या आगमन हो सकता है। यानी इस अवधि के अंत तक लगभग 30 लाख लोग राम मंदिर की यात्रा कर चुके होंगे। कार्यकर्ताओं से कहा गया है कि वे अयोध्या की यात्रा कैसे की जाए, इस बारे में रामभक्तों को जानकारी दें। वे बूथ स्तर पर हेल्प डेस्क स्थापित करेंगे और आपातकालीन स्थिति में भक्तों को अयोध्या में कार्यकर्ताओं से जोड़कर हरसम्भव सहायता करेंगे। यात्रा, आवास और अन्य सुविधाओं में मदद दी जाएगी। संघ के स्वयंसेवक भी इसमें मिलकर काम करेंगे। राम जन्मभूमि आंदोलन के बारे में एक पुस्तिका का वितरण भी किया जाएगा। मतदाताओं को यह याद दिलाने की कोशिश की जाएगी कि भाजपा ने हिंदुओं के प्रति जो प्रतिबद्धता जताई थी, वह उसे पूरा करने में सफल रही है। मोदी है तो मुमकिन है या मोदी की गारंटी का मतलब गारंटी की गारंटी के नारे चुनावों के दौरान जोर-शोर से गूंजते सुनाई देने वाले हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

◆◆◆

नया विचार हम मालदीव को कॉम्पीटिशन दे सकते हैं पर हमें लक्षद्वीप की संवेदनशीलता को भी समझना होगा

मालदीव को उसके ही गेम में हरा सकता है लक्षद्वीप

– चेतन भगत
अंग्रेजी के उपन्यासकार

पांच लाख। यह मालदीव की जनसंख्या है। यह उल्हासनगर या सिलीगुड़ी जैसे किसी छोटे भारतीय शहर की आबादी के आसपास है। लेकिन पिछले हफ्ते इस देश के मंत्रियों ने कुछ अजीब किया। उन्होंने बिना किसी उकसावे के 140 करोड़ की आबादी वाले पड़ोसी देश के प्रधानमंत्री को ट्रोल कर दिया। उन्होंने पीएम मोदी की हालिया लक्षद्वीप यात्रा की तस्वीरों वाली पोस्ट के जवाब में अपमानजनक टिप्पणियां कीं, जबकि मोदी ने मालदीव का नाम भी नहीं लिया था। शायद उन्हें यह नागवार गुजरा कि प्रधानमंत्री की पोस्ट में लक्षद्वीप की सुंदर तस्वीरें थीं, जिनमें साफ नीला पानी, आसमान और रेतीले किनारे दिखाई दे रहे थे। लक्षद्वीप वैसा ही एक ट्रॉपिकल-आइलैंड पैराडाइज दिखाई दे रहा था, जिसे लोग अवसर मालदीव से जोड़ते हैं। लेकिन यह तथ्य कि प्रधानमंत्री ने यहीं भारत में मालदीव जैसी ही एक खूबसूरत जगह का दौरा किया, इसने इन मंत्रियों के होश उड़ा दिए। उनके द्वारा जताए गए आक्रोश ने मोदी की लक्षद्वीप यात्रा को वायरल बना दिया, जिससे उसके बारे में नए सिरे से लोगों की रुचि पैदा हुई (यहां तक कि अब मैं भी वहां जाना चाहता हूं!) इसने कई भारतीयों को मालदीव के खिलाफ कर दिया। मालदीव के उन मंत्रियों के बारे में हिंदी की वह कहावत याद आती है– अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना ! मालदीव की सरकार ने त्वरित कार्रवाई करते हुए उन मंत्रियों को निलंबित कर दिया है और हमें भी कुछ लोगों के कारण मालदीव से अपने संबंध खराब नहीं करने चाहिए। लेकिन हम इतना जरूर कर सकते हैं कि उसको स्वस्थ प्रतिस्पर्धा दें। इंस्टाग्राम इंफ्लूएंसर्स ने मालदीव के बारे में रील-दर-रील बनाकर उसे पॉपुलर कर दिया है। एक टूरिस्ट डेस्टिनेशन के रूप में मालदीव की मांग और बढ़ी है। मैं भी एक बार मालदीव जा चुका हूं। मालदीव की इंस्टा रोल्स में शानदार बैकग्राउंड म्यूजिक होता है, लेकिन जब आप वास्तव में वहां पहुंचते हैं तो ऐसा कुछ नहीं होता। आधे या एक घंटे में आप नीले समुद्र के अभ्यस्त हो जाते जाते हैं हैं और उस जगह की प्राकृतिक सुंदरता की प्रशंसा करना समाप्त कर देते हैं। अमूमन धनाढ्य लोग दुनिया के शोरगुल से दूर जाने के लिए मालदीव में हर रात हजार डॉलर चुकाने को तैयार रहते हैं। अकसर यह एक फ्लेक्स होता है– दूरदराज की जगह पर पहुंचना, पहुंचना, जो बहुत महंगी हो और वहां से दुनिया को दिखाने के लिए पोस्ट करना !

लेकिन मालदीव को इस बात का एहसास नहीं है कि अमीर लोग बहुत जल्दी ऊब जाते हैं और इसी में भारत के लिए अवसर छिपा है। मेगा रिच लोगों को अपने लिए हमेशा कुछ अनूठा चाहिए होता है। अब अगर बिग बॉस सीजन 23 के प्रतिभागी भी मालदीव से रील्स पोस्ट कर रहे हों तो क्या वाकई वहां जाना एक फ्लेक्स रह जाता है? दूसरी ओर, लक्षद्वीप अभी भी अनदेखा है। भारत के बाहर के लोगों को तो यह भी नहीं पता कि लक्षद्वीप जैसी कोई जगह है।

भारत के लोग भी इसलिए जानते हैं क्योंकि स्कूल में भूगोल के पाठ में उन्हें इसके बारे में बताया गया था। अधिकतर भारतीय वहां नहीं गए हैं, जो कि अच्छा है, क्योंकि यह जगह छोटी और संवेदनशील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से, लक्षद्वीप मालदीव के आकार का दसवां हिस्सा होगा। उसके द्वीप, चट्टानें और रीफ इतने नाजुक हैं कि वहां जरूरत से ज्यादा कंस्ट्रक्शन इस स्थान को नष्ट कर सकता है। हमें उसे संरक्षित करना होगा। लक्षद्वीप कभी भी शिमला या मसूरी का मॉल रोड नहीं बन सकता और न ही बनना चाहिए। दरअसल, शिमला या मसूरी के मॉल रोड को भी वैसा नहीं बनना चाहिए था, जैसे वे बन गए हैं। हमें समझना होगा कि हाई-एंड टूरिज्म कैसे काम करता है और लक्षद्वीप की संवेदनशील प्रकृति क्या है। मालदीव ने अपने द्वीप समूह को उच्च स्तरीय पर्यटन वाला देश बनाया, लेकिन अब वहां जरूरत से ज्यादा कंस्ट्रक्शन को लेकर चिंताएं जताई जा रही हैं। हमें भी लक्षद्वीप की स्थानीय आबादी और संस्कृति को संरक्षित करने की आवश्यकता होगी और वहां की यात्रा करने के लिए विशेष परमिट होना चाहिए। क्या ये सब बेहद महंगा होगा? हां, लेकिन यह उस जगह की रक्षा भी करेगा। क्योंकि तब भारतीय अपने शहरों से झुंड में नहीं आ पाएंगे और वहां लंबे सप्ताहांत बिताने नहीं जा सकेंगे। लक्षद्वीप भारत के लिए ईश्वर का उपहार है। हमें उसका सम्मान, सुरक्षा और संरक्षण करना चाहिए। याद रखें टूरिज्म को वह लक्षद्वीप में हो या कहीं और मार्केटिंग पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। एक बेहतरीन एक्सपीरियंस मुहैया कराएं और लोग आएंगे। इसके लिए सनसेट पॉइंट आदि ही काफी नहीं हैं। बेहतरीन टूरिस्ट एक्सपीरियंस का अर्थ है यातायात, होटल, भोजन, वाईफाई, खरीदारी, कैफे आदि के भी उच्चस्तरीय प्रबंध।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

◆◆◆

स्वामी विवेकानंद की आत्मकथा

मेरा बचपन

इस काल के और आगामी काल के जो सब मनुष्य जब विभिन्न रूप में, विभिन्न कारणों से दु:ख-जर्जर होंगे, जब उन लोगों की आंखों के सामने निराशा का अंधकार उतर आने की आशंका नजर आने लगेगी, तब विवेकानंद की यह आत्मकथा उन सभी लोगों को प्रोत्साहित करेगी और कि-सी-किसी क्षेत्र में भटके लोगों का मार्गदर्शन भी करेगी, इस बारे में मुझे संदेह नहीं है।

संन्यासी का जन्म बहुजन हिताया, सुखाय के लिए होता है। दुसरों के लिए प्राण देने, जीवों के गगनभेदी क्रंदन का निवारण करने, विधवाओं के आँसू पोंछने, पुत्र-वियोग-विधुरा के प्राणों को शांति प्रदान करने, अज्ञ अधम लोगों को जीवन-संग्राम के उपयोगी बनाने, शास्त्रोपदेश-विस्तार के द्वारा सभी लोगों के ऐहिक-पारमार्थिक मंगल करने और ज्ञानालोक द्वारा सबमें प्रस्तुत ब्रम्हा-सिंह को जाग्रत करने के लिए ही संन्यासियों का जन्म हुआ है।

"आत्मनो मोक्षार्थ जगध्दिताय च हमारा जन्म हुआ है।"

मेरे जन्म के लिए मेरे पिता-माता ने साल-दर-साल कितनी पूजा-अर्चना और उपवास किया था।

मैं जानता हूँ, मेरे जन्म से पहले मेरी माँ व्रत-उपवास किया करती थीं, प्रार्थना किया करती थीं और भी हजारों ऐसे कार्य किया करती थीं, जो मैं पाँच मिनट भी नहीं कर सकता। दो वर्षों तक उन्होंने यही सब किया। मुझमें जितनी भी धार्मिक संस्कृति मौजूद है, उसके लिए मैं अपनी मां का कृतज्ञ हूं। आज मैं जो बना हूं, उसके लिए मेरी मां ही मुझे सचेतन इस धरती पर लाई हैं। मुझमें जितना भी आवेश मौजूद है, वह मेरी माँ का ही दान है और यह सारा कुछ सचतेन भाव से है, इसमें बूँदभर भी अचेतन भाव नहीं है।

मेरी माँ ने मुझे जो प्यार-ममता दी है, उसी के बल पर ही मेरे वर्तमान के "मैं" की सृष्टि हुई है। उनका यह कर्ज मैं किसी दिन भी चुका नहीं पाऊँगा।

जाने कितनी ही बार मैंने देखा है कि मेरे माँ सुबह का आहार दोपहर दो बजे ग्रहण करती हैं। हम सब सुबह दस बजे खाते थे और वे दोपहर दो बजे । इस बीच उन्हें हजारों काम करने पड़ते थे। यथा, कोई आकर दरवाजा खटखटाया- अतिथि! उधर मेरी माँ के आहार के अलावा रसोई में और कोई आहार नहीं होता था। वे स्वच्छा से अपना आहार अतिथि को दे देती थीं। बाद में अपने लिए कुछ जुटा लेने की कोशिश करती थीं। ऐसा था उनका दैनिक जीवन और यह उन्हें पसंद भी था। इसी से हम सब माताओं की देवी-रुप में पूजा करते हैं।

मुझे भी एक ऐसी ही घटना याद है। जब मैं दो वर्ष का था, अपने सईस के साथ कौपीनधारी वैरागी बनाकर खेला करता था। अगर कोई साधु भीख माँगता हुआ आ जाता था तो घरवाले ऊपरवाले कमरे में ले जाकर मझे बंद कर देते थे और बाहर से दरवाजे की कुंडी लगा देते थे। वे लोग इस डर से मुझे कमरे में बंद कर देते थे कि कहीं मैं उसे बहुत कुछ न दे डालूँ।

मैं भी मन-प्राण से महसूस करता था मैं भी इसी तरह साधु था। किसी अपराधवश भगवान् शिव के सामीप्य से विताड़ित कर दिया गया। वैसे मेरे घर वालों ने भी मेरी इस धारणा को और पुख्ता कर दिया था। जब कभी मैं कोई शरारत करता, वे लोग कह उठते थे-"हाय, हाय! इतना जप-तप करने बाद अंत में शिवजी ने कोई पुण्यात्मा भेजने के बजाय हमारे पास इस भूत को भेज दिया।" या जब मैं बहुत ज्यादा हुड़दंग मचाता था, वे लोग शिव! शिव" का जाप करते हुए मेरे सिर पर बाल्टी भर पानी उड़ेल देते थे। मैं तत्काल शांत हो जाता था। कभी इसकी अन्यथा नहीं होती थी। आज भी जब मेरे में कोई शरारत जागती है, यह बात मुझे याद जाती है और मैं उसी पल शांत हो जाता हूँ। मैं मन-ही-

मन बुदबुदा उठता हूँ–"ना,ना ! अब और नहीं !"

बचपन में जब मैं स्कूल में पढ़ता था, तब एक सहपाठी के साथ्जाने किस मिठाई को लेकर छीना–झपटी हो गई। उसके बदन में मुझसे ज्यादा ताकत थी, इसलिए उसने वह मिठाई मेरे हाथों से छीन ली। उस वक्त मेरे जो मनोभाव थे, वह मैं आज तक नहीं भूल पाया हूँ। मुझे लगा कि उस जैसा दुष्ट लड़का दुनिया में अब तक कोई पैदा ही नहीं हुआ। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, मुझमें बहुत ज्यादा ताकत भर जाएगी, तब मैं उसको सबक सिखाऊँगा, उसे हरा दूँगा। मैंने सोचा कि वह इतना दुष्ट है कि उसके लिए कोई भी सजा काफी नहीं होगी। उसे तो फाँसी दे देनी चाहिए। उसके तो टकड़े–टुकड़े कर देना चहिए। यथासमय हम दोनों ही बड़े हुए, और हम दोनों में अब काफी घनिष्ठ दोस्ती है। इस तरह समग्र विश्व शिशुतुल्य इंसानों से भरा पड़ा है– खाना और उपयोगी खाना ही उन लोगों के लिए सर्वस्व है। इससे जरा भी इधर–उधर हुआ नहीं कि सर्वनाश! उन जैसे लोग सिर्फ अच्छी मिठाइयों के सपने देखते हैं और भविष्य के बारे में उन लोगों की यही धारणा है कि हमेशा, हर कहीं प्रचुर मिठाइयाँ मौजूद रहेंगी। रायपुर जाते हुए जंगल के बीच से गुजरते हुए मैंने देखा था और महसूस भी किया था। एक बेहद खास घटना मेरी यादों कें चित्रपट पर हमेशा अंकित हो गई। उस दिन हमें पैदल चलते–चलते विंध्य पर्वत के नीचे गुजरना पड़ा था। रास्ते के दोनों तरफ के पर्वत–श्रृंग आसमान छूते हुए खड़े थे ! तरह–तरह के सैकड़ों पेड़, लताएँ, फल–फूलों के समारोह–से झुके पर्वत–पृष्ठ की शोभा बढ़ा रहे थे, अपने मधुर कलरव से दिशा–दिशाओं को गुँजाते हुए सैकड़ों रंग–बिरंगे पंछी कुंज–कुंज में फुदक–फुदकर आ–जा रहे थे या आहार खोजते हुए कभी–कभी धरती पर अवतरण कर रहे थे। वह समस्त दृश्य देखते–देखते मन–ही–मन मैं अपूर्व शांति महसूस कर रहा था। धीर–मंथर

चाल में चलती हुई बैलगाड़ियां धीरे–धीरे एक ऐसी जगह उपस्थित हुईं, जहाँ दो पर्वत–श्रृंग मानो प्रेम में आकृष्ट होकर शीर्ण वनपथ को बंद किए दे रहे थे। उस मिलन–बिंदु को विशेष भाव से निरखते हुए मैंने देखा, एक तरफ के पर्वत–गात पर बिलकुल तलहटी तक एक विशाल दरार मौजूद हैं और उस दरार में मधुमक्खियों के युग–युगांतरों के परिश्रम के निदर्शन स्वरुप एक प्रकांड आकार का छत्ता झूल रहा था। मैं परम विस्मय–विमुग्ध होकर मधुमक्खियों के साम्राज्य के आदि–अंत के बारे में सोचते–सोचते त्रिलोक नियंता ईश्वर की अनंत शक्ति की उपलब्धि में मेरा मन कुछ इस तरह से डूब गया कि कुछेक पलों के लिए बाहरी संज्ञा मानो लुप्त हो गई। कितनी देर तक मैं उन्हीं खयालों में डूबा बैलगाडी में पड़ा

"वर्तमान (19 वीं शताब्दी) युग के प्रारंभ में बहु तेरे लोगों ने यह आशंका जाहिर की थी कि इस बार धर्म का ध्वंस होना अवश्यंभावी है।

रहा, मुझे याद नहीं। जब चेतना लौटी तो मैंने देखा क़ि वह जगह पार करके मैं काफी दूर आ गया हूँ। चूँकि बैलगाड़ी में मैं अकेला ही था, इसलिए इस बारे में कोई जान नहीं पाया।

वैसे इस जगत में यथेष्ट दु:ख भी विद्यमान है, हम बात से भी इनकार नहीं कर सकते। अस्तु, हम सब जितना भी काम करते हैं, उसमें दूसरों की सहायता करना ही सबसे भला काम है। अंत में हम यही देखेंगे कि दूसरों की सहायता करने का अर्थ है अपना ही उपकार करना। बचपन में मेरे पास कुछ सफेद चूहे थे। वे सब एक छोटी सी पेटिका में जमा थे। उस पेटिका में छोटे–छोटे पहिए घूमने लगते थे, बस चूहे आगे नहीं बढ़ पाते थे। यह जगत् और उसकी सहायता करना भी बिलकुल ऐसा ही है। इससे उपकार यह होता है कि हमें कुछ नैतिक शिक्षा मिल जाती है।

जब मेरे शिक्षक घर आते थे तो मैं अपनी अंग्रेजी, बँगला की पाठ्य–पुस्तकें उनके सामने लाकर रख देता था। किस किताब से, कहाँ–से–कहाँ तक रट्टा लगाना होगा, यह उन्हें दिखा देता था। उसके बाद अपने खयालों में डूबा लेटा रहता था या बैठा रहता था। मास्टर साहब मानो खुद ही पाठ्याभ्यास कर रहे हों,इसी मुद्रा में वे उन किताबों के उन पृष्ठों के शब्दों की बनावट, उच्चारण और अर्थ वगैरह की दो–तीन बार आवृत्ति करते और चले जाते। बस, इतने से ही मुझे वे सब विषय याद हो जाते थे।

प्राइमरी स्कूल में थोड़ी–बहुत गणित, कुछ संस्कृत–व्याकरण, थोड़ी सी भाषा और हिसाब की शिक्षा दी जाती थी।

बचपन में एक बूढ़े सज्जन ने हमें नीति के बारे में एक छोटी सी किताब बिलकुल रटा डाली थी। उस क़िताब का एक श्लोक मुझे अभी भी याद है– "गाँव के लिए परिवार, स्वदेश के लिए गाँव, मानवता के लिए स्वदेश और जगत् के लिए सर्वस्व त्याग कर देना चाहिए।" उस किताब में ऐसे श्लोक थे। हम सब वे सभी श्लोक रट लेते थे और शिक्षक उनकी व्याख्या कर देते थे। बाद

में छात्र भी उनकी व्याख्या करते थे।

जो कविता स्कूल में हमें शुरु-शुरु में सिखाई गई, वह थी-"जो मनुष्य सकल नारियों में अपनी माँ को देखता है, सकल मनुष्यों की विषय-संपत्ति को धूल के समान देखता है, जो समग्र प्राणियों में अपने आत्मा को देख पाता है, वही प्रकृत ज्ञानी होता है।"

कलकत्ता में स्कूल में पढ़ाई के समय से मेरी प्रवृति धर्म-प्रवण थी।

लेकिन सभी चीजों की तत्काल जाँच-परख कर लेना स्वभाव था, सिर्फ बातचीत से मुझे तृप्ति नहीं होती थी।

सोने के लिए आँखें मूँदते वक्त मुझे अपनी भौंहों के बीच एक अपूर्व ज्योतिर्बिंदु दिखाई देती थी और अपने मन में तरह-तरह के परिवर्तन भी महसूस करता था। देखने में सुविधा के लिए, इसलिए लोग जिस मुद्रा में जमीन पर मत्था टेककर प्रणाम करते हैं, मैं उसी तरह शयन करता था। वह अपूर्व बिंदु तरह-तरह के रंग बदलते हुए और दीर्घतर आकार में बढ़ते-बढ़ते धीरे-धीरे बिंब के आकर में परिणत हो जाती और अंत में एक विस्फोट होता था तथा आपादमस्तक शुभ-तरल ज्योति मुझे आवृत कर लेती थी। ऐसा होते ही मेरी चेतना लुप्त हो जाती थी और मैं निद्राभिभूत हो जाता था।

यह धारणा मेरे मन में घर कर गई थी कि सभी लोग इसी तरह सोते हैं। दीर्घ समय तक मुझे यही गलतफहमी थी। बड़े होने के बाद, जब मैंने ध्यान-अभ्यास शुरु किया, तब आँखें मूँदते ही सबके पहले वही ज्योतिर्बिंदु मेरे सामने उभर आती और मैंने चंद हम उम्र साथियों के साथ नित्य-ध्यान-अभ्यास शुरु किया, तब ध्यान में किसे, किस प्रकार का दर्शन और उपलब्धि होती है, इस बारे में हम आपस में बातचीत भी करते थे। उन दिनों उनकी बातें सुनकर मैं समझ गया कि उस प्रकार का ज्योति-दर्शन उनमें से किसी को नहीं हुआ उनमें से कोई भी औंधे मुँह नहीं सोता था।

बचपन में मै अतिशय हुड़दंगी और खुराफाती था, वरना साथ में कानी कौड़ी लिए बिना मैं समूची दुनिया की यूँ सैर कर पाता?

जब मैं स्कूल पढ़ता था, तभी एक रात कमरे का दरवाजा बंद करके ध्यान करते-करते एकदम से तल्लीन हो गया। कितनी देर तक मैं उस तरह बेसुध ध्यान में लीन रहा, बता नहीं सकता। ध्यान हुआ, फिर भी उसी मुद्रा में बैठा रहा। ऐसे में कमरे की दक्षिणी दीवार भेदकर ज्योतिर्मय मूर्ति प्रकट हुई और मेरे सामने आ खड़ी हुई। उनके चेहरे पर अद्‌भुत कांति झलक रही थी, फिर भी मानो कोई भाव न हो। महाशांत सन्यासी मूर्ति-मुंडित मस्तक, हाथ में दंड और कमंडलु ! कुछ देर वे मेरी तरफ एकटक देखते रहे। उस समय उनके चेहरे पर ऐसा भाव था, मानो वे मुझसे कुछ कहना चाहते हों। मैं भी अवाक् दृष्टि से उनको निहारता रहा। अगले ही पल मन मानो किसी खौफ से भर उठा। मैंने जल्दी से दरवाजा खोला और कमरे से बाहर निकल आया। बाद में खेद हुआ कि मूर्खों की तरह डरकर मैं भाग क्यों खड़ा हुआ। वे शायद मुझसे कुछ कहते। लेकिन उस रात के बाद उस मूर्ति के कभी दर्शन नहीं हुऐ। कई बार मेरे मन ने कहा कि अगर दुबारा उस मूर्ति के दर्शन हुए तो मैं डरूंगा नहीं, उनसे बात करूंगा। लेकिन फिर कभी वह मूर्ति नजर नहीं आई। मैंने भगवान् बुध्द के दर्शन किए थे। बचपन से ही जब भी कहीं कोई व्यक्ति, वस्तु या जगह देखता, मुझे ऐसा लगता था जैसे मैंने वह सब पहले भी कहीं देखा है, लेकिन लाख कोशिशों के बाद भी याद नहीं पड़ता था क़ि कहाँ देखा है। कहीं अपने मित्रों से किसी विषय पर बातचीत करते हुए अचानक ही कोई मित्र कोई ऐसा जुमला बोल जाता था। जिसे सुनकर मुझे लगता था कि इसी कमरे में, इन्हीं सब लोगों से पहले भी मेरी बातचीत हुई है और उस वक्त भी इस व्यक्ति ने यही वाक्य कहा था। लेकिन दिमाग पर काफी जोर देने के बाद भी यह तय नहीं कर पाता था कि इसकी वजह क्या थी ! बाद में पुनर्जन्मवाद की जानकारी हुई तो मुझे यह खयाल आया कि ये सब घटनाएँ शायद मेरे पिछले जन्म में घटी थीं और वही सब सांसारिक स्मृतियाँ कभी-कभी इस जन्म में भी मेरे मन में ताक-झाँक करती हैं। लेकिन उसके भी बहुत बाद, यह समझ में आया है कि इन सब अनुभवों की ऐसी व्याख्या युक्तिसंगत नहीं है। अब लगता है कि इस जन्म में मुझे जिन-जिन लोगों या विषयों से परिचित होना था, उन्हें अपने जन्म से पहले ही चित्र-परंपरा मुताबिक मैंने किसी तरह देख लिया था और इस धरती पर भूमिष्ठा होने के बाद वही सब स्मृतियाँ समय-समय पर मेरे मन झाँकने लगती हैं।

एंट्रेंस की परीक्षा के दो-तीन दिन पहले की बात है। मैंने देखा कि ज्योमेट्री में मैंने कुछ भी नहीं पढ़ा-सीखा है। तब मैं रात भर जानकर पढ़ता रहा और चौबीस घंटों के अंदर मैंने

ज्योमेट्री की किताब के चार खंड पढ़ डाले और याद भी कर लिया।

मैंने बारह वर्षों तक कठोर अध्ययन किया और कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. पास कर लिया।

छात्र जीवन में ही ऐसी आदत पड़ गई थी कि किसी भी लेखक की कृति की पंक्ति-पंक्ति न पढ़ने के बावजूद मैं समझ लेता था। हर पैराग्राफ की पहली और अंतिम पक्ति पढ़कर मैं उसका भाव समझ लेता था। यह आदत जब धीरे-धीरे और बढ़ गई तब पैराग्राफ पढ़ने की भी जरुरत नहीं होती थी। हर पृष्ठ की पहली और अंतिम पंक्ति पढ़कर ही सारा कुछ समझ लेता था। जहाँ कहीं कोई विषय समझाने के लिए लेखक चार-पाँच या अधिक पृष्ठों में विस्तार से बताता था, वहाँ शुरु की कुछेक बातें पढ़कर ही मैं पूरा विषय समझ लेता था।

यौवन में पदार्पण करने तक हर रात बिस्तर पर लेटते ही मेरी नजरों के सामने दो दृश्य उभर कर आते थे। एक दृश्य में मैं देखता था कि मैंने अशेष धन-जन-संपदा और ऐश्वर्य अर्जित कर लिया है। दुनिया में जिन लोगों को धनी आदमी कहते हैं, मैंने उनमें शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। मुझे लगता था कि मुझसे सच ही धनी आदमी बनने जैसी ताकत मौजूद है। अगले ही पल मैं देखता था कि दुनिया की तमाम चीजें त्यागकर एकमात्र प्रभु-इच्छा पर निर्भर करते हुए कौपीनधारी मैं अपनी मन-मरजी का भोजन करता हूँ और किसी पेड़ तले रात गुजारता हूँ। मुझे ऐसा महसूस होता था कि अगर मैं चाहूँ, तो इसी तरह ऋषि-मुनियों जैसा जीवन व्यतीत करने में समर्थ हूँ। इस प्रकार दो-दो का जीवन यापन करने की छवि मेरी कल्पना में उदित होती थी और

अंत में, दूसरी वाली छवि मेरे मन पर अधिकार कर लेती थी। मैं स्चता था कि इन्सान इसी तरह परमानंद-लाभ कर सकता है। मैं भी ऐसा ही बनूँगा। उस वक्त इस जीवन के सुखों के बारे में सोचते-सोचते मैं ईश्वर-आराधना में निमग्न हो जाता था और सो जाता था। आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा अनुभव मुझे काफी दिनों तक होता रहा।

यह झूठ बोलने जैसा होगा, यह सोचकर मैंने लड़कों को कभी जू-जू का भय नहीं दिखाया और अपने घर में किसी को ऐसा काम करते हुए देखता तो उसे काफी डाँटता था। अंग्रेजी पढ़ने और ब्राह्मण समाज में आने-जाने के कारण मेरी वाणी की निष्ठा काफी बढ़ गई थी।

वर्तमान (१९ वीं शताब्दी) युग के प्रारंभ में बहु तेरे लोगों ने यह आशंका जाहिर की थी कि

इस बार धर्म का ध्वंस होना अवश्यंभावी है। वैज्ञानिक गवेषणाओं के तीव्र आघात से पुराने कुसंस्कार चीनी-मिट्टी के बर्तनों की तरह चूर-चूर होते जा रहे थे। जो लोग धर्म को केवल मतवाद और अर्थशून्य कार्य समझ रहे थे, वे लोग किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठे। पकड़े रहने जैसा उन लोगों को कुछ भी नहीं मिल रहा था। एक वक्त तो ऐसा भी लगा कि जड़वाद और अज्ञेयवाद की उत्ताल तरंगें राह में आई हुई सभी चीजें, सारा कुछ अपने तेज प्रवाह में बहा ले जाएँगी। बचपन की उम्र में इस नास्तिकता का प्रभाव मुझ पर भी पड़ा था और एक वक्त ऐसा भी आया, जब मुझे लगा कि मुझे भी धर्म का सारा आसरा-भरोसा त्याग देना होगा। लेकिन शुक्र है कि मैंने ईसाई, मुसलमान, बौद्ध वगैरह धर्मों का अध्ययन किया और यह देखकर चकित रह गया कि हमारा धर्म जिन सब मूल तत्वों की शिक्षा देता है, अन्यान्य धर्म हूबहू वही शिक्षा देता है। उस समय मेरे मन में प्रश्न जाग उठा तो फिर सत्य क्या है?

जब मैं बालक था, इसी कलकत्ता शहर में सत्य की खोज में मैं यहाँ-वहाँ घूमता था और लंबे-लंबे भाषण सुनकर मैं वक्ता से सवाल करता था, आपने क्या ईश्वर के दर्शन किए हैं? ईश्वर दर्शन के सवाल पर बहुतेरे वक्ता चौंक उठते थे। एकमात्र श्रीरामकृष्ण परमहंस ने ही मुझे जवाब दिया था, मैंने ईश्वर दर्शन किए हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा था, मैं तुम्हें भी उनके दर्शन-लाभ की राह दिखा दूँगा।"

◆◆◆

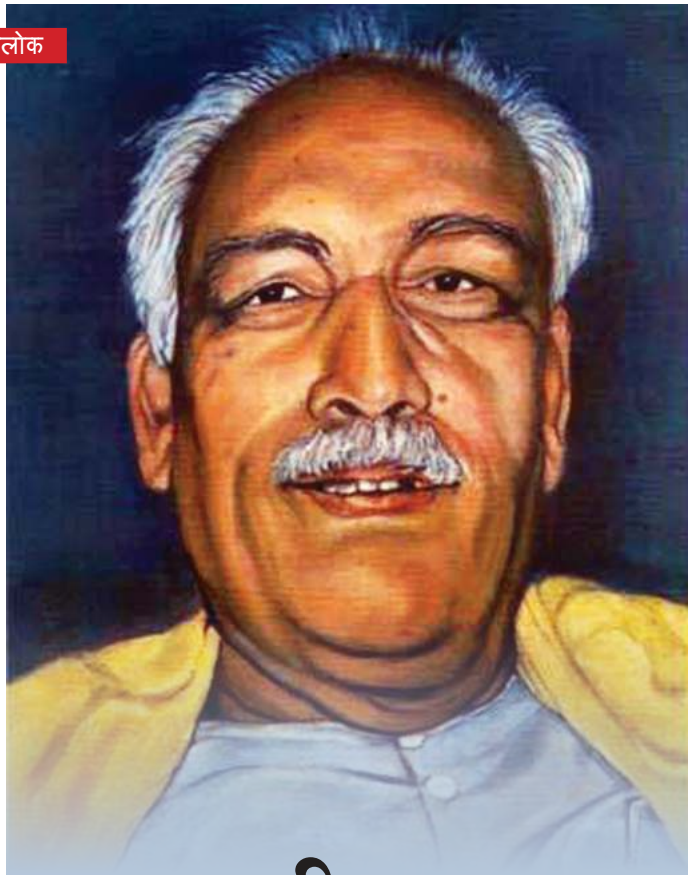

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में परंपरा और आधुनिकता

व्यक्ति की आत्मा केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है। अपने में सब और सब में आप- इस प्रकार की एक समष्टि बुद्धि जब तक नहीं आती, तब तक पूर्ण सुख का आनंद भी नहीं मिलता। अपने आप को दलित द्राक्षा की भाँति निचोड़ कर जब तक सर्व के लिए निछावर नहीं कर दिया जाता, तब तक स्वार्थ खण्ड सत्य है, वह मोह को बढ़ावा देता है, तृष्णा को उत्पन्न करता है और मनुष्य को दयनीय कृपण बना देता है। (कुटज)

स्वयं को द्राक्षा की भांति निचोड़ कर सभी के हितार्थ अर्पण करना और अपनी आत्मा के विस्तार में सम्पूर्ण सृष्टि को समाहित कर लेना ही सच्ची मानवता और आत्मा का श्रेष्ठ उत्कर्ष है जो भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। मानवता की भावना के प्रस्फुटन और आत्मोत्कर्ष के सहारे स्वयं को पूर्णत्व की तरफ अग्रसर करने के लिए भारतीय संस्कृति त्याग को आवश्यक मानती है। त्याग और ऐश्वर्य तथा तप और प्राप्ति के संयोग में ही जीवन का वास्तविक आनंद है क्योंकि त्याग और भोग के सामंजस्य से ही जीवन चरितार्थ होता है। अंश के प्रति आसक्ति का अभिप्राय समग्र विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा है, जो पाप है क्योंकि संकीर्ण के प्रति अपनी वासना को केन्द्रित करना अपने आप को ही हानि पहुँचाना है, अपने माध्यम से सभी को क्षतिग्रस्त करना है जिसे भारतीय संस्कृति आत्मोत्कर्ष के लिए घातक मानती है, अत: मानवता की विरोधी मानती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का समग्र साहित्य किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति और संस्कार का उद्धारक है। द्विवेदी न जाने कितने ग्रहण और त्याग के ऊहापोह, संघर्ष के बाद विकसित होने वाली भारतीय संस्कृति के अध्येता – व्याख्याता हैं एवं उनका साहित्य जीवनोपयोगी, व्यावहारिक सूत्रों का व्यापक भण्डार है। द्विवेदी जी का साहित्य मनोरंजन के हेतु के रूप में नहीं, सही मनुष्य बनने के संग्राम के रूप में ही स्वीकृत है।

हमने अपनी पिछली पीढ़ी से जो कुछ प्राप्त किया है, वह समूचे अतीत की पूँजीभूत विचार राशि नहीं है। सदा नए परिवेश में कुछ पुरानी बातें छोड़ दी जाती हैं और नयी बातें जोड़ दी जाती हैं।

आचार्य द्विवेदी के निबंधों में परंपरा और आधुनिकता की परख करने से पहले इस संदर्भ में आचार्य द्विवेदी से ही उनके विचार जानना भी जरूरी है। वे कहते हैं एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हू-ब-हू वही नहीं देती जो अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से प्राप्त करती है। कुछ-न-कुछ छँटता रहता है, बदलता रहता है, जुड़ता रहता है। यह एक निरंतर चलती रहने वाली प्रक्रिया है। परंपरा का शब्दार्थ है, एक का दूसरे को, दूसरे का तीसरे को दिया जाने वाला ऊर्ध्वक्रम। वह अतीत का समानार्थक नहीं है। परंपरा जीवंत प्रक्रिया है जो अपने परिवेश के संग्रह – त्याग की आवश्यकताओं के अनुरूप क्रियाशील रहती है। अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए वे पुन: कहते हैं परंपरा से हमें समूचा अतीत नहीं प्राप्त होता। उसकानिरंतर निखरता-छँटता-बदलता रूप प्राप्त होता है। उसके आधार पर हम आगे की जीवन-पद्धति को रूप देते है। (परंपरा और आधुनिकता) नए परिवेश में कुछ छूटना, कुछ जुड़ना, कुछ-न-कुछ छँटना, बदलना, जुड़ना, ऊर्ध्वक्रम, संग्रह – त्याग, निखरना, आगे की जीवन-पद्धति को रूप देना ही तो वह दृष्टि है जिसे आधुनिकता कह सकते हैं, जो परंपरा को गतिशील प्रक्रिया का स्वरूप देती है। आचार्य द्विवेदी ने सहज ही स्पष्ट कर दिया है कि परंपरा का अभिप्राय अतीत नहीं है, वरन अतीत की पूँजीभूत राशि से युग-परिवेश के अनुरूप को ग्रहण करने और त्यागने की गतिशील परम प्रक्रिया है। परंपरा का स्वीकार अतीत जीवी होना कदापि नहीं है।

मानव की ऊर्ध्वमुखी सांस्कृतिक विकास यात्रा में जिन सोपानों ने सहयोग दिया है, उनके प्रदेय की गौरवशाली कथा हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में समाहित है। उन्होंने भारतीय धर्म, दर्शन, इतिहास और साहित्य में से अपने गहन अध्ययन द्वारा जो खोजा है, वह परंपरा प्रसूत है और वर्तमान को जिजीविषा से सराबोर कर देता है। वे अतीत के अंधभक्त नहीं वरन् उसके आलोक में वर्तमान को प्रकाशित कर भविष्य तक ले जाने वाले कुशल कला मनीषी हैं। उनकी शब्द साधना कठिन और शिवत्व से स्पर्शित है। सत और ऋत उनके साहित्य के दो मुख्य आधार हैं जिनके प्रकाश में संस्कृति की निसर्ग सम्मत सरणियों का वाहक मनुष्य अदम्य जिजीविषा प्राप्त करता है और अपनी अदम्य इच्छा शक्ति से परंपरा अपने सतत् गतिशील स्वरूप के लिए संबल भी प्राप्त करती रहती है। परंपरा की गतिशील प्रक्रिया का स्वरूप उनके निबंधों में गंभीर रूप से मौजूद है। उनका सर्वाधिक रचनाकर्म मनुष्य की महत्ता के प्रतिपादन हेतु ही है। वे परंपरा

के भीतर से ही सिद्ध करते हैं कि मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है। उनके अनुसार साहित्य मानव-जीवन से सीधा उत्पन्न होकर सीधे मानव जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवंत विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा और समझा है। (साहित्य - सहचर) द्विवेदी के निबंधों का लक्ष्य तमसो मा ज्योतिर्गमय है। उनके निबंध गहन चिंतन की ऐसी उर्वरा भूमि से उपजे, पनपे, पल्वित-पुष्पित हुए हैं जहाँ सम्पूर्ण भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, कला, साहित्य और लोक के सारतत्व एकत्रित हैं। वह भूमि बारम्बार संसार के उस स्वरूप की तरह इशारा करती है जो ज्ञान, इच्छा ओर कर्म का शक्तिमान पुंज है। इस शक्तिमान में शक्ति ही व्यक्त होती है। शक्ति और शक्तिमान में कोई तात्विक भेद नहीं होता। सृष्टि के केन्द्र में स्थित शक्ति को विस्तार से उन्होंने अपने शाक्त मार्ग का लक्ष्य अद्वैत ९संविदूपा" या और तांत्रिक वाड्मय में शाक्त दृष्टि निबंध में स्पष्ट किया है। इन निबंधों में आचार्य द्विदेदी की उस विवेकशील दृष्टि का परिचय मिलता है जो परंपरा और आधुनिकता के समन्वय से साहित्य में नवीन अनुसंधान करती चलती है। शाक्त आगमों के आधार पर द्विवेदी जी भारतीय दर्शन के परिणामवाद के तहत जगत और शक्ति के परस्पर संबंध स्पष्ट करते हैं तो ९प्रसार" और ९संकोच" शब्दों के द्वारा आधुनिक विज्ञान की दिशा का संकेत भी करते हैं-भारतीय दर्शनों में परिणाम शब्द का एक निश्चित परिभाषिक अर्थ है। उस दृष्टि से यह दृश्यमान जगत विश्व शक्ति का वैसा ही परिणाम नहीं है जिस प्रकार दही दूध का परिणाम होता है। वह वस्तुत: शक्ति का प्रसार और संकोच है। प्रसार और संकोच शाक्ता आगमों के अपने शक हैं, लेकिन आधुनिक भौतिक - शास्त्रियों के वाइब्रेशन (कम्पन, एजन) से आश्चर्य जनक साम्य रखते हैं। जगत के रूपायित होने के मूल में संकोच और प्रसाद या एजन की निरंतर चलती रहने वाली प्रक्रिया है। सो यह सृष्टि शक्ति का परिणाम नहीं, शक्ति रूप ही है। (आलोक पर्व)

आचार्य द्विवेदी के निबंध परंपरा के पुनर्आख्यान और मानव-जीवन के पुनर्सर्जन की कलात्मक प्रक्रिया हैं जिनका प्रतिपाद्य श्रेष्ठतम मूल्य प्रतिस्थापन और मनुष्यता की सिद्धि है। उनके निबंधों में भारत की खोज हैं- जो अपने इतिहास - दर्शन, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार, धर्म-कर्म, आस्था-विश्वास, पर्व-त्योहार, ग्रहण-त्याग, पुरातन-नवीन आदि के कारण, बाहर से अलग-अलग प्रतीत होने के बावजूद भीतर

से सघन रूप से एक ही है और जिसने सर्व प्रथम इस विश्व में अज्ञान की क्रोड से मुक्त होकर ज्ञान के विशाल प्रांगण में आने की साधना की है और सफल भी हुआ है। द्विवेदी जी के अनुसार मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं ही संस्कृति है। (अशोक के फूल) अपनी इसी साधना वृत्ति के द्वारा ही तो मनुष्य अपने जीवन लक्ष्य और परमानंद स्वरूप चेतन आलोक को प्राप्त करता है। इसीलिए इस सृष्टि में वह और उसकी अदम्य जिजीविषा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, ललित है। प्रकृतिजन्य सुन्दरता ललित है। द्विवेदी जी के ललित निबंध मनुष्य की ललित विजय यात्रा की वाणी है। द्विवेदी जी ने कहीं भी मानव-समाज को प्रकृति से अलग करके नहीं देखा। उनके अनेक निबंधों और निबंध संग्रहों के नाम भी अशोक के फूल, कुटज, देवदारु, कल्पलता, आम फिर वौरा गए, मेरा कांचनार, हिमालय आदि प्रकृति के प्रति उनके आकर्षण को व्यक्त करते हैं। समस्त प्रकृति अपने आप में इतनी आकर्षक और रहस्यमयी है कि सब की समझ के बाहर है किन्तु कलात्मक दृष्टि संपन्न द्विवेदी जी ने आंतरिक चक्षुओं से इसके आकर्षक, रहस्यमयी सौदर्य का भरपूर अवलोकन किया था, इसीलिए वे इसके किसी भी रूप को देखकर मोहित हो उठते हैं। आम व्यक्ति के लिए रात और उसकी कालिमा में भय के अतिरिक्त क्या हो सकता है जो हृदय को बरवश आकर्षित कर ले किन्तु द्विवेदी जी का विचार है कि... "रात सचमुच ही जीवंत पदार्थ है। वह साँस लेती हुई जान पड़ती है, उसके अंग-अंग में कंपन होता रहता है, वह प्रसन्न होती है, उदास होती है, धुँधुआ जाती है, खिल उठती है। धीरे-धीरे, लेकिन निस्संदेह, वह करवट बदलती रहती है, सो जाती है, जाग उठती है। (ग्रंथावली भाग ९) प्रकृति मनुष्य को जीवन में कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है। सूर्य का प्रतिदिन नए आलोक के साथ उदय होना, जीवन के प्रति आशा की नदियों का समुद्र में मिलना अखंड आत्मविसर्जन का, हिमालय भारत के कर्मभूमि होने का, फूल का खिलना संघर्ष के बाद विजय का, मुरझाकर झड़ जाना परिवर्तन का संकेत करते हैं। यह परिवर्तन ही सौंदर्य का निर्माता है क्योंकि एक सी सुन्दरता आकर्षण हीन होती है, वह चिरायु तभी हो सकती है जब उसमें नित्य विकास होता रहे। एक बार सुन्दर बन कर उसी रूप में जमे रहना शाश्वत होना नहीं होता, उसे प्रतिदिन सौंदर्य की साधना में लीन होना पड़ता। संस्कृति का स्वरूप भी ऐसा ही है जिसमें वस्तु स्थिति का पुन:-पुन: संस्कार होता है। फूल, पौधे, नदियां, सागर, सूरज, चंद्रमा, सृष्टि का प्रत्येक कण यही तो संकेत करते रहते हैं कि प्राचीन का हर पल

मोह उचित नहीं, अत: अनासक्त होकर निरंतर परिष्कार, परिमार्जन करना आवश्यक है। मृत्यु शाश्वत सत्य है किन्तु चाहे फूल हों, पेड़ हों, पत्ते हों या मनुष्य, वे अपने आप में समाप्त नहीं होते, नवीन रूप धारण करते हैं।

सागर, नदियां, पर्वत, झरने, फूल, पेड़-पौधे केवल सौंदर्य के प्रतीक ही नहीं हैं बल्कि व्यक्ति को जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। कुटज जो ठिगना-सा पौछा है वह तपती दोपहरी, नीरस पहाड़ियों में भी अपनी अलमस्त अदाओं से, संत्रास झेलते मानव को, कितना मानसिक संबल प्रदान करता है कि उसका उद्वेलित, अशांत चित्त शांति महसूस करता है और जीवन को नए रूप में प्रारम्भ करने की प्रेरणा प्राप्त करता है। कुटज को देखकर अशांत मन को शांत करते हुए द्विवेदी जी कहते हैं-चारों ओर कुपुत समराज के दारुण विश्वास के समान धंधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के कठोर चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रूद्ध अज्ञात जल स्त्रोत से बरबस रस-खीचकर सरस बना हुआ है। मानव की यही वास्तविक नियति भी है और चरित्र भी। विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी अदम्य जिजीविषा, अपनी आस्था, अपने विश्वास और प्रेरणा प्राप्ति के द्वार को बनाए रखो, खुला रखो। सुख-दु:ख, सफलता-असफलता, जीवन-मरण, मान-अपमान, पद-प्रतिष्ठा आदि क्षणिक है, परिवर्तनशील है, गौड़ है, मुख्य है जीवन जीने की कला, प्रेरणा प्राप्त करने की दृष्टि। कुटज यही संदेश तो देता है-जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेद कर, पाताल की छाती चीर कर अपना भोग्य संग्रह करो, वायु मंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो, आकाश को चूम कर, अवकाश की लहरी में झूमकर, उल्लास खींच लो।

परंपरा के प्रति आचार्य द्विवेदी का मोह अतीत जीवी नहीं है। वे समस्त भारतीय संस्कृति की विरासत की उपादेयता को अपने समाज के वर्तमान और भविष्य को केन्द्र में रखकर परंपरा को पुनर्आख्यायित करते हैं जिसमें तर्क और अनुभव का निचोड़ विद्यमान है। उनके निबंधों में एक आश्रम संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है। यह संस्कृति ऋषि प्रसूत है जिसमें सुख-दु:ख सृष्टि के विकास में हैं और समभाव पर जीवित हैं। यात्रा के इस पड़ाव पर उनके ललित निबंध मानव की कर्म शक्ति एवं जिजीविषा को केन्द्र में स्थापित करते हैं।

द्विवेदी जी के लिए साहित्य का लक्ष्य मानव है जिसे वे आत्मालोक की यात्रा का यात्री सिद्ध करते हैं, जो आनंद का आकांक्षी होता है। साहित्य भी तो आनंदातिरेक का ही परिणाम है क्योंकि साहित्य वस्तुत: मनुष्य का वह उच्छलित

आनंद है जो उसके अंतर में अटाये नहीं अट सका था। (ज्ञान-शिखा-पत्रिका) आनंद का मूलाधार एकत्व की गहन अनुभूति है, अत: साहित्य का भी मूलाधार वही है, जहाँ आत्मभाव परत्व में मिलकर एक हो जाता है। आत्म तत्व स्वार्थ केन्द्रित और परत्व प्रेम केन्द्रित होता है। द्विवेदी जी के ललित निबंधों की गति व्यष्टि से समष्टि की ओर है जो भारतीय चिन्तन-परंपरा का बिन्दु-सिंधु समाहित दार्शनिक स्वरूप है। द्विवेदी जी मानव की ही नहीं, मानव मात्र की मुक्ति चाहते हैं जो उनके मानववाद को विश्व मानववाद का व्यापक स्वरूप प्रदान करता है। उनका मत है मानवतावाद ठीक है पर मुक्ति किसकी? क्या व्यक्ति मानव की? नहीं। सामाजिक मानवतावाद ही उत्तम समाधान है। मनुष्य को, व्यक्ति मनुष्य को नहीं; बल्कि समष्टि मनुष्य को, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मुक्त करना होगा। (विचार-प्रवाह) वे सामाजिक विषमता का प्रमुख कारण धन की अपार प्रतिष्ठा को मानते थे। वे कहा करते थे कि क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है कि समाज से पैसे का आधिपत्य समाप्त हो जाए क्योंकि सामाजिक एकता के हमारे सभी प्रयत्न इस एक चट्टान से टकरा कर टूट जाते हैं।

आचार्य द्विवेदी की दृष्टि में मनुष्य के लिए विकास की परंपरा उसकी जययात्रा है। उनकी अखण्ड दृष्टि प्रत्येक प्रसंग में मानवीय जिजीविषा, क्रियाशीलता, प्राणधारा, ऊर्जा और मानव की जय यात्रा का शंखनाद करती हुई आगे बढ़ती है- जीव प्रथम बार अपनी ऊर्ध्वगामिनी वृत्ति की अदना ताकत के बल पर इस महाकर्ष को अस्वीकार कर सका। तब से वह निरंतर अग्रसर होता गया। मनुष्य उसी की अंतिम परिणति है। उसने प्रकृति के साधारण नियम जो कुछ जैसा होना है, वैसा होकर ही रहेगा - को अस्वीकार किया। इस जगत से सृष्टि का दूसरा अध्याय शुरु हुआ। यह जो स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होना है, जो कुछ जैसा होने वाला है उसको वैसा, न मानकर जैसा होना चाहिए उसकी ओर जाने का प्रयत्न है। वही मनुष्य मनुष्यता है। (ग्रंथावली - भाग - ९) द्विवेदी जी का उपर्युक्त कथन मनुष्य के अस्तित्व का स्वयं का परिचय देना है, जो उसका धर्म है क्योंकि जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना तो जड़ पदार्थ का धर्म है, विवेकशील मनुष्य का नहीं। विवेकशील, क्रियाशील मनुष्य अवश्य कुछ-न-कुछ नवीन की, शिव की रचना करेगा। द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका, १९४७ में स्वतंत्रा प्राप्ति किन्तु बंटवारे की त्रासदी के साथ, युग-पुरुष, महामानव महात्मा गाँधी की हत्या आदि मन को उद्वेलित-विचलित कर देने वाली घटनाएँ घटित हुईं। हिरोशिमा-नागासाकी का हृदय विदारक क्रूरतापूर्ण विध्वंश, प्रकृति पर मानव की जीत की घोषणा, ईश्वर की मृत्यु और स्वर्ग के समाप्त हो जाने का उद्घोष और बौद्धिक अतिवाद के वर्चस्व की प्रतिष्ठा आदि ने विश्व मानव की दृष्टि को कई खण्डों में बाँट दिया, उसकी मानवीय प्रकृति और स्वाभाविकता का लोप होने लगा, विज्ञान प्रदत्त मशीनों की घर्घराहट पूरे वातावरण में गूंजने लगी। विश्व-समाज, प्रकृति और धर्म के बजाय अर्थ और विज्ञान से संचालित होने लगा, नाना प्रकार के नए-नए वादों का बोल बाला हुआ और मनुष्य के स्थान पर मशीन धर्म, प्रकृति और ईश्वर के स्थान पर पदार्थ, जड़तत्व महत्वपूर्ण माना जाने लगा। आचार्य द्विवेदी ने इन सब को देखा, भोगा और महसूस किया और इन्ही विध्वंसों के क्रोड से आशा एवं आस्था की प्रसूति द्वारा अशांति के शमन, मानवता के सूत्रों की खोज भारतीय संस्कृति की अरण्यावली में की और वहां शिवत्व का आश्रम तथा आश्रय प्राप्त किया। अपने ललित निबंधों के केन्द्र में प्रकृति को रख कर द्विवेदी जी ने जीवन-जगत की तमाम समस्याओं का विश्लेषण और समाधान कलात्मक रूप से किया कि वे निबंधों के सहारे जीवन की नवीन तथा संस्कृति गर्भित सरणियां लेकर समाज के हित साधन में तल्लीन हुई। पुन: मनुष्य में अपनी परंपरा और संस्कृति से जीवन - रस ग्रहण कर के ऊर्ध्वमुखी जिजीविषा महत्वपूर्ण बनी। आचार्य द्विवेदी ने अपने निबंधों के माध्यम से पदार्थ स्थान पर मानव तथा विकृति के स्थान पर प्रकृति को महत्व देकर प्रतिष्ठित किया।

◆◆◆

KALYANI
DRIVING INNOVATION

With Best Compliments

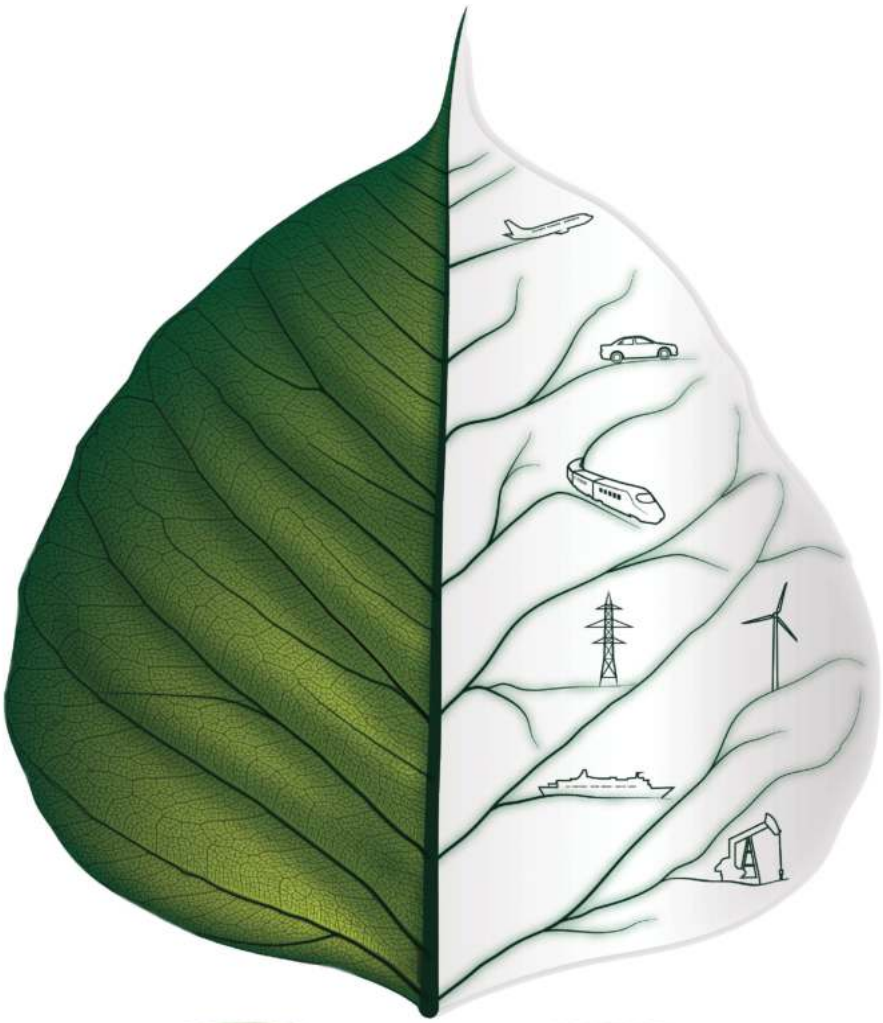

innovation at the heart

EXPANDING HORIZONS

BHARAT FORGE

Mundhwa, Pune - 411 036, INDIA www.bharatforge.com | www.kalyanigroup.com

TITELNO. MAHHINO7214/13/A2009-TC ■ REGISTRATION NO : MAHHIN/2009/30744
BY OFFICE THE REGISTRAR OF NEWS PAPERS FOR INDIA,
MINISTRY OF INFORMATION & BRODCASTING, GOVT.OF INDIA

हम सब की है यही पुकार । हरा-भरा हो यह संसार ।।

जनहित में प्रकाशित